अतिथि देवो भव

वर्ष : 1, अंक : 1 जुलाई–सितम्बर, 2015

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतिथि देवो भव

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

- संरक्षक : विनोद जुत्शी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : राम कर्ण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- संपादक : सुनील कुमार, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- सहायक संपादक : रमण कुमार वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

- निःशुल्क वितरण के लिए :

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

- कृपया आप अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक, "अतुल्य भारत",
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
डलहौजी रोड, नई दिल्ली – 110011.
ई–मेल– hindisection2012@gmail.com

विषय वस्तु

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ
1.	माननीय प्रधान मंत्री, भारत सरकार, **श्री नरेन्द्र मोदी जी** का संदेश		
2.	माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार, **श्री राजनाथ सिंह जी** का संदेश		
3.	माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, भारत सरकार, **डॉ. महेश शर्मा जी का संदेश**		
4.	सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, **श्री विनोद जुत्शी का संदेश**		
5.	प्रधान संपादक की कलम से	**श्री राम कर्ण**	
6.	भारतीय पर्यटन – विकास व विस्तार की अपार संभावनाएं	**प्रशान्त त्यागी**	12–20
7.	मेघालय में पर्यटन के आकर्षण	**विजय कुमार**	21–31
8.	विश्व पर्यटन दिवस और भारत	**डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी**	32–35
9.	कुशल भारत : स्ट्रीट फूड वेंडर्स का प्रशिक्षण	**विजय कुमार**	36–38
10.	भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान	**डॉ. संदीप कुलश्रेष्ठ**	39–43
11.	मार्केट अनुसंधान प्रभाग	**नेहा श्रीवास्तव**	44
12.	नवकलेवर	**सुनील कुमार**	45–48
13.	काशी एक अनुभव	**मृत्युंजय मिश्र**	49–51
14.	''हिंदुस्तान का दुःख''	**राज कुमार शर्मा**	52–55
15.	राजभाषा का प्रशासन	**रमण कुमार वर्मा**	56–59
16.	पुस्तकालय का महत्त्व	**दिनेश कुमार नामदेव**	60–62
17.	क्या राजभाषा हिंदी के भी अच्छे दिन आएंगे ?	**नाहर सिंह वर्मा**	63–65
18.	पंडित दीन दयाल उपाध्याय	**साभार**	66–71
	कविताएं		
19.	माँ	**उपदेश कुमार भारद्वाज**	72–74
20.	गुजारिश	**नेहा श्रीवास्तव**	75
21.	ईमानदारी का इनाम	**अबिनाश दाश**	76–78
22.	देवनागरी	**बाबा कानपुरी**	79
23.	जीवन का कुरुक्षेत्र	**अमित तिवारी**	80
24.	सबक	**पंकज कुमार सिंह**	81
	पर्यटन		
25.	सतत पर्यटन		82
26.	इको पर्यटन		83
27.	पर्यटकों की सुरक्षा एवं संरक्षा		84–85
28.	देश में और अधिक विदेशी पर्यटक आगमन		86–87
29.	राष्ट्रपति जी का राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार समारोह के अवसर पर अभिभाषण	**साभार**	88–91
30.	**पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियाँ**		92–95

प्रधान मंत्री

Prime Minister

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि पर्यटन मंत्रालय हिंदी में एक त्रैमासिक गृह पत्रिका **"अतुल्य भारत"** का प्रकाशन प्रारम्भ कर रहा है। सरकारी नीतियों को बनाना और उनके कार्यान्वयन में जन-भागीदारी को अधिक से अधिक बढ़ाना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। जनता और सरकार के आपसी तालमेल से न केवल कामकाज में पारदर्शिता आती है, बल्कि सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों का जन-जन तक प्रसार भी सुगम होता है। हिंदी देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी भाषा एक ऐसा माध्यम है जिससे सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं एवं सुविधाओं तक जन-साधारण की पहुंच सुगम होती है।

पर्यटन देश के आम नागरिक से जुड़ा होता है। मानव मन में नए-नए स्थलों के बारे में जानने और उनको देखने की स्वाभाविक जिज्ञासा एवं लालसा होती है। पर्यटन इस जिज्ञासा की पूर्ति करता है। आज पर्यटन क्षेत्र देश के आर्थिक विकास एवं रोजगार उपलब्ध कराने का एक प्रमुख साधन बन गया है। हमारे देश में पर्यटन को बढ़ावा देने की विपुल संभावनाएं हैं।

"अतुल्य भारत" पत्रिका के माध्यम से पर्यटकों को सुसंगत जानकारी मिलने से घरेलू पर्यटन को और अधिक बढ़ावा मिलेगा और इससे रोजगार के नए-नए अवसर पैदा होंगे।

मैं **"अतुल्य भारत"** पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि पर्यटन मंत्रालय इस दिशा में अपने सतत् प्रयास जारी रखेगा।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली

नवम्बर 17, 2015

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

गृह मंत्री
भारत
नई दिल्ली–110001

HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI-110001

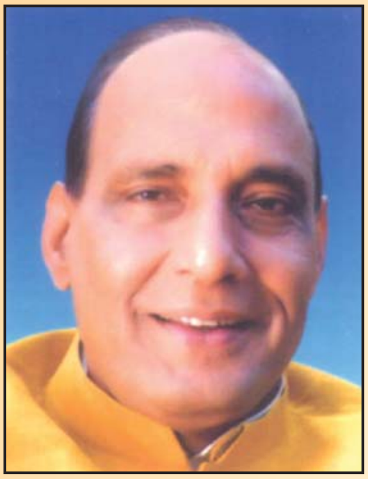

सत्यमेव जयते

दिनांक : 07.12.15

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा **"अतुल्य भारत"** नाम से एक त्रैमासिक हिंदी पत्रिका प्रकाशित की जा रही है जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के माध्यम से विभागीय कार्यकलापों का संगठन में व्यापक प्रचार–प्रसार करना है।

पत्र–पत्रिकाएं ज्ञान के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ भावों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मेरा मानना है कि **"अतुल्य भारत"** के प्रकाशन से कार्मिकों को रचनात्मक प्रतिभा के विकास का अवसर मिलेगा और इससे हिंदी में पर्यटन साहित्य समृद्ध होगा। मैं आशा करता हूँ कि मंत्रालय का यह प्रयास अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(राजनाथ सिंह)

डॉ. महेश शर्मा
Dr. Mahesh Sharma

सत्यमेव जयते

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
और
नागर विमानन राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

MINISTER OF STATE (INDEPENDENT CHARGE)
OF TOURISM & CULTURE AND
MINISTER OF STATE OF CIVIL AVIATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा **''अतुल्य भारत''** के नाम से त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका प्रकाशित की जा रही है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि पर्यटन मंत्रालय की नीति, कार्यक्रमों और कार्यकलापों का व्यापक प्रचार–प्रसार करने तथा सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में यह गृह पत्रिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं इसके सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

(डॉ. महेश शर्मा)

नवम्बर, 2015
नई दिल्ली

विनोद जुत्शी
भा.प्र.से.
सचिव

Vinod Zutshi
I.A.S.
Secretary

भारत सरकार
पर्यटन मंत्रालय
परिवहन भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली – 110001

Government of India
Ministry of Tourism
Transport Bhawan, Parliament Street
New Delhi-110001
Tel. : 91-11-23711792, 23321395
Fax : 91-11-23717890
E-mail : sectour@nic.in

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मंत्रालय द्वारा **'अतुल्य भारत'** के नाम से हिंदी में त्रैमासिक गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मंत्रालय में काफी दिनों से हिंदी में एक गृह पत्रिका निकालने की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। **'अतुल्य भारत'** के प्रकाशन से इस अभाव की पूर्ति हो गई है। पर्यटन संबंधी नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यकलापों का और अधिक व्यापक प्रचार–प्रसार करने में इससे सहायता मिलेगी।

मंत्रालय का प्रारंभ से ही यह प्रयास रहेगा कि इस पत्रिका में ऐसी सामग्री प्रकाशित की जाए जिससे संगठन के अधिकारियों और कर्मचारियों को मंत्रालय के कामकाज की नवीनतम जानकारी मिले और वे हिंदी भाषा में कार्य करने के लिए और अधिक प्रेरित हों।

मैं **'अतुल्य भारत'** पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(विनोद जुत्शी)

राम कर्ण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय
भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' का प्रारंभिक अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। मंत्रालय ने इस पत्रिका का नाम अपने लोगो **'अतुल्य! भारत'** के नाम पर रखा है। भारत में पर्यटन के विकास और उसे बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय एक नोडल एजेंसी है। **'अतुल्य भारत'** पर्यटन मंत्रालय का एक अभियान है, जो देश-विदेश में भारत की पहचान है। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर पदोन्नत करना है। देश की पर्यटन क्षमता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए 'अतुल्य!भारत' शीर्षक को आधिकारिक तौर पर केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय के तत्कालीन संयुक्त सचिव श्री अमिताभ कांत द्वारा वर्ष-2002 में ब्रांडेड करके प्रोत्साहित किया गया था।

2. गृह पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य पर्यटन मंत्रालय के कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए सक्षम बनाना व प्रोत्साहित करना तथा मंत्रालय के कार्यकलापों के बारे में उनका ज्ञानवर्धन करना है। इस पत्रिका को रोचक, पठनीय और आकर्षक बनाने के लिए इसमें सामयिक, साहित्यिक, स्वास्थ्य, पर्यटन, यात्रा वृत्तांत आदि विषयों पर सरल भाषा में लिखे गए लेखों को शामिल किया जाएगा। इस प्रकाशन के द्वारा हमारा यही प्रयास रहेगा कि देश के रमणीय पर्यटन स्थलों और हमारी संस्कृति के विविध पहलुओं से प्रबुद्ध एवं सुधी पाठकों को परिचित कराया जाए। यह भी प्रयास रहेगा कि मंत्रालय के कार्मिकों को इसके कार्यकलापों की भली-भांति जानकारी हो और उन्हें उनकी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का पर्याप्त अवसर मिले। सरकार की यह सुविचारित नीति है कि सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों का जन साधारण तक व्यापक प्रचार-प्रसार हो। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए पर्यटन मंत्रालय ने ई-पत्रिका के रूप में इस पत्रिका को अपनी वेबसाइट www.tourism.gov.in पर भी अपलोड करने का निर्णय लिया है।

3. भारत एक विशाल, अति सुन्दर और विविधतापूर्ण देश है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक 32,87,263 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है। हिमाच्छादित उत्तरी पर्वत श्रृंखला, मोती सा चमकता रेगिस्तानी बालू, हरे-भरे गंगा यमुना के मैदान, विविधताओं से भरपूर सुन्दर दक्षिण पठार, तटीय मैदान, रोमांचक

पर्यटक स्थलों से भरपूर उत्तर पूर्वी क्षेत्र तथा असंख्य सुन्दर द्वीप समूह, जनमानस के लिए अपार संभावनाएं एंव अवसर प्रदान करने के साथ पर्यटकों के लिए विभिन्नताओं से परिपूर्ण प्राकृतिक वातावरण एवं आकर्षक पर्यटक स्थलों का अनोखा प्राकृतिक खजाना है। इसकी खूबसूरती की कहीं कोई मिसाल नहीं है। यहां की मिट्टी की भीनी-भीनी महक ही मन को मोह लेती है, जो भी यहां पर आया वह यहां की संस्कृति एवं जनमानस में समाकर पूर्णतः यहीं का हो गया। कुछ दुर्भाग्यपूर्ण अप्रिय घटनाओं को छोड़कर यहां पर सभी सम्प्रदायों के लोग जिस आपसी सद्भाव एवं भाई-चारे से रहते हैं, वह विश्व में एक मिसाल है। संकट के समय तो संकीर्ण मानसिकता वाले व्यक्ति भी एक दूसरे की मदद के लिए जुट पड़ते हैं। भारत में अनगिनत ऐसे स्थान हैं जहां पर प्रकृति ने अपनी बेहतरीन छटा को खूब बिखेरा है। चाहे वो ऊंची चोटियों पर मौजूद भवन हों या फिर घाटी में बने चाय के बागान या फिर खूबसूरत हरी-भरी वादियां, सभी को देखकर मन आह्लादित हो जाता है। भारत की इन्हीं विविधतापूर्ण खूबियों के लिए ही तो इसे **'अतुल्य भारत'** कहा जाता है। इसी कारण यहां आने वाले सैलानी भारत को अपने दिलों दिमाग में बसा लेते हैं। **'अतुल्य भारत'** पत्रिका का भी उद्देश्य भारत की इन सब विशिष्ट विरासतों का चित्रण कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना है।

4. इस पत्रिका के प्रवेशांक में 'भारतीय पर्यटन-विकास एवं विस्तार की अपार संभावनाएं' शीर्षक के अन्तर्गत एक प्रमुख लेख शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, पूर्वोत्तर भारत के एक प्रमुख राज्य मेघालय पर एक विस्तृत लेख शामिल किया गया है। मंत्रालय द्वारा स्ट्रीट वेंडर्स के कौशलों के प्रमाणन के लिए चलाई जा रही योजना की जानकारी भी इसमें शामिल की गई है। 27 सितंबर, 2015 को पर्यटन दिवस के अवसर पर पर्यटन मंत्रालय के मुख्यालय के लिए भवन का शिलान्यास माननीय केंद्रीय वित्त, कॉरपोरेट कार्य और सूचना एवं प्रसारण मंत्री, श्री अरूण जेटली ने किया जिसका नाम 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर्यटन भवन' रखा गया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का देश की राजनीति को एक नया रूप देने में विशेष योगदान रहा है। इस महान विभूति पर भी एक लेख शामिल किया गया है। भगवान जगन्नाथ के मंदिरों से संबंधित ओडिशा राज्य के नवकलेवर उत्सव पर भी एक लेख शामिल किया गया है। इसमें पर्यटन, राजभाषा व पुस्तकालय जैसे विषयों पर लेख, कहानी और कविताएं भी शामिल की गई हैं।

5. मैं पर्यटन मंत्रालय की तरफ से माननीय प्रधान मंत्री, भारत सरकार, श्री नरेन्द्र मोदी जी का इस पत्रिका के लिए प्रेरणादायक संदेश एवं भारतीय पर्यटन को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने में उनकी उल्लेखनीय भूमिका के लिए आभार व्यक्त

करता हूँ। मैं माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री राजनाथ सिंह जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपना प्रेरणास्पद संदेश देकर इसकी गरिमा को बढ़ाया है। मैं, माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), डॉ. महेश शर्मा जी का इस पत्रिका को जारी करने के लिए निरंतर मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन तथा उनके इस अंक के लिए प्रेरणादायक संदेश देने के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं, आदरणीय सचिव पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार श्री विनोद जुत्शी जी का भी इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए उनके विशेष प्रोत्साहन तथा निरंतर मार्गदर्शन एवं संरक्षण के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के कार्य से जुड़े हिंदी प्रभाग के सभी कार्मिकों विशेषकर श्री सुनील कुमार, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री रमण कुमार वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री राजकुमार, निजी सचिव और श्री रामबाबू, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को उनके इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद देता हूँ।

6. मैं इस अंक के सभी रचनाकारों का धन्यवाद करता हूँ कि जिन्होंने अपनी बहुमूल्य रचनाएं भेजकर इस पत्रिका को ज्ञानवर्धक और रोचक बनाया है और आशा करता हूँ कि आप अपनी प्रखर बुद्धि के माध्यम से इस पत्रिका के पाठकों का निरंतर ज्ञानवर्धन करते रहेंगे। लेखकों से अनुरोध है कि वे पक्षपातपूर्ण, संकीर्ण मानसिकता व प्रदूषित विचारों का परित्याग कर अपने निष्पक्ष, प्रगतिशील एवं स्वच्छ विचारों के माध्यम से एक नई विकासोन्मुख एवं सार्वभौमिक सोच का संचार करें। इस पत्रिका के आगामी अंक के लिए आपके लेख सादर आमंत्रित हैं।

7. मैं आशा करता हूं कि **'अतुल्य भारत'** का प्रवेशांक आपको पसंद आएगा और यह प्रबुद्ध पाठकों के लिए उपयोगी और ज्ञानवर्धक होगा। इस अंक को बेहतर बनाने का पुरजोर प्रयास किया गया है। इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक, उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक बनाने के बारे में आपके रचनात्मक सुझाव और टिप्पणियां सदैव आमंत्रित हैं।

राम कर्ण आई.ई.एस.
प्रधान संपादक
एवं
परामर्शदाता

भारतीय पर्यटन - विकास व विस्तार की अपार संभावनाएं

– प्रशान्त त्यागी

हमारे विशाल देश में पर्यटन के विकास व विस्तार की अपार संभावनाएं हैं। इस दिशा में सबसे बड़ी जरूरत है पर्यटन सेवाओं को उत्पाद के तौर पर मान्यता देने की और बेहतर पैकेजिंग के साथ उसे पेश करने की। परिवहन, आवासन, खान–पान और तमाम उद्योगों को पर्यटन उद्योग के विकास के साथ ही बाई–प्रोडक्ट के तौर पर सफलता मिल जाएगी। **भारत का पर्यटन क्षेत्र एक ऊंची छलांग लगाने के मुहाने पर खड़ा है।** उपरोक्त तमाम सहउत्पाद अवसंरचना क्षेत्र से जुड़े हैं और अवसंरचना विकास पर मौजूदा सरकार का जोर भी है। ऐसे में बेहतर कल की उम्मीद तो की ही जा सकती है।

पर्यटन एक जटिल उपभोक्ता अनुभव है जो उन प्रक्रियाओं से निर्धारित होता है जिसे पर्यटक बहुत सारी सेवाओं के दौरान अनुभव करता है (इसमें सूचनाएं, संबंधित मूल्य, परिवहन, रहने की सुविधा और आकर्षक सेवाएं शामिल हैं) (गुन, 1988)। पर्यटन के अनुभव उन आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों और ढांचागत विशेषताओं से भी तय होते हैं, जो पर्यटन स्थलों के चरित्र को प्रभावित करते हैं। मर्फी (2000) ने इस तरह के उत्पाद को आपूर्ति और मांग व्याख्या के रूप में विश्लेषित किया और बताया कि कैसे बहुत सारे कारक किसी पर्यटन स्थल के प्रति पर्यटकों के रवैयों को प्रभावित करते हैं।

भारत जैसे सांस्कृतिक, भौगोलिक विविधता वाले देश में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं। हालांकि इस रास्ते में समस्याएं भी कम नहीं हैं लेकिन ईमानदार प्रयास किए जाएं तो उन पर पार पाना कोई मुश्किल नहीं। हाल में राष्ट्रीय पर्यटन नीति ने जहां इस क्षेत्र में विकास के विविध फलकों को छुआ है वहीं विभिन्न सामाजिक संगठनों से लेकर कारपोरेट जगत तक की उत्साही भागीदारी ने उम्मीदों की नयी रोशनी फैलाई है। फिलहाल, वक्त आ गया है कि देश में पर्यटन की असीम संभावनाओं को भुनाने के लिए इसके विभिन्न अंशधारक एकजुट होकर समेकित प्रयास करें।

भारत अपनी रंग–बिरंगी विविधताओं के कारण हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा है। झरनों व नदियों से भरपूर प्राकृतिक खूबसूरती, अनेक तरह के पारंपरिक मेलों, खूबसूरत सामानों से सजे बाजार, विभिन्न मसालों से महकते भोजन, सदियों का इतिहास बताती ऐतिहासिक इमारतें, कहीं नदी का किनारा तो कहीं समुद्र की लहरें आदि अनेक ऐसे खूबसूरत पहलू हैं, जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भारत के पास विशाल प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति है। भारत के मनोरम दृश्यों की प्रशंसा करते हुए **मैक्समूलर** ने कहा कि यदि हमें संपूर्ण विश्व में किसी ऐसे देश की खोज करनी हो जिसमें प्रकृति की सर्वाधिक संपदा, शक्ति और सौंदर्य

निहित हो और जिसके कुछ भाग तो वस्तुतः धरती पर स्वर्ग हों तो मैं भारत का नाम लूंगा। **मैक्समूलर** के शब्द यह प्रदर्शित करते हैं कि भारत के पास वह अद्‌भुत खजाना है, जो शायद किसी अन्य देश के पास होना मुश्किल है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस अद्‌भुत विशेषता को अपनी शक्ति संवर्धन के रूप में बढ़ावा दें।

भारत के आर्थिक विकास के साथ पर्यटन संबंधी तथ्यों पर दृष्टि डालें तो यह उभरकर आता है कि वर्ष 2012–13 में पर्यटन क्षेत्र का देश के सकल घरेलू उत्पाद में कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान 6.88% है। देश के रोजगार में पर्यटन क्षेत्र का कुल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान 12.36% है। **पिछले तीन दशकों में देश में पर्यटन में भारी वृद्धि हुई है।** हाल ही में विश्व आर्थिक मंच द्वारा विश्व यात्रा एवं विश्व पर्यटन सूचकांक में भी भारत को इस वर्ष 65 वें स्थान से हटाकर 52 वाँ स्थान प्रदान किया गया है। वर्ष 2013 के मुकाबले वर्ष 2014 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में 10.2% की वृद्धि हुई। विश्व–पर्यटन में भारत का हिस्सा वर्ष 2013 में 0.64% था, जबकि 2014 में यह 0.68% हो गया। वर्ष 2013 में इससे 1,07,671 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई जबकि वर्ष 2014 में 1,23,320 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई। पर्यटन देश के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण कारक है। **पर्यटन क्षेत्र के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि दुनिया के करीब डेढ़ सौ देशों में विदेशी मुद्रा की कमाई करने वाले पांच प्रमुख क्षेत्रों में पर्यटन भी एक है।**

पर्यटन अपने आप में एक अप्रतिम उत्पाद है। इसलिए इसमें पैकेजिंग और विपणन की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं। चूंकि यह क्षेत्र अभी भारत में व्यवस्थित रूप से विकसित हुआ नहीं है इसलिए उद्यमियों के लिए एक खुला आकाश मौजूद है। एक तरफ तो इस क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर पर्यटकों को लुभाया जा सकता है तो दूसरी तरफ उनके लिए जरूरी सहायताओं को भी कारोबार का रूप दिया जा सकता है। कुछ पर्यटन पोर्टलों ने इस दिशा में आधी–अधूरी शुरुआत की है। ऊर्जावान उद्यमी इस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए आगे आ सकते हैं।

आर्थिक विकास के लिए समाधान की खोज हेतु अपने शोधों में अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं ने आम लोगों की आतंरिक शक्ति और उद्यमिता कौशल को संकुचित कर देखा है। संसाधनों की जो भी आपूर्ति और संभावना हो, उनमें तब तक किसी भी तरह का परिवर्तन संभव नहीं है, जब तक कि इन सभी संसाधनों को किसी उद्यमी द्वारा प्रयोग में नहीं लाया जाता है। इस लिहाज से एक उद्यमी को एक परिवर्तन कारक एवं उत्प्रेरक के रूप में वर्णित किया जाना ही उचित होगा। उद्यमियों को उनकी दूरदृष्टि, प्रेरणा और प्रतिभा के कारण जाना जाता है, जो

कि अवसरों को पहचानने और समाज के कल्याण के लिए उनका दोहन करने में दक्ष होते हैं। उद्यमी संसाधनों के लिए आर्थिक मूल्य प्रदान करते हैं। पीटर ड्रकर (2009) के अनुसार हर खनिज तब तक एक चट्टान और हर पौधा तब तक एक खरपतवार ही है जब तक कि कोई उसका प्रयोग नहीं खोज लेता है। वे अपने अथक उद्यम से देश के भौतिक कल्याण में वृद्धि करते हैं। जोर्ज गिल्डर के अनुसार हम सभी अपने जीवन यापन और प्रगति के लिए उन विशेष पुरुषों–महिलाओं के साहस और रचनात्मकता पर निर्भर हैं, जो जोखिम उठाकर हमारी समृद्धि में वृद्धि करते हैं।

जैसा कि **मेयर और बाल्डविन** कहते हैं जब आर्थिक स्थितियां अनुकूल होती हैं तो विकास एक प्राकृतिक परिणाम के स्वरूप स्वतः ही नहीं होता है, बल्कि उसके लिए एक उत्प्रेरक एवं कारक की आवश्यकता होती है और इसके लिए एक उद्यमिता की गतिविधि की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में यह ध्यान दिया जा सकता है कि **एक उद्योग के रूप में पर्यटन आरंभ हो चुका है** और पूरे ही विश्व में एक प्रभावी दर के साथ बढ़ रहा है। सर्विस सेक्टर में, पर्यटन एक बेहतर विकल्प साबित हुआ है, और इसके लिए कम पूंजी और व्यापार स्थापित करने की सुगमता जैसे गुणों का आभार व्यक्त किया जा सकता है।

अब 113 से अधिक देशों के लिए ई–पर्यटक वीजा उपलब्ध है। इसी प्रकार यह सुविधा 16 हवाई अड्डों पर उपलब्ध है, जो भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन के प्रमुख केंद्र हैं।

मनोरंजन के लिए, छुट्टी बिताने के लिए, धार्मिक, पारिवारिक अथवा कामकाजी उद्देश्य से कम समय के लिए यात्रा करना ही पर्यटन है। पर्यटन को सामान्य तौर पर विदेश की यात्रा से जोड़ दिया जाता है, किंतु देश के भीतर ही किसी स्थान की यात्रा को भी पर्यटन कहा जा सकता है। विश्व पर्यटन संगठन की परिभाषा के अनुसार **पर्यटक वे लोग होते हैं, जो छुट्टी बिताने, कामकाज अथवा अन्य उद्देश्यों के लिए अपने सामान्य माहौल से दूर स्थानों की यात्रा करते हैं और ठहरते हैं किंतु वे लगातार एक से अधिक वर्ष तक ऐसा नहीं करते।**

छुट्टी बिताने के लिए पर्यटन लोकप्रिय वैश्विक गतिविधि बन चुका है। पर्यटन देश में भी हो सकता है और अंतर्राष्ट्रीय भी। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को देश में आने वाले पर्यटकों तथा देश से बाहर जाने वाले पर्यटकों में बांटा जा सकता है। आज बाहर से आने वाले पर्यटक कई देशों के लिए आय का प्रमुख स्रोत हैं, विशेषकर किसी देश द्वारा अर्जित की जा रही विदेशी मुद्रा के मामले में। पर्यटकों की अधिक आवक वाले स्थान की अर्थव्यवस्था तथा रोजगार पर भी इसका बहुत प्रभाव होता है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्लूटीओ) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2012 में विश्व पर्यटन आय 1248 बिलियन अमरीकी डॉलर पहुंच गई है। इसमें से भारत का हिस्सा केवल 20.24 बिलियन अमरीकी डॉलर अर्थात् 1.62% है। जबकि हम संसार की 17.5% जनसंख्या वाले देश हैं। यदि सतही क्षेत्रफल की बात करें तो भी हमारे पास विश्व का 2.4% भू-भाग है। विश्व पर्यटकों में से भारत आने वाले पर्यटकों का मात्र 0.68% है। इतना कम अंतर्राष्ट्रीय पयर्टन मिलने पर भी पर्यटन क्षेत्र, भारत की जीडीपी में योगदान देने वाला चौथे नम्बर का सबसे बड़ा क्षेत्र है। आज अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन बहुत से देशों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन गया है जबकि भारत अभी अपना समुचित स्थान बनाने के लिये संघर्ष ही कर रहा है। संतोष किया जा सकता है कि वर्ष 2014 में विश्व स्तर पर पर्यटन के क्षेत्र में 4.2% की दर से तथा इण्डो-पैसिफिक स्तर पर 5.7% की दर से वृद्धि हुई है, जबकि भारत में पर्यटन क्षेत्र में 10.2% की दर से वृद्धि हुई है। **भारत के प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी ने पर्यटन क्षेत्र को भारत की समृद्धि के लिये प्रमुख क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया है।**

भारत में ऐसे स्थलों की कमी नहीं जहाँ से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री को उन्हीं स्थलों पर संग्रहालय बनाकर प्रदर्शित किया जा सकता है, जहाँ से वे प्राप्त हुए हैं। विश्व भर के पर्यटक पर्यटन के लिये इन स्थानों पर आना पसंद करेंगे यदि इन स्थलों की प्रसिद्धि यूरोप, अमरीका एवं अन्य महाद्वीपों के देशों में की जाये। उदाहरण के तौर पर जैसे राजस्थान में गणेश्वर (सीकर), आहड़ (उदयपुर), गिलूण्ड (राजसमंद), बागोर (भीलवाड़ा) तथा कालीबंगा (हनुमानगढ़) से ताम्र-पाषाण कालीन, ताम्रयुगीन एवं कांस्य कालीन सभ्यताएं प्रकाश में आयी हैं। ताम्रयुगीन प्राचीन स्थलों में पिण्डपाड़लिया (चित्तौड़), बालाथल एवं झाड़ौल (उदयपुर), कुराड़ा (नागौर), साबणिया एवं पूगल (बीकानेर), नन्दलालपुरा, किराड़ोत व चीथवाड़ी (जयपुर), ऐलाना (जालोर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), कोल-माहोली (सवाईमाधोपुर) तथा मलाह (भरतपुर) विशेष उल्लेखनीय हैं। इन सभी स्थलों पर ताम्र उपकरणों के भण्डार मिले हैं। लौह युगीन सभ्यताओं में नोह (भरतपुर), जोधपुर (जयपुर) एवं सुनारी (झुंझुनूं) प्रमुख हैं। नागौर जिले के जायल कस्बे के निकट की पहाड़ियों में तो पत्थरों के औजार बनाने का पूरा कारखाना मिला है। इन स्थानों पर बनाये जाने वाले संग्रहालयों में यहां से प्राप्त उपकरण, उनके संक्षिप्त विवरण, चित्र एवं उनके उपयोग आदि को प्रदर्शित किया जा सकता है। साथ ही उस काल के मनुष्यों के पुतले बनाकर उन्हें उस युग में होने वाले गृह कार्य एवं आर्थिक क्रियाकलाप करते हुए दिखाया जा सकता है।

ऐसे और भी बहुत से उदाहरण हो सकते हैं जिनमें छिपी संभावनाओं का पता लगा कर उन्हें **टूरिज्म-प्रोडक्ट** के रूप में तैयार किया जा सकता है। इन प्रोडक्ट्स को तैयार करने के साथ-साथ इस बात की भी आवश्यकता है कि न केवल इनका विश्व-व्यापी प्रचार किया जाये अपितु पर्यटकों को उन स्थलों तक पहुंचने के लिये अच्छे प्रबंध भी किये जायें।

टूरिज्म को सुगम (एक्सेसिबल) होना चाहिये यानि वहां पहुँचने में पर्यटकों को असुविधाओं का सामना न करना पड़े। पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु टीवी पर कितनी भी अच्छी मार्केटिंग हो रही हो परन्तु जब तक गंतव्य तक पहुँचने की सुगमता नहीं होगी तब तक कोई भी पर्यटक वापिस नहीं आएगा। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और विभिन्न प्रशासनिक वर्ग में आपस में तालमेल होना चाहिये।

आज की भागती दौड़ती जिंदगी में जहाँ मानव मशीन की तरह सुबह से शाम तक लगा रहता है, उसे अपने व अपनों के लिए समय ही नहीं रहता, मनोरंजन के नाम पर उसके जीवन में कुछ नहीं रहता। अतः उसे जीवन एकरस व तनावों से परिपूर्ण लगने लगता है। बच्चे भी इस प्रतियोगिता के युग में पढ़ाई में बुरी तरह व्यस्त रहते हैं। इस भागती दौड़ती जिंदगी में विश्राम के क्षणों का इंतजार बच्चों और बड़ों दोनों को होता है और यदि इस समय पर्यटन का कार्यक्रम बनाया जाए तो सोने पे सुहागा हो जाता है। पर्यटन से बहुत से सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। इससे सामान्य ज्ञान में तो वृद्धि होती है, खान–पान, पहनावा आदि के विषय में भी बहुत कुछ जानने को मिलता है। हमें पता लगता है कि बाहर भी एक रंगीन दुनिया है। यदि हम पर्यटन के लिए ऐसी जगहों पर न जाते तो हमें कैसे ज्ञान होता इन सब बातों का ?

पर्यटन से मन आह्लादित होकर रोमांच से भर उठता है और हम प्रकृति के और अधिक निकट आ जाते हैं। जिस परिवार में पति–पत्नी दोनों कामकाजी हों तो पर्यटन पर जाने के समयांतराल में वे बच्चों के साथ पूरा–पूरा समय व्यतीत करते हैं, जिससे वे एक दूसरे को भावनात्मक स्तर पर अधिक निकट पाते हैं, इससे संबंधों में प्रगाढ़ता आती है तथा पारिवारिक वातावरण सुखमय हो जाता है। पर्यटन से स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहता है।

यह तो हुआ पर्यटन का धनात्मक पहलू परंतु पर्यटन का एक अत्यंत दुखद व ऋणात्मक पहलू भी है। हम अपने घूमने–फिरने व मौज–मस्ती में अपने पर्यावरण की पूर्णतः अवहेलना कर बैठते हैं। हम प्राकृतिक स्थानों का आनंद तो लेते हैं, परंतु उनकी सुरक्षा व संतुलन के लिए खतरा उत्पन्न कर देते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए पर्यटन से जुड़ा एक नया शब्द व्यवहार में आया है– **पर्यावरण पर्यटन।**

सामान्यतः मनुष्य की हर गतिविधि पर्यावरण पर कुछ–न–कुछ प्रभाव जरूर छोड़ती है और पर्यटन भी इससे अछूता नहीं है। इन दिनों इको–टूरिज्म के प्रयोग जोर–शोर से हो रहे हैं लेकिन उनमें भी जोर प्रकृति के बीच सान्निध्य पर ज्यादा है और उसके संरक्षण पर कम। फिलहाल, आवश्यकता है एक ऐसी संतुलित दृष्टि विकसित करने की, जो सभी श्वेत–श्याम पक्षों पर समानता से विचार करे और पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी से साम्य बनाए रखकर पर्यटन की संभावनाओं का फायदा भी उठा सके।

पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी तंत्र तीन ऐसे शब्द हैं जिनका इस आलेख में कई स्थानों पर उपयोग होगा। साथ ही इन शब्दों को हम अपने दैनिक जीवन में भी विभिन्न संदर्भों में सुनते रहते हैं।

पर्यावरण (परि+आवरण) शब्द का शाब्दिक अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा अर्थात् हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें सभी जीवित प्राणी रहते हैं और विभिन्न क्रियाएँ करते हैं। पर्यावरण का अंग्रेजी शब्द एनवायरनमेंट है जो फ्रेंच भाषा के शब्द एनवायरनर से बना है, जिसका अर्थ है घेरना। अतः पर्यावरण के अंतर्गत किसी जीव के चारों ओर उपस्थित जैविक तथा अजैविक पदार्थों को सम्मिलित किया जाता है।

पर्यावरण पर्यटन का आशय है पर्यटन का प्रबंधन तथा प्रकृति का संरक्षण इस तरीके से करना कि पर्यटन व पारिस्थितिकी आवश्यकताओं के साथ–साथ रोजगार की जरूरतों की भी पूर्ति होती रहे। हम सभी जानते हैं कि पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बन चुका है जिसका वार्षिक कारोबार **34 लाख डॉलर** का है। कुछ देशों में तो यह विदेशी मुद्रा का सबसे बड़ा स्रोत है। पर्यटन की सुविधाओं, स्थानीय समुदायों के आर्थिक विकास व प्राकृतिक संसाधनों एवं जैव विविधता के संरक्षण के मध्य संतुलन बनाए रखना वास्तव में संघर्ष का काम है। इस दिशा में पर्यावरण पर्यटन एक प्रभावशाली तरीका हो सकता है। पर्यावरण पर्यटन की कोई मान्य परिभाषा नहीं है। यह प्रकृति आधारित पर्यटन है जिसमें पर्यटक का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के साथ–साथ प्राकृतिक क्षेत्रों की परंपरागत संस्कृति का अवलोकन व मूल्यांकन करना होता है। यह प्राकृतिक व सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम करता है। इसके अलावा, पर्यावरण पर्यटन द्वारा स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ होता है। उनके लिए वैकल्पिक रोजगार तथा आय के अवसरों की उत्पत्ति होती है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके द्वारा स्थानीय नागरिकों तथा पर्यटकों दोनों के बीच प्राकृतिक व सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ती है।

पर्यावरण पर्यटन के बढ़ते महत्त्व का प्रमाण यह है कि यह एक ऐसा क्षेत्र हैं जिसमें आर्थिक विकास की प्रचुर संभावनाएं तो हैं ही साथ ही यदि इसे उचित तरीके से नियोजित, विकसित व प्रबंधित किया जाये तो यह प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण का शक्तिशाली उपकरण साबित हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण पर्यटन वर्ष घोषित किया था। **भारत में चल रहे पर्यावरण पर्यटन अभियान में अधिक से अधिक पर्यटन संगठन शामिल हो रहे हैं**। संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र से प्रभावित होकर भारत सरकार ने भी एक नई पर्यटन नीति तैयार की है।

पर्यावरण पर्यटन को प्रभावी बनाने के लिए सरकार के साथ-साथ पर्यटकों की भी कुछ नैतिक जिम्मेदारी बनती है। पर्यटकों को नष्ट न होने वाली सभी वस्तुओं जैसी खाली बोतलें, टिन, प्लास्टिक बैग इत्यादि को अपने साथ वापस ले आना चाहिए। इन्हें यहाँ-वहाँ न फेंक कर नियत कूड़ा पात्रों में ही फेंकना चाहिए। इन्हें अनियंत्रित रूप से कहीं भी फेंक देने से ये उस स्थान की सुंदरता नष्ट करने के साथ-साथ मृदा प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं। इसके साथ ही पवित्र स्थलों, मंदिरों व स्थानीय संस्कृति की पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। ध्वनि-प्रदूषण फैलाने से बचना चाहिए। फोटोग्राफ लेते समय लोगों की निजता का सम्मान करना चाहिए। फोटोग्राफ लेने से पूर्व उचित व्यक्ति से अनुमति प्राप्त कर लेना चाहिए। इसके साथ ही बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि स्थानीय वनस्पति या जंतु विविधता को काट कर बीज रूप में या जड़ सहित लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। झीलों या नदियों में नहाते समय या कपड़ा धोने के लिए डिटर्जेंट जैसे प्रदूषकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण के एक उपकरण के रूप में पर्यावरण पर्यटन की क्षमता के उपयोग के लिए हमें **मालदीव की प्रगति से सीख लेनी चाहिए।** पर्यटन मालदीव का प्रधान उद्योग है और वहाँ के लोगों ने अपनी प्रवाल भित्तियों के संरक्षण के लिए उचित साधन व तरीका अपनाया है। सभी रिसॉर्टो एवं होटलों के लिए यह अनिवार्य बना दिया गया है कि वे अपने कचरे का निस्तारण करें, जल संरक्षण करें तथा अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण करें। उम्मीद है कि भारत सरकार भी देश के बेहतर भविष्य के लिए पर्यटन व पर्यावरण संबंधी सभी समस्याओं को दूर करने के लिए और अधिक ठोस व कारगर प्रयास करेगी।

पर्यटक का पहला उद्देश्य होता है अपने आमोद-प्रमोद और तफरी के लिए नये-नये इलाकों की खोज-उनमें घूमना-फिरना और अपनी एकरस और सुस्त हो रही जिन्दगी में नया थ्रिल पैदा करना। ऐसे लोग चाहे देश के किसी अन्य हलके या प्रान्त से आते हों या बाहरी मुल्क से, वे आमतौर पर ऐतिहासिक इमारतों, धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक दृष्टि से रमणीक समझे जाने वाले ठिकानों, अपने से भिन्न संस्कृति और लोक-जीवन की बानगी वाले आकर्षक स्थलों, वनों, अभयारण्यों और निर्जन स्थानों की खोज में ही अपनी इस घूमंतू प्रवृत्ति की सार्थकता देखते हैं और ऐसे स्थानों पर आने के बाद उनके मकसद और इरादे भी अक्सर बदल जाते हैं। पर्यटन के आंकड़े बताते हैं कि इस तरह आने वाले देशी और विदेशी सैलानियों की संख्या इन बीते पच्चीस-तीस सालों में लगातार बढ़ती रही है। जाहिर है, देश के हर एक भाग में आज पर्यटन को एक लाभदायक उद्यम माना जाने लगा है और हर राज्य में

पर्यटन विकास की नई संभावनाओं पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। आज हर राज्य में पर्यटन का अपना स्वतंत्र मंत्रालय है, उसके बहुत से विभाग हैं, निगम हैं, बोर्ड हैं और बाहर निजी क्षेत्र में भी अनगिनत संस्थान और इस उद्यम से जुड़े लाखों लोग हैं। दिलचस्प बात यह है कि इन बड़े शहरों और ऐतिहासिक–धार्मिक–प्राकृतिक महत्त्व के स्थलों से जुड़ा यह उद्यम अब लगातार उनके आस–पास के ग्रामीण इलाकों और वहां के ग्रामीण जीवन को अपनी लालसा में लपेटता जा रहा है। उन ग्रामीणों का खान–पान, पहनावा, उनके तीज–त्यौहार और लोकानुरंजन के उत्सव अपने मूल स्वरूप से हटकर उनके आमोद–प्रमोद का हिस्सा होकर एक तरह के पर्यटक बाजार में तब्दील होते जा रहे हैं। शायद यह उसी का परिणाम है कि आज हर बड़े शहर में ऐसे अनोखे गांव और चौखी–अनोखी ढाणियां विकसित हो गई हैं, जो उन्हें शहर में ही गंवई खुलेपन और आत्मीयता का आभास देने लगी हैं और ये सैलानियों के आकर्षण का बहुत बड़ा केन्द्र भी बनती जा रही हैं। सुदूर ग्रामीण इलाकों में बने किले, हवेलियां और रावले, जो देखरेख के अभाव में खंडहर होते जा रहे थे, वे अच्छी–खासी हेरिटेज होटल्स और रेस्तराओं में तब्दील होकर कमाई का नायाब जरिया बन गये हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों की ओर बढ़ते इस पर्यटन या पर्यटन की लपेट में आते ग्रामीण जीवन के बीच का रिश्ता उतना सरल और सीधा नहीं होता, जितना ऊपर से दिखाई देता है। पहली बात तो यही कि आजादी के बाद पिछले पच्चीस–तीस सालों में ग्रामीण जीवन में ऊपरी तौर पर बेशक कुछ बदलाव आया हो– जैसे सभी बड़े गांव आवागमन के साधनों (रेल–सड़क यातायात) से जोड़ दिये गये हैं, ग्रामीण विद्युतीकरण की नयी योजनाओं ने, बावजूद अपने अन्दरूनी संकट के, उन गांवों को जमीनी बिजली से जोड़ दिया है, जहां बिजली सिर्फ बादलों के बीच ही झलक दिखाया करती थी, घर में खंभे से कनेक्शन जोड़ लेने के बाद भी वह रोशनी दे पाए या न दे पाए, वह एक अलग मसला है, पानी की पाइप–लाइनें भी बिछ गई हैं, गांवों के बीच चौखंभी मीनारों पर पानी की बड़ी टंकियां भी खड़ी कर दी गई हैं, उनमें पानी की आपूर्ति हो पाए या न हो पाए, इसकी कोई जवाबदेही अभी निश्चित नहीं है। उपग्रह प्रणाली की बड़ी सफलता के बाद हर गांव में दूर–संचार की सेवाएं पहुंचा दी गई हैं– हालत यह कि हर गली–मोहल्ले में एस.टी.डी. बूथ बुला–बुलाकर बातें करने की मनुहार कर रहे हैं, और यों भी निजी क्षेत्र में हुए फफूंदी–विस्तार के बाद तो अब दूर–संचार सेवाएं किसी सरकारी तंत्र की मोहताज भी नहीं रह गई हैं। परिवहन और ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में आई नई क्रान्ति के कारण दुपहिया और चौपहिया वाहन अब गांवों में आवागमन के आम साधनों की तरह हो गये हैं और रही–सही कसर जन–संचार के नये माध्यमों और कंप्यूटर के विस्तार तथा 'सूचना क्रान्ति' ने पूरी कर दी है।

पर्यटन एक ऐसा व्यवसाय है जो अपना आधारभूत ढांचा भी स्वयं अपने दबाव से विकसित करवा लेता है। वह इस बात का इंतजार नहीं करता कि कोई–सरकार या बाहरी संस्था–पहले आगे बढ़कर उसके लिए बुनियादी सुविधाएं जुटा दे तो वहां पर्यटन की गतिविधियां शुरू की जाएं। अनुभव बताते है कि ऐसे बहुत से स्थल हैं, जहां पर्यटक पहले पहुंचे और सुविधाएं बाद में धीरे–धीरे जुटती चली गईं। ऐसी सुविधाएं जुटाना, खुद जुटाने वालों के लिए भी अन्ततः फायदे का सौदा ही साबित होती हैं।

– प्रशान्त त्यागी

पर्यटन मंत्रालय की

हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य

बी–36, सेक्टर–49, नोएडा,

उत्तर प्रदेश–201303

भारत में पर्यटन की विशाल संभावनाएं हैं। प्रत्येक राज्य की कुछ न कुछ विशिष्टता है, ऐसी हमारे राष्ट्र की विरासत है। पर्यटन, निर्धनों में से सबसे निर्धन व्यक्ति के लिए भी अवसर प्रदान करता है। आईए हम अतुल्य भारत के आश्चर्यों का अनुभव करें।

–श्री नरेन्द्र मोदी

भारत के प्रधान मंत्री

मेघालय में पर्यटन के आकर्षण

– विजय कुमार

मेघालय उत्तर–पूर्वी भारत में एक छोटा सा राज्य है। मेघालय का अर्थ ‘‘बादलों का निवास’’ है। इस राज्य का कुल क्षेत्रफल 22,429 वर्ग किलोमीटर है जिसकी राजधानी शिलांग है और आबादी 2,60,000 है। पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए, सन् 1970 में मेघालय को एक अर्ध–स्वायत्त दर्जा दिया गया था। 1972 के 21 जनवरी को यूनाइटेड खासी, जयंतिया हिल्स और गारो हिल्स बनाई गई थी। मेघालय में 11 जिले है। ये हैं – पूर्वी गारो हिल्स, पूर्वी खासी हिल्स, पूर्वी जयंतिया हिल्स, पश्चिमी जयंतिया हिल्स, री–भोई, दक्षिण गारो हिल्स, पश्चिमी गारो हिल्स, पश्चिम खासी हिल्स, दक्षिण–पश्चिम खासी हिल्स, उत्तर गारो हिल्स और दक्षिण– पश्चिम गारो हिल्स।

आदिवासी लोग मेघालय की आबादी का बहुमत है। कुल आबादी में खासी जाति का सबसे बड़ा समूह है, उसके बाद गारो और जयंतिया का स्थान आता है। अन्य समूहों मे कोच और हाजोंग, दिमासा, हमार, कुकी आदि शामिल हैं। मेघालय की मुख्य जनजातियां खासी, जयंतिया और गारो हैं। राज्य की अनूठी विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि मेघालय में बहुसंख्यक जनजातीय आबादी के वंश और विरासत का पता महिलाओं के माध्यम से लगाया जाता है। यहाँ मातृवंशीय प्रणाली प्रचलित है। खासी और जयंतिया आदिवासियों में छोटी बेटी को सभी संपत्ति विरासत में मिलती है और उसे वृद्ध माता–पिता के देख भाल की जिम्मेवारी लेनी होती है।

भौगोलिक दृष्टि से, मेघालय राज्य भी ‘‘मेघालय के पठार’’ के रूप में जाना जाता है। यह मुख्य रूप से आर्कियन रॉक संरचनाओं के होते हैं। पठार की अधिकतम ऊंचाई 1961 मीटर है। मेघालय में उच्चतम बिंदु एक प्रमुख भारतीय वायुसेना स्टेशन है, जो शिलांग पीक भी कहलाता है। शिलांग खासी पहाड़ियों का दिल है। समुद्र तल से लगभग 1200 से 1900 मीटर के मध्य बसा शिलांग उनके लिए एक आदर्श स्थान है, जो कुछ दिन सुकून के साथ बिताना चाहते हैं। स्वच्छ वातावरण, मनोरम नजारे, ठंडी जलवायु और शान्त माहौल आस–पास अनेक दर्शनीय स्थलों की उपलब्धता। जहां अन्य हिल स्टेशनों में वाहन योग्य मार्ग का अभाव है वहीं इस नगर में हर ओर जाने के लिए अच्छी सडकें हैं। इसलिए इसका चारों ओर विस्तार हुआ है। राज्य की राजधानी होने के कारण यहां पर हर आधुनिक सुविधा उपलब्ध है।

मेघालय एक पहाड़ी राज्य है जिसके तीन ओर असम की सीमा व दक्षिण व दक्षिण पश्चिम में बांग्लादेश है। यह तीन अलग–अलग क्षेत्रों गारो, खासी, जयंतिया पहाडियों

से मिल कर बना है। राज्य के दक्षिण पूर्व का वह भाग जो असम के कछार क्षेत्र से लगा है जयंतिया हिल्स कहलाता है। मध्य भाग खासी हिल्स व पश्चिमी क्षेत्र गारो हिल्स कहलाता है। एक राज्य होने के बावजूद इन क्षेत्रों की लोक परंपराएं, भाषा व मान्यताएं भी भिन्न–भिन्न हैं।

मेघालय की जलवायु मध्यम लेकिन नम है। यहाँ औसत 12,000 मिली मीटर वर्षा होती है। मेघालय की राजधानी शिलांग का उच्चतम तापमान 24 डिग्री सेल्सीयस और सर्दियों में न्यूनतम तापमान शून्य डिग्री सेल्सीयस आम हैं। मानिसराम और चेरापूंजी के गांवों को भारी वार्षिक बारिश देखने का गौरव प्राप्त है। भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित वन रिपोर्ट 2003 के अनुसार, मेघालय राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 42.34% यानि 9,496 वर्ग कि.मी. वन क्षेत्र है। इन जंगलों में प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है। मेघालय में मसालों और औषधीय पौधों की एक विशाल विविधता पायी जाती है, जिसमें कि दुर्लभ पिचर प्लांट (PITCHER PLANT) भी पाए जाते है। मेघालय में तितलियों की 250 से अधिक प्रजातियां पाई जाती है। इसके अलावा, सभी जंगली जानवर पाये जाते हैं।

शिलांग कैसे पहुंचें–

गुवाहाटी पूरे उत्तर–पूर्वी राज्यों का प्रवेश द्वार है तथा यहाँ के रेलवे स्टेशन और लोकप्रिय गोपीनाथ बोर्दोलोई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भारत के सभी प्रदेशों से जुड़ा हुआ है। यहां से ज्यादातर लोग सड़क मार्ग से यानि बसों, सुमो और अन्य वाहनों से शिलांग जाते हैं। गुवाहाटी से हेलीकाप्टर सेवा भी चलती है। वैसे उमरोइ में हवाई अड्डा है, जहाँ से केवल कोलकाता के लिये ही उड़ाने है किन्तु ज्यादातर लोग गुवाहाटी तक विमान से व वहां से सड़क मार्ग से ही शिलांग आते हैं। गुवाहाटी से शिलांग तक की दूरी मात्र ढ़ाई से तीन घंटे में पूरी की जा सकती है। गुवाहाटी से शिलांग की यात्रा के दौरान इतना कुछ बदल जाता है कि यकीन नहीं आता। गुवाहाटी में आप जहां अपने को पहाडियों से घिरा पाते हैं तो शिलांग में पहाड़ियों के बीच। पहनावे, कुदरत के नजारे, जलवायु, इमारतों की शैली, खान–पान और भाषा सब बदल जाते हैं, जो सब एक नएपन का अहसास दिलाते हैं।

हर हिल स्टेशन की पहचान उसके चुनिंदा पर्यटन आकर्षणों से होती है। शिलांग में भी कुछ पार्क, संग्रहालय, व्यू प्वाइन्ट, उपासना स्थल, हस्तशिल्प केन्द्र, बाजार, झरने, झील आदि भी हैं जबकि आसपास के स्थलों में दक्षिण चेरापूंजी एवं मानिसराम सबसे प्रमुख है जिसकी सैर के बाद ही शिलांग की यात्रा पूर्ण समझी जाती है। लगभग ढाई लाख की आबादी वाले शिलांग शहर को एक नजर में देखना हो तो शिलांग पीक से बेहतर कोई विकल्प नहीं। यह नगर के सिटी सेंटर में स्थित पोलिस बाजार जिसको

स्थानीय भाषा में KHYNDAI LAD कहते है, से 10 कि.मी. की दूरी पर है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1,900 मीटर है। नगर की अपेक्षा यहां पर ठंडक का अहसास होता है। यदि मौसम साफ हो तो दूर भूटान व अरुणाचल की बर्फीली चोटियां देखी जा सकती हैं। शिलांग नगर में दो अच्छे पिकनिक स्थल लेडी हेडारी पार्क व वार्ड्स लेक हैं जिनमें दो झीलें है। लेडी हेडारी पार्क के तहत एक मिनी जू है। दूसरी झील वार्ड्स लेक है जो राजभवन के निकट है। नगर के एक छोर पर 18 होल्स के गोल्फ मैदान है। चारों ओर फैली हरियाली इसे चार चांद लगाती है। यहां दो संग्रहालय है इनमें से एक तितलियों का संग्रहालय है तो दूसरा राज्य संग्रहालय। राज्य संग्रहालय में यहां के जनजातीय समाज की झलक देखी जा सकती है। उनके परिधान, अस्त्र-शस्त्र, बर्तन, संगीत उपकरण, कला व हस्तशिल्प को लेकर वीथिकाएं बनी हैं। नगर के आस-पास बिशप, ऐलीफेंट, व बीडन फाल्स हैं किन्तु इनमें ऐलीफेंट फाल सबसे आकर्षक है जहां पानी तीन स्तरों से नीचे गिरकर बेहद आकर्षक लगता है। नगर का कैथोलिक चर्च कैथेड्रल आफ मैरी भी दर्शनीय स्थान है। पोलिस बाजार नगर का दिल है। सुबह से शाम तक यहां पर रौनक बनी रहती है। समीप में अन्तर्राज्यीय बस अड्डा है व टैक्सी स्टैंड है। सायंकाल में बिजली की रोशनी में पोलिस बाजार बेहद आकर्षक लगता है।

नगर में रहने के लिए अनेक होटल हैं किन्तु यदि पहले से बुकिंग कर आएं तो सुविधा होती है। यहां बनने वाला हस्तशिल्प आपको हर दर्शनीय स्थल में मिल जाएगा। इसे आप तो नगर के पोलिस बाजार में भी खरीद सकते हैं। शिलांग आने के लिये सबसे उपयुक्त समय अक्तूबर से मई है किन्तु वर्षा काल के दौरान यानी जून से सितम्बर महीनों में भी बड़ी संख्या में पर्यटक यहां से चेरापूंजी जाते हैं अर्थात पूरे वर्ष यहाँ पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है।

त्योहार एवं महोत्सव

यहां सभी त्योहारों को बड़े जोर-शोर से मनाया जाता है। खासी, जयंतिया और गारो सीधे और परोक्ष रूप से धर्म के साथ जुड़े हुए हैं और कई त्योहारों को मनाते हैं। वे नृत्य, दावत और पूजा के रूप में व्यक्त किया जाता है और खुशियों से भरा हुआ है।

'शाद सुक मिन्सिएम' (SHAD SUK MYNSIEM) यानि खुशी का डांस जो अप्रैल महीने में बाइकिंग ग्राउंड शिलांग में तीन दिन तक मनाया जाता है। शाद सुक मिन्सिएम खासी जनजाति का एक नृत्य है जोकि खासी समाज के मातृवंशीय और पितृवंशीय पहलुओं को दर्शाता है। उन्हें पुरुषों में बारह शक्ति और संसाधन है, जबकि नारीत्व के सम्मान की रक्षा करने के लिए एक एकल ताकत और संसाधन होने के रूप में चाबुक और तलवारों के साथ आदमी, कुंवारी हलकों को दर्शाता है। शाद सुक मिन्सिएम शिलांग के पास अप्रैल के महीने में और मेघालय में अन्य स्थानों पर मनाया जाता है।

नोंग्क्रेम नृत्य (NONGKREM DANCE) यह खासी जनजाति के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और धूम-धाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है। पांच दिन

नोंग्क्रेम नृत्य

तक चलने वाले इस त्योहार में बकरे की बलि चढ़ाई जाती है। यह शिलांग से पंद्रह किलोमीटर दूर स्मित में मनाया जाता है।

लाहो नृत्य (LAHO DANCE) जयंतिया लोगों के मनोरंजन के लिए यह एक और नृत्य महोत्सव है। इस नृत्य महोत्सव में महिला और पुरुष दोनों भाग लेते हैं जिसमें एक महिला के दोनों तरफ आम तौर पर दो पुरुषों द्वारा सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा में नृत्य किया जाता है।

वंगाला महोत्सव (WANGALA FESTIVAL) कृषि वर्ष के अंत का प्रतीक है तथा गारो का फसल त्योहार है। यह सूर्य देवता को धन्यवाद करने लिए के एक विधि है। एक नगारा (पवित्र अवसरों पर लोगों को संचार पहुँचाने के लिए इस्तेमाल एक विशेष ड्रम) से पीटा जाता है। यह गारो जनजाति का सबसे लोकप्रिय त्योहार है, और यह नवंबर में आयोजित किया जाता है। पुरुष और महिलाएं भैंस के सींग, तुरहियां और बांस बांसुरी की उड़ाने, ड्रम की धड़कन के साथ आनंदित होकर उल्लास में नृत्य करते हैं। पुरुष पंख के साथ धोती, आधा जैकेट और पगड़ी पहनते हैं। महिलाओं को रेशम, ब्लाउज और पंख के साथ एक सिल्क की चादर से बना रंगीन कपड़ा पहने देखा

वंगाला महोत्सव

जा सकता है। 300 नर्तकों और 100 ड्रम का उत्सव में अपने सभी महिमा में मैदान पर उतरना इस त्योहार का मुख्य आकर्षण है।

चाड सुक्र (CHAD SUKRA) या वार्षिक चाड सुक्र एक बुवाई त्योहार है यह त्योहार जयंतिया प्नार लोगों द्वारा अप्रैल या मई की शुरुआत के बीच हर साल मनाया जाता है। प्नार लोग एक किसान त्योहार खत्म हो जाने के बाद ही अपनी जमीन पर बीज बोने की शुरुआत करने पर विश्वास रखते हैं। त्योहार लोगों के बीच शांति और सद्भाव कायम करने तथा इसके अलावा प्राकृतिक आपदाओं के सभी रूपों से अपनी फसलों की रक्षा के लिए भगवान, निर्माता से आह्वान करने के लिए किया जाता है।

बेह्दिएन्ख्लम महोत्सव (BEHDEINKHLAM FESTIVAL) यह मेघालय के सबसे रंगीन धार्मिक उत्सवों में से एक है जो जोवाई में जुलाई के दौरान तीन दिनों के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार धार्मिक संस्कार की एक श्रृंखला के साथ जुड़ा हुआ है। लोग ड्रम की धड़कन और पाइप खेल को संगत करने के लिए सड़क पर नाचते हैं।

बेह्दिएन्ख्लम महोत्सव

प्रत्येक इलाके में एक रथ नामक एक सजावटी टॉवर की तरह संरचना तैयार की जाती है। इसका विसर्जन ऐत्नर पर एक छोटी सी झील में 30 से 40 मजबूत लोगों द्वारा किया जाता है।

कुछ प्रमुख पर्यटक स्थल इस प्रकार हैं जिन्हें मेघालय जाने पर अवश्य देखना चाहिए

वार्ड्स लेक (WARD'S LAKE): शिलांग में एक खूबसूरत सी झील है जिसे वार्ड्स लेक के नाम से जाना जाता है। यह शहर के बीचों-बीच है। इस झील का पानी इतना साफ है कि अंदर से तैरती मछलियां नजर आती हैं। यहां पर नौका विहार कर सकते हैं। इसके साथ ही जुड़ा बोटैनिकल गार्डन भी अवश्य देखें। यहां पर रंगबिरंगी चिड़ियाँ मन को मोह लेती हैं।

लेडी हैदरी पार्क व मिनी जू (LADY HYDARI PARK & MINI ZOO): यह पार्क भी शिलांग शहर में ही है। इस पार्क का नाम अकबर हैदरी की पत्नी के नाम पर रखा गया है। बच्चों के लिए यहां पर एक मिनी जू भी है साथ ही एक खूबसूरत झरना और स्वीमिंग पूल भी। साथ ही एक रेस्तरां भी है जहां पर्यटकों के लिए शाम को कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

पोलो ग्राउंड (POLO GROUND): शिलांग में पोलो ग्राउंड अपनी एक अलग ही विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर तीर का खेल खेला जाता है। इस खेल के जरिये खासी जनजाति के लोग आज भी अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े प्रतीत होते हैं। इस खेल के लिए लाटरी की तरह टिकट खरीदे जाते हैं और खासी आरचरी एसोसिएशन के तीरंदाज एक बांस के टार्गेट पर चार मिनट में 1500 तीर छोड़ते हैं जिसके तीर निशाने पर लगते हैं वे गिने जाते हैं और वही नंबर सट्टेबाजी में खोला जाता है । इसका जन्म प्राचीन जनजातीय खेलों से हुआ है।

शिलांग गोल्फ कोर्स (SHILLONG GOLF COURSE): यह भी शिलांग शहर में है और भारत का तीसरा सबसे बड़ा और सबसे पुराना 18 होल का गोल्फ कोर्स है। इसको पूर्व का 'ग्लैनईगल' कहा जाता है।

मेघालय स्टेट म्यूजियम (MEGHALAYA STATE MUSEUM): शिलांग जाने पर स्टेट म्यूजियम अवश्य देखना चाहिए क्योंकि यहां पर मेघालय राज्य के लोगों के सांस्कृतिक जीवन और मानव जातीय अध्ययन से जुड़ी वस्तुएं रखी हुई है। इस संग्रहालय के ठीक सामने सबसे पुराना सेंट कैथोलिक चर्च भी है।

स्वीट फाल (SWEET FALLS): शिलांग से आठ किलोमीटर दूर हैप्पी वैली के पास यह स्थित है। इसको देख कर ऐसा आभास होता है कि पेंसिल के आकार के एक मोटे वाटर पाईप से 200 फुट नीचे पानी गिर रहा है। यह दिन भर की आउटिंग और पिकनिक के लिए अच्छी जगह है।

शिलांग पीक (SHILLONG PEAK): अपने नाम के अनुकूल यह पीक शिलांग से दस किलोमीटर दूर है और 1,960 मीटर ऊंची है। यह चोटी एक पर्यटन स्थल भी है और हर साल बसंत के समय यहाँ के निवासी शिलांग के देवता की पूजा करते हैं। शाम के समय शहर की रोशनी यहां से देखने पर ऐसी लगती है मानो जमीन पर ही 'तारा मंडल' आ गया है। साफ मौसम में इस चोटी से हिमालय की श्रृंखलाएं और बांग्लादेश के मैदानी इलाके भी साफ दिखाई देते हैं। यहाँ पर पर्यटकों के लिए स्थानीय वेश–भूषा पहन कर तस्वीरे लेने का प्रबंध है।

चेरापूंजी (CHERRAPUNJEE): शिलांग जाकर अगर चेरापूंजी नहीं गए तो आपने कुछ नहीं देखा। पूरी दुनिया में सबसे अधिक बारिश यहीं पर होती है। यह शिलांग से 56 किलोमीटर दूर है। यहां जाने के लिए शिलांग से सवेरे निकलकर शाम तक घूमकर लौटा जा सकता है। चेरापूंजी जाने वाले रास्ते में ही एलीफेंटा फाल पड़ता है। इस तरह एक दिन में ये दोनों जगह देखी जा सकती हैं। एलीफेंटा फाल शिलांग से बारह किलोमीटर दूर है। इस झरने को पास से देखने के लिए एक लकड़ी के पुल से होकर सीढ़ियों से नीचे तक जाना होता है। एलीफेंटा फाल के दूसरी ओर मतिलांग पार्क है जो शिलांग

का विशिष्ट पिकनिक स्थल है। एलीफेंटा फाल के पास में भारतीय वायु सेना का इस्टर्न एअर कमांड है जो कि अपने म्यूजियम के लिए प्रसिद्ध है। चेरापूंजी में जब आप पहुंचेंगे तो आपको वहां झरनों का शोर सुनाई देगा। इस झरने को सेवन सिस्टर फाल के नाम से जाना जाता है। चेरापूंजी में ही एक व्यू प्वाइंट है जहां से खुले मौसम में बांग्लादेश का हरा–भरा मैदानी इलाका दूर–दूर तक साफ दिखाई देता है। एक तरफ मेघालय राज्य के पहाड़ी इलाकों और दूसरी तरफ बांग्ला देश के मैदानी भाग दोनों का मिलना एक मनोरम दृश्य उत्पन्न करता है। लेकिन यह दृश्य बेहद दुर्लभ है क्योंकि ज्यादातर यह बादलों से इतना घिरा रहता है कि आप अपने पास खड़े व्यक्ति को भी नहीं देख पाएंगें। यहां पर संतरे के बाग हैं और शुद्ध शहद भी मिलता है।

मव्ल्य्न्नोंग ग्राम (MAWLYNNONG VILLAGE): यह शिलांग से ८० किलोमीटर दूर है। यह पूरे एशिया महाद्वीप का सबसे साफ सुथरा ग्राम माना जाता है। इस ग्राम के स्थानीय निवासियों ने इसे साफ रखने में काफी भागीदारी निभाई है। यहाँ पर्यटकों के

मव्ल्य्न्नोंग ग्राम

रहने के लिए वृक्षों के उपर बड़े घर बनाये गये है। यहाँ पर्यटकों के देखने के लिए झरने, ट्रैकिंग, लोकल व्यंजनों का लुत्फ उठाने के साधन मौजूद है। सायं काल के समय पर्यटकों के लिए लोक संगीत एवं लोक नृत्य का आयोजन किया जाता है।

डावकी (DAWKI): यह मेघालय और बांग्लादेश के बॉर्डर पर स्थित है। बोटिंग का शौक हो और प्रकृति को बिल्कुल नए अंदाज में देखना चाहते हैं तो शिलांग से 96 कि.मी. दूर डावकी जाएं। यह उमगोट नदी के पास स्थित है। यहां पर एक झूले वाला पुल है जिसके नीचे से डावकी नदी बहती है। यहां पर हर साल बोटिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है।

जाकरेम के गर्म पानी के स्रोते (JAKREM HOT WATER SPRINGS): शिलांग से 64 किलोमीटर दूर जाकरेम मे एक ऐसी जगह है जो 'हेल्थ रिसॉर्ट' के तौर पर भी लोकप्रिय है। यहां पर गंधक के पानी का स्रोत है, जो कई बीमारियों को दूर करने वाला माना जाता है। यह चट्टानों से घिरा एक सुंदर स्थान है।

उमियाम/बारापानी झील (UMIAM/ BARAPANI LAKE): शिंलाग का एक और आकर्षण विशाल उमियाम झील है जिसको बरापानी के नाम से भी जाना जाता है। लगभग 10 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैली यह कृत्रिम झील दक्षिण खासी की पहाडियों से आने वाली उमियाम नदी के पानी को रोक कर बनी है जिसके एक छोर पर बिजली घर है जो शिलांग को बिजली की आपूर्ति करता है। यह झील गुवाहाटी से आते समय मुख्य मार्ग पर शिलांग से 16 कि.मी. पहले है। यहां पर एक पार्क में बडी संख्या में पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है। इस झील की सैर का अपना अलग ही रोमांच है। इसमें जाने के लिए मोटर नौकाएं चलती हैं। जलक्रीड़ा के अनेक साधन यहां पर मौजूद हैं। झील के किनारे कुछ रिजॉर्ट भी बने हैं। चारों ओर पसरी हरियाली किसी को भी अभिभूत कर देती है।

पोलिस बाजार और बड़ा बाजार (POLICE BAZAAR & BARA BAZAAR): शिलांग शहर में आप पोलिस बाजार, बड़ा बाजार आदि घूम सकते हैं और यहीं खरीदारी करना भी उपयुक्त होगा। बड़ा बाजार में आपको शुद्ध शहद, हाथ के बुने शाल, तीर कमान, कुछ स्थानीय मसाले, बांस से बनी वस्तुएं आदि मिल जाएंगे।

लिविंग रूट ब्रिज (LIVING ROOT BRIDGE): यह खासी सदस्यों द्वारा रबर के पेरों को प्रशिक्षित कर बनाया जाता है। इस तरह की संरचना चेरापूंजी और मव्ल्य्न्नोंग मे देखी

लिविंग रूट ब्रिज

जा सकती है। इनमें से एक विश्व प्रसिद्ध लिविंग रूट ब्रिज शिलांग से 70 कि.मी. दूर चेरापूंजी में स्थित है। इस रूट ब्रिज तक पहुंचने के लिए चेरापूंजी से 3000 स्टेप्स उतरना पड़ता है। यहाँ पर विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है।

नार्तियांग मोनोलिथ (NARTIANG MONOLITHS): यह दर्शनीय स्थल शिलांग से 45 कि.

नार्तियांग मोनोलिथ

मी. की दूरी पर स्थित है। ये मोनोलिथ, एक ही पत्थर से बने बहुत बड़े खम्बे के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है।

मावाफ्लांग पवित्र वन (MAWPHLANG SACRED FOREST): यह स्थल शिलांग से 18 कि. मी. दूर स्थित है। इस पवित्र वन में ये मान्यता है कि इन जंगलों से एक भी टहनी नहीं तोड़ी जा सकती है, यह अपने आप मे एक अनोखा जंगल है। यहाँ पर औषधीय पौधों की एक विशाल विविधता पायी जाती है।

नोंक्रेक्र राष्ट्रीय उद्यान (NONKREK NATIONAL PARK): यह मेघालय के गारो हिल्स में स्थित एक राष्ट्रीय उद्यान है तथा कुछ दुर्लभ जंगली जानवरों का घर है।

बल्पक्रम राष्ट्रीय उद्यान (BALPAKRAM NATIONAL PARK): यह बल्पक्रम के पठार के ऊपर बना है तथा अपने गोर्ज के लिये प्रसिद्ध है जिसकी तुलना अमेरिका के ग्रनड कन्योन से की जाती है।

नोंक्रेक बिओस्फेरे रेसेर्वे (NOKREK BIOSPHERE RESERVE): यह तुरा की चोटी से 2 कि.मी. की दूरी पर है तथा बहुत सारे जानवरों का निवास स्थान है।

सिजु और नोंग्ख्यल्लेम (SIJU AND NONGKHYLLEM WILDLIFE SANCTUARY): यहां मेघालय के 2 बड़े वन्य जीव अभ्यारण हैं, जो कि पर्यटकों के बीच आकर्षण का केंद्र हैं।

यालोंग पार्क (IALONG PARK): यह पार्क जोवाई से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं।

थाडळीएसकेण लेक (THADLASKEIN LAKE): यह शिलांग से 56 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह जयंतिया हिल्स का सबसे प्रसिद्ध पिकनिक स्थल है।

मेघालय की गुफाएंः जो लोग गुफाओं के भ्रमण का आनन्द लेना चाहते है, उनके लिए मेघालय उत्कृष्ट जगह है। मेघालय में करीब 780 गुफाएँ हैं जिसमें से कुछेक को अभी भी खोजा नहीं गया है और मानचित्र में उतारना बाकी है। जिन गुफाओं का सर्वेक्षण किया जा चुका है उनमें से पांच भारतीय उप महाद्वीप में सबसे लंबी हैं। मेघालय की कुछ महत्वपूर्ण गुफाएं इस प्रकार से हैं। **मव्म्लुह गुफाः** यह गुफा चेरापूंजी में है तथा एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। **कोत्साती गुफाः** यह गुफा जैयंतियां हिल्स में है। **सिजू दोबक्कोल गुफाः** गारो हिल्स में है तथा काफी प्रसिद्ध है।

मैं यह चाहूंगा कि आप मेघालय आकर इसके खूबसूरत नजारों का लुत्फ अवश्य उठाएं।

– विजय कुमार
प्रधानाचार्य
होटल प्रबंध संस्थान,
पूर्वी खासी हिल्स जिला
शिलांग–793018 मेघालय

विश्व पर्यटन दिवस और भारत

– डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी

पर्यटन के महत्त्व और लोकप्रियता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने सन् 1980 से 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था। इसका आयोजन 27 सितंबर 1970 को स्थापित संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के तत्वाधान में किया जाता है । संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) का मुख्यालय स्पेन की राजधानी मेड्रिड में है।

विश्व पर्यटन दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य पर्यटन और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के प्रति विश्व समुदाय को जागरूक करना है। इसके अतिरिक्त, इस दिवस का उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना और पर्यटन के द्वारा अपने देश की आय को बढ़ाना भी है। पूरे विश्व के देशों में पर्यटन को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विविध सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कार्यक्रम शामिल होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने विश्व के पचास देशों की आधिकारिक सदस्यता के साथ, विश्व स्तर पर पर्यटन उद्योग के संरक्षक के रूप में अपनी गतिविधियां आरम्भ कीं। इस संगठन का एक मूल दायित्व लोगों के बीच संपर्क बनाना एवं इस लोकप्रिय उद्योग को बढ़ावा देना है। विभिन्न आयामों वाले इस उद्योग की विशेषताओं जैसे कि नए प्रस्तावों की प्रस्तुति, आर्थिक एवं सांस्कृतिक और सामाजिक लाभ और उसकी विशेषताओं के विवरण हेतु विस्तृत योजना बनाने की आवश्यकता थी, अतः प्रतिवर्ष विश्व पर्यटन संगठन के सदस्य दृष्टिगत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सम्मेलनों एवं बैठकों में विभिन्न प्रकार के निर्णय लेते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में, विश्व पर्यटन संगठन के सदस्यों एवं सचिवालय ने यह निर्णय लिया कि इस मंच से एक विस्तृत संदेश द्वारा विश्व समुदाय का ध्यान पर्यटन की ओर आकृष्ट किया जाए और सरकारों, समाज, विश्वविद्यालयों एवं इस विषय से संबंधित समस्त विभागों को इसकी ओर प्रोत्साहित किया जाए, ताकि आम लोगों के जीवन में पर्यटन अपना स्थान बना ले और अपेक्षित लाभ उन तक पहुंच सकें।

मानव जीवन में दुख और सुख साथ-साथ रहते हैं, किंतु वह जीवन में निरंतर नए और बेहतर पलों का सुखद अहसास ढूंढ़ता रहता है। इतिहास साक्षी है कि मानव की यही जिज्ञासु प्रवृत्ति उसे अपने घर, शहर और देश से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करती रही है। इस प्रवृत्ति के मूल में सुखद पलों की खोज का अहसास ही दुनियाभर में पर्यटन के रूप में संगठित होने का निमित्त बना है।

वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया मुट्ठी में आ गई है। अब लोगों को सात समंदर पार जाने में भी ज्यादा समय की आवश्यकता नहीं पड़ती है। आज जनसंख्या का एक बडा हिस्सा देश–विदेश के पर्यटन स्थल घूमने में संकोच नहीं करता। सिमटती दूरियों के बीच लोग बाहरी दुनिया के बारे में भी जानने के उत्सुक रहते हैं। यही कारण है कि आज दुनिया में पर्यटन एक फलता–फूलता उद्योग बन चुका है। पर्यटन आज सांस्कृतिक पहचान पुख्ता करने के साथ राजस्व का भी जरिया बन रहा है। ऐसे में स्थानीय सरकारें अपने देश में पर्यटन को बढ़ावा देने की पुरजोर कोशिश कर रही हैं।

आज पूरे संसार में पर्यटन एक बड़ी आबादी के जीवन निर्वाह का व्यवसाय बन गया है। अब हम पर्यटन के कई रूप भी देखते हैं जैसे बायो टूरिज्म, मेडिकल टूरिज्म, एजुकेशनल टूरिज्म, एडवेंचर टूरिज्म, इको टूरिज्म आदि। हालांकि इन सभी पर्यटन यात्राओं का मकसद मन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना और खुद को नई–नई चीजों से मिलवाना होता है।

पर्यटन की किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज के समय में जहां हर देश की पहली जरूरत अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है वहीं आज पर्यटन के कारण कई देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन उद्योग के इर्द–गिर्द घूमती है। यूरोपीय देश, तटीय अफ्रीकी देश, पूर्वी एशियाई देश, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि ऐसे देश हैं जहां पर पर्यटन उद्योग से प्राप्त आय वहां की अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है।

भारत के प्रति विश्व के पर्यटकों की संख्या देश में निरंतर आई आर्थिक मंदी एवं ताज बम काण्ड जैसे धमाके होने के बावजूद कम नहीं हुई है। भारत में विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न शहरों में अलग–अलग योजनाएँ लागू की गई हैं। पर्यटन उद्यम की आय में देश में कायम शांति से बढ़ावा हुआ है और इससे जुड़े उद्यम समूहों में होटल समूह की तादाद काफी है।

भारत विश्व के पाँच शीर्ष पर्यटक स्थलों में से एक है। विश्व पर्यटन संगठन और **वर्ल्ड टूरिज्म एण्ड ट्रैवल काउन्सिल** तथा पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी संगठनों ने भारतीय पर्यटन को सबसे ज्यादा तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र के रूप में बताया है। भारतीय पर्यटन की कुछ खूबियाँ इस प्रकार हैं–

- कोन्डे नास्त ट्रैवलर पुस्तिका के पाठकों के अनुसार भारत, विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्यवर्धक स्थलों में से एक है।

- संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने भारतीय पर्यटन को सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रहे उद्योग के रूप में घोषित किया है।
- पर्यटन देश का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग है।
- देश की कुल श्रम शक्ति में से **6 प्रतिशत** को पर्यटन में रोजगार मिला हुआ है। पर्यटन उद्योग की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।
- भारत के विशाल तथा खूबसूरत तटीय क्षेत्र, अछूते वन, शान्त द्वीप समूह, वास्तुकला की प्राचीन, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परम्परा, रंगमंच तथा कला केन्द्र पश्चिम के पर्यटकों के लिए खूबसूरत आकर्षण के केन्द्र बन सकते हैं।

विदेशी पर्यटकों के प्रति आत्मीयता दर्शाने के लिए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम **अतिथि देवो भव** शुरू किया गया है। **पैलेस ऑन व्हील्स** को देश की शाही सैलानी रेलगाड़ी का तीसरा हॉस्पिटेलिटी इंडिया इंटरनेशनल अवार्ड दिया गया है। केन्द्रीय पर्यटन विभाग ने सितंबर 2002 में **'अतुल्य भारत'** नाम से एक नया अभियान शुरू किया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर बढ़ावा देना था। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने ओडिशा स्थित एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की **झील चिल्का** झील को उसकी प्राकृतिक सुंदरता व जैविक विविधता के लिए दर्शनीय पर्यटन स्थल घोषित किया है।

भारत में पर्यटन उद्योग बहुत फल–फूल रहा है। भारत असंख्य अनुभवों और मोहक स्थलों का देश है। चाहे भव्य स्मारक हों, प्राचीन मंदिर या मकबरे हों, इसके चमकीले रंगों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रौद्योगिकी से चलने वाले इसके वर्तमान से अटूट संबंध है। कोच्चि, कोवलम, शिमला, गोवा, आगरा, जयपुर, खजुराहो, भीम बेटका, मथुरा, काशी जैसी जगहें तो अपने विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा चर्चा में रहती हैं। भारत में अपने लोगों के साथ लाखों विदेशी लोग प्रतिवर्ष भारत घूमने आते हैं। भारत में पर्यटन की उपयुक्त क्षमता है। यहां सभी प्रकार के पर्यटकों को चाहे वे साहसिक यात्रा पर हों, सांस्कृतिक यात्रा पर या वह तीर्थयात्रा करने आए हों या खूबसूरत समुद्री–तटों की यात्रा पर निकले हों, सबके लिए खूबसूरत स्थल हैं।

अंत में यही निष्कर्ष निकलता है कि आज पर्यटन शब्द अनजान नहीं रह गया है। वैसे तो मानव प्राचीन काल से ही अपनी जिज्ञासा के वशीभूत होकर पर्यटन करता आया है, किंतु आज जबकि मानव ने असाधारण प्रगति कर ली है, पर्यटन आम और खास हो गया है। विश्व में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है, क्योंकि आज पर्यटन विदेशी मुद्रा कमाने वाला दूसरा सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। यही नहीं कुछ देश तो

केवल पर्यटन के बलबूते पर ही विश्व के नक्शे में चमक रहे हैं। भारत में भी पर्यटन की असीम संभावनाएं मौजूद हैं।

आज पर्यटन का विकास इतना हो गया है कि यह मानव के दिन-प्रतिदिन के कार्यों के साथ-साथ पर्यटन के असीमित अवसर प्रदान करता है। यदि कोई मानव अपने व्यवसाय के सिलसिले में किसी दूसरे शहर अथवा देश जाता है, तो कार्य पश्चात आराम और मनोरंजन के लिए पर्यटन ने अनेक अवसर पैदा कर दिए हैं। वह वन्य-जीव पर्यटन के माध्यम से वन्य-जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में देखकर रोमांचित हो सकता है अथवा समुद्र-तट पर्यटन के माध्यम से खूबसूरत समुद्र तटों पर आराम करने के अलावा, वाटर स्कीइंग, विंड सर्फिंग तथा स्कूबा डाइविंग जैसी जल-क्रीडाओं का आनंद उठा सकता है। साहसिक पर्यटन के माध्यम से वह ट्रैकिंग, माउंटेनियरिंग, रिवर राफ्टिंग, पैरा ग्लाइडिंग जैसे साहसिक खेलों का लुत्फ उठा सकता है अथवा सामाजिक पर्यटन के माध्यम से अन्य देशों की विविध जीवन शैलियों, संस्कृतियों से दो-चार कराने वाले खाद्य उत्सवों, हस्त शिल्प मेलों और ग्रामीण सांस्कृतिक मेलों का आनंद उठा सकते हैं।

इस प्रकार आज पर्यटन का बहुआयामी रूप हमारे सामने है, जिससे किसी भी वर्ग का व्यक्ति अछूता नहीं रह गया है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के साथ-साथ घरेलू पर्यटन भी विकसित हो रहा है। भारत पर्यटन के लिए आदर्श स्थल के रूप में तेजी से स्थापित हो रहा है, क्योंकि पूरे विश्व में यही एक ऐसा देश है, जहां पर्यटन के समस्त रूप विद्यमान हैं। इसके उत्तर में विश्व प्रसिद्ध हिमालय शोभायमान है, तो दक्षिण में महासागर लम्बी तटरेखा बनाते हैं। यह देश विश्व विरासती ऐतिहासिक स्मारकों से परिपूर्ण है, जिसमें विश्व प्रसिद्ध ताजमहल जगमगाता हुआ हीरा है।

– डॉ. प्रदीप कुमार चौधरी

सी-703, गेटवे टावर,

सेक्टर-4, वैशाली, गाजियाबाद-201010

ई-पर्यटक वीजा

भारत सरकार ने 113 देशों के नागरिकों के लिए देश में प्रवेश की औपचारिकताओं को सरल बनाने की दृष्टि के साथ ई-पर्यटक वीजा (ई-टीवी) की सुविधा शुरू की है । यह सुविधा अब देश के 16 हवाई अड्डों नामतः दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद, तिरूवनंतपुरम, कोच्चि, वाराणसी, गया, अहमदाबाद, अमृतसर, तिरूचिरापल्ली, जयपुर और लखनऊ में उपलब्ध है।

कुशल भारत : स्ट्रीट फूड वेंडर्स का प्रशिक्षण

– विजय कुमार

पर्यटन देश के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। किंतु पर्यटन से जुड़ी संभावना को अधिक से अधिक मूर्त्त रूप देने के लिए आवश्यक है कि पर्यटन से जुड़ी सेवाएं दक्ष और कुशल हाथों में हों। फिलहाल स्थिति यह है कि सेक्टर अकुशल कर्मियों से परहेज नहीं करता क्योंकि वे सस्ते और कम वेतनों पर मिल जाते हैं। समय के साथ ऐसे कर्मी अपने काम में कुछ हद तक दक्षता भी प्राप्त कर लेते हैं पर औपचारिक रूप से वे अकुशल ही माने जाते हैं।

पर्यटन सेक्टर में कौशल की अल्पता इसके अपेक्षित विकास में बड़ी बाधा है। इस समस्या से निपटने के लिए मंत्रालय दो–तरफा प्रयास कर रहा है । इसके अंतर्गत मंत्रालय 'हुनर से रोजगार तक' के नाम से एक योजना चलाता है जिसमें 18–28 वर्ष की आयु सीमा में युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण चार विधाओं – (1) पाक कला (2) वेटर्स सेवा (3) हाउस कीपिंग और (4) बेकरी – में उपलब्ध है। यह योजना अगस्त 2009 में प्रारंभ की गई थी। तब से लेकर 30 सितंबर, 2015 तक लगभग 2,30,000 युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

मंत्रालय का दूसरा बड़ा प्रयास इस सेक्टर में उपलब्ध कौशल को औपचारिक मान्यता देना है। मंत्रालय की प्रत्याशा है कि इसके फलस्वरूप प्रमाणित सेवा कर्मियों की व्यावसायिक बेहतरी की संभावना बढ़ेगी और सेक्टर की कौशल प्रमाणिकता भी बढ़ेगी। 30 सितंबर, 2015 तक लगभग 83,000 सेवा कर्मियों की कुशलता प्रमाणित की जा चुकी है। इस कार्यक्रम के मुख्य प्रावधान निम्नानुसार हैं :

- कौशल प्रमाणीकरण चार विधाओं – पाक कला, वेटर्स सेवा, हाउसकीपिंग और बेकरी–में उपलब्ध।
- कार्यक्रम सिर्फ सेवारत कर्मियों के लिए।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम पांच दिन का, छठे दिन टेस्ट और सर्टीफिकेशन।
- पर्यटन मंत्रालय प्रायोजित होटल मैनेजमेंट संस्थान और फूड क्राफ्ट संस्थान (कुल 45) कार्यक्रम संचालन के लिए प्राधिकृत।
- वेतन क्षतिपूर्ति के लिए रू. 300/– प्रति प्रशिक्षणार्थी प्रति दिन देय ।

स्ट्रीट फूड वेंडर्स का कौशल सत्यापन

देश में स्ट्रीट वेंडर्स की संख्या के संबंध में कोई आधिकारिक व्यापक सर्वेक्षण नहीं हुआ है। तो भी मोटे तौर पर अनुमान लगाया जा सकता है कि यह संख्या एक करोड़ के आस-पास हो सकती है और इसका एक बड़ा हिस्सा फूड वेंडर्स हो सकते हैं। इस तरह देश के मानव संसाधन का खासा हिस्सा फूड वेंडिंग के काम में लगा है और जरूरत है कि यह भी देश के अपेक्षित आर्थिक विकास में भागीदार हो कर आगे बढ़े।

स्ट्रीट फूड वेंडर्स देश के कोने-कोने में उपस्थित हैं, फिर भी वे अलग-थलग पड़े हुए सेवा कर्मी हैं। बना-बनाया भोजन बेचने वालों की श्रेणी में वे सबसे नीचे हैं। विडंबना है कि समाज में सांस्कृतिक संपर्क सूत्र की उनकी स्थिति के बावजूद उनको हेय दृष्टि से देखा जाता है।

पर्यटन मंत्रालय इस तथ्य से सतत जागरूक है कि फूड वेंडर्स हमारे विविधतापूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के हिस्सा हैं और इस विविधता को बनाये रखने के लिए उनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। मंत्रालय को इस तथ्य की भी जानकारी है कि फूड वेंडर्स ने अपनी विधाओं में यथेष्ठ कौशल अर्जित कर रखा है और जरूरत सिर्फ उसको प्रमाणित करने की है।

पर्यटन मंत्रालय यह भी जानता है कि वेंडर्स को बडी संख्या में प्रशिक्षित करने के लिए किसी ऐसी संस्था से भागीदारी करनी होगी जो वेंडर्स के लिए काम करती हो, उनसे जुड़ी हो।

अंततः मंत्रालय ने न्यू एसोसिएशन ऑफ स्ट्रीट वेंडर्स ऑफ इंडिया नाम की एक गैर सरकारी सोसायटी से भागीदारी की। इस सोसायटी से 888 जिला स्तर की इकाइयां जुड़ी हुई हैं और लगभग 5 लाख वेंडर्स इसके सदस्य हैं। इस भागीदारी के अंतर्गत जिला इकाइयां वेंडर्स को प्रशिक्षण के लिए निकटतम होटल संस्थान या फूड क्राफ्ट संस्थान में नामांकित कर सकती हैं। प्रशिक्षण 6 दिन की अवधि का है जिसमें छठा दिन कौशल प्रमाणीकरण के लिए नियत है।

प्रशिक्षण में व्यक्तिगत, व्यावसायिक, पारिवेशिक स्वच्छता पर खास जोर दिया जाता है। रोजमर्रा के व्यवहार और बोलचाल पर भी उतना ही बल दिया जाता है। यह भागीदारी दिसंबर 2014 में शुरू हुई थी और 30 सितंबर, 2015 तक चार हजार से अधिक वेंडर्स के कौशल प्रमाणित किए जा चुके हैं । वर्ष 2015-16 में कुल 12,000 वेंडर्स को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है।

पर्यटन मंत्रालय को इस भागीदारी से बहुत प्रत्याशा है क्योंकि यह कई स्तर पर प्रभावी होगी :

- इससे फूड वेंडर्स कुशल कर्मियों की मुख्य धारा में आ जाएंगे।
- इससे प्रशिक्षित वेंडर्स का आत्म–विश्वास बढ़ेगा।
- इससे वेंडर्स के व्यावसायिक विकास का मार्ग खुलेगा।
- इससे भारतीय पाक कला की विविधता और अद्वितीयता को प्रश्रय और रक्षण मिलेगा।
- इससे सेक्टर में स्वच्छता के प्रति संवेदनशीलता आएगी।

– विजय कुमार
45, वंदना अपार्टमेंट्स
इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन
पटपड़गंज, दिल्ली–110092

"यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गए होते, तो यह समझने में देर नहीं लगती कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कट कर दूर हो गई है । हम अपनी जनता से अलग हो गए हैं, जाति के सर्वश्रेष्ठ विभागों का विकास रूक गया है और जो विचार हमें अंग्रेजी के माध्यम से मिले, उन्हें हम जनता में फैलाने में नाकामयाब रहे हैं । जो विरासत हमें अपने-अपने बाप-दादा से हासिल हुई, उसके आधार पर नवनिर्माण करने के बदले हमने उस विरासत को भूलना सीखा है । इस दुर्गति की मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं है । यह तो राष्ट्रीय शोक का विषय है । आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़े और हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें ।"

-महात्मा गांधी

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर

एक परिचय

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, जो भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय का एक स्वायत्तशासी संगठन है, देश में पर्यटन, यात्रा एवं संबद्ध क्षेत्रों में शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान अध्ययन और व्यावसायिक परामर्श प्रदान करने वाले प्रमुख संस्थानों में से एक है । देश को श्रेष्ठतम स्तर के परिणाम तथा सेवायें प्रदान करने हेतु व्यावसायिक रूप से निपुण व्यक्तियों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर 18 जनवरी 1983 को नई दिल्ली में भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान की स्थापना की गई । यह संस्थान पर्यटन के क्षेत्र में उच्चतर अध्ययन तथा विविध प्रकार के व्यक्तियों में इसके व्यापक प्रसार के लक्ष्य के प्रति समर्पित है। विगत वर्षों में संस्थान ने अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर देश में संबंधित क्षेत्रीय व्यावसायिक अध्ययन केन्द्रों में अधिकारपूर्ण स्थिति अर्जित की है। पर्यटन उद्योग में बदलती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति को केन्द्र बिंदु में बनाये रखने के लिए इस संस्थान ने पर्यटन शिक्षा के प्रसार एवं व्यावसायीकरण में अग्रणी भूमिका अदा की है।

इस संस्थान के प्रबंधन का दायित्व अधिशासी मण्डल पर है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय पर्यटन मंत्री होते हैं। देश में पर्यटन शिक्षा तथा प्रशिक्षण के लिए वर्तमान में विद्यमान आधारभूत ढांचा विकसित करने में संस्थान के प्रयास निर्णायक रहे

हैं। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों तथा राज्य सरकारों और सार्वजनिक क्षेत्रों के संगठनों द्वारा इस संस्थान को टूरिस्ट गाईड प्रशिक्षण सहित एम.डी.पी–क्षमता विकास कार्यक्रमों के संचालन हेतु चुना गया है। संस्थान का मुख्यालय ग्वालियर में है तथा भुवनेश्वर, नोएडा/दिल्ली तथा नैलोर में इसके केन्द्र हैं। राष्ट्रीय जल क्रीड़ा संस्थान, गोवा भी इस संस्थान के संरक्षण में है एवं संस्थान के केन्द्र की भांति ही संचालित है।

यह बहु–उद्देशीय परिसर संस्थान, पर्यटन तथा संबंधित क्षेत्रों/सेवाओं तथा क्षमता विकास हेतु कई विस्तार कार्यक्रमों के साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में विभिन्न कार्यक्रमों हेतु अवसर प्रदान करता है। संस्थान के अध्यापक भी शैक्षणिक अनुसंधान तथा परामर्श कार्यों में सम्मिलित हैं। शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने के लिए परिसरों में अत्यंत आधुनिक एवं उन्नत अधोसंरचना विद्यमान है। यह संस्थान अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई.) द्वारा प्रायोजित तथा ग्वालियर परिसर में स्थित ई.डी सेल के माध्यम से पर्यटन उद्यम से जुड़ा है।

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ने एशिया–पैसिफिक क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। एशिया पैसिफिक हेतु संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यू.ने.स.के.प.) द्वारा प्रोत्साहित पर्यटन में एशिया पैसिफिक प्रशिक्षण संस्थानों (ए.पी.ई.टी.आई.टी.) के नेटवर्क को स्थापित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ने व्यापक रूप से अपनी इस स्थिति का उपयोग अन्य सदस्य संस्थानों के साथ संकाय तथा छात्रों के आदान–प्रदान के माध्यम से सर्वसामान्य हित के क्षेत्र में सहकारी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने, विकसित करने तथा सुगम बनाने के लिए किया है। प्रारम्भ से ही संस्थान संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ.) व पाटा (पेसिफिक एशिया ट्रेवल एसोसिएशन) का एक सहयोगी सदस्य है। विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रख्यात प्राध्यापक तथा प्रतिष्ठित विद्वान केवल व्याख्यान प्रदान करने हेतु ही नहीं अपितु कार्यशालाओं, सेमिनारों तथा अन्य विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता करने के लिए संस्थान में नियमित रूप से आते रहे हैं। अभी हाल ही में संस्थान के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किये गये हैं, जिनमें प्रमुख हैं–एल.पी.यू (लाइसम ऑफ द फिलीपिंस यूनिवर्सिटी) मनीला, यू.ईटी. मिलान–इटली।

दृष्टिकोण

कर्तव्यनिष्ठ और विश्वसनीय मानव संसाधन के बीच जीवन शैली के रूप में उत्कृष्टता के प्रति वचनबद्धता के साथ सामाजिक रूप से संवेदनशील वैश्विक संस्थान तथा स्थानीय राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को, जिनसे भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान संबंधित है, जानकारी प्रदान करने तथा लाभान्वित करने हेतु गतिविधियों तथा योग्यताओं पर ध्यान केन्द्रित करना है।

विशिष्ट उद्देश्य

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान का विशिष्ट उद्देश्य पर्यटन तथा सम्बद्ध सेवाओं के लिये पर्यटन कार्यों में सुधार तथा उच्च गुणवत्ता युक्त मानव संसाधनों को विकसित करने में सहायता प्रदान करना है। इसके शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा लक्षित वर्ग का विस्तार अर्थव्यवस्था के संगठित क्षेत्रों की सीमा से परे है।

लक्ष्य

संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए हैंः–

- छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के साथ व्यावसायिक एवं व्यवस्थात्मक श्रेष्ठता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा नैतिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।
- ज्ञान को प्रोत्साहित करने हेतु विकास मार्ग सृजित करना तथा सीखने के अवसरों का विकास करना।
- पर्यटन शिक्षा व्यावसायीकरण को सुगम बनाने के लिए भारत तथा विदेशों के शीर्ष संस्थानों के साथ सहभागिता करना, उद्योग जगत, वाणिज्य एवं अन्य संस्थानों के साथ उद्यमी भागीदारी स्थापित करना, जो समाज के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी तथा उत्पादक हैं।
- अद्यतन तकनीकों के साथ विशेष रूप से तैयार सहभागियों को प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करना तथा उनके निर्णय लेने की योग्यता को विकसित करना एवं साथ ही उत्पादकता, नई तकनीक एवं परिवर्तन के प्रति सजग रहते हुए श्रेष्ठतम मूल्यों तथा अन्य मूल्यों पर अंतदृष्टि के साथ ध्यान केन्द्रित करने हेतु उन्हें एक दृढ़ कार्यविधि अपनाने हेतु विकसित करना ।
- विश्वस्तरीय वैज्ञानिक अनुसंधान का विकास करना तथा उनको उनके अस्तित्व में बनाए रखना, छात्रों में उन मूल्यों का प्रोत्साहन जिनमें उनको श्रेष्ठ होने की आवश्यकता है, साथ ही यह सुनिश्चित करना कि वे कार्य क्षेत्र में प्रवेश के लिए पूरी तरह सुसज्जित हैं।
- छात्रों को स्वयं के लिए एक सफल कैरियर का निर्माण करने के योग्य बनाना तथा अर्थव्यवस्था के बदलते परिदृश्य तथा इसके सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के साथ उनको जोड़ना।

- पर्यटन से संबंधित विषयों में स्नातक/स्नातकोत्तर छात्रों/उद्योग जगत के व्यावसायिक निपुण व्यक्तियों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना।
- व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित मानव-शक्ति हेतु पर्यटन एवं यात्रा उद्योग की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना।
- शैक्षणिक कार्यक्रमों का संचालन करना तथा पर्यटन एवं यात्रा के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययनों, व्याख्यानों, सेमिनारों, लघु सम्मेलन इत्यादि आयोजित करना।
- पर्यटन उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर निरंतर शैक्षणिक अवसर तथा सुविधाएं उपलब्ध करना।
- पर्यटन में पाठ्यक्रमों के एकरूप एवं पर्याप्त मानकों को विकसित करने हेतु शैक्षणिक प्रशिक्षण संस्थानों को मार्गदर्शन तथा निर्देश प्रदान करना।
- देश में पर्यटन को बढ़ावा देने एवं उसके विकास हेतु परामर्श/सुझाव देना।

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान के केन्द्र

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान बहु केन्द्रीय संस्थान है। देश में पर्यटन शिक्षण के प्रसार के उद्देश्य को पूरा करने हेतु भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ने देश के मध्य, उत्तर, पूर्वी-उत्तर तथा दक्षिण क्षेत्रों में केन्द्र स्थापित किये हैं। संस्थान का मुख्य परिसर अर्थात् मुख्यालय सन् 1992 में ग्वालियर में स्थापित किया गया था तथा समय-समय पर अन्य केन्द्रों की स्थापना की गई। भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान भुवनेश्वर सन् 1996 में, भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान नोएडा सन् 2007 में तथा भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान नैल्लोर सन् 2011 में स्थापित हुआ। राष्ट्रीय जल क्रीड़ा संस्थान, गोवा को सन 2004 में भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान केन्द्र के रूप में समायोजित किया गया। भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान के सभी केन्द्र पर्यटन उद्योग में विभिन्न हितधारकों हेतु क्षमता विकास कार्यक्रम में शामिल है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

दिनांक 28 मई 2015 को भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक मध्य प्रदेश में एक एम.ओ.यू.

हस्ताक्षरित किया गया। समझौते के अनुसार भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ग्वालियर व नोएडा, भुवनेश्वर तथा नैल्लोर केन्द्रों में सत्र 2015–16 एवं 2016–17 के लिए पूर्णकालीन द्वि–वर्षीय पीजीडीएम पाठ्यक्रमों के स्थान पर निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का संचालन आई.जी.एन.टी.यू. अमरकंटक के सहयोग से किए जाने का निर्णय लिया गया हैः

पाठ्यक्रम का नामः– ''एम.बी.ए. (पर्यटन)'' द्वि–वर्षीय पूर्णकालिक

भारतीय पर्यटन व यात्रा प्रबंध संस्थान के केन्द्र व विशेषज्ञता विषय नीचे दिए गए हैं:–

- ग्वालियर तथा भुवनेश्वर में ''यात्रा एवं पर्यटन''
- ग्वालियर तथा भुवनेश्वर में ''अंतर्राष्ट्रीय व्यापार'' (पर्यटन)
- ग्वालियर तथा भुवनेश्वर में ''अंतर्राष्ट्रीय व्यापार'' (पर्यटन व लाजिस्टिक)
- नोएडा में ''पर्यटन एवं लेजर''
- ग्वालियर में ''सेवाएं'' (पर्यटन)
- नैल्लोर में (पर्यटन एवं कार्गो)

– डॉ. संदीप कुलश्रेष्ठ
निदेशक
भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

पर्यटन मंत्रालय की नई योजनाएं

बजट घोषणा 2014–15 के अनुपालन में पर्यटन मंत्रालय ने विशिष्ट थीमों के आस-पास पर्यटक परिपथों के एकीकृत विकास के लिए स्वदेश दर्शन और सभी धर्मों के तीर्थस्थल केंद्रों पर सुविधाओं और अवसंरचना में सुधार और सौंदर्यीकरण के लिए तीर्थस्थल जीर्णोद्धार और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान (प्रसाद) पर राष्ट्रीय मिशन नामक दो नई योजनाएं भी लांच की हैं ।

'स्वदेश दर्शन' योजना के अंतर्गत विकास के लिए, 12 थीम आधारित परिपथों यथा पूर्वोत्तर परिपथ, बौद्ध परिपथ, हिमालयन परिपथ, तटवर्ती परिपथ, कृष्णा परिपथ, मरूस्थल परिपथ, जनजातीय परिपथ, ईको परिपथ, वन्य-जीव परिपथ, ग्रामीण परिपथ, आध्यात्मिक परिपथ और रामायण परिपथ की पहचान की गई है ।

'प्रसाद' योजना के अंतर्गत 13 शहरों नामतः अजमेर, अमृतसर, अमरावती, द्वारका, गया केदारनाथ, कामाख्या, कांचीपुरम, मथुरा, पुरी, वाराणसी, वेलानकन्नी और पटना की पहचान की गई है ।

मार्केट अनुसंधान प्रभाग

– नेहा श्रीवास्तव

देश में पर्यटन को विकसित करने के लिए कार्यक्रमों एवं नीतियों को तैयार करने में पर्यटन से संबंधित आंकड़ों की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। पर्यटन के क्षेत्र में सामयिक एवं विश्वसनीय आंकड़ों को उपलब्ध कराने की दृष्टि से मंत्रालय में मार्केट अनुसंधान प्रभाग की स्थापना की गई है। वर्तमान में इस प्रभाग में भारतीय सांख्यिकी सेवा के एक अपर महानिदेशक, एक संयुक्त निदेशक, एक उप निदेशक, 4 सहायक निदेशक एवं ईडीपी सेवा के 2 डाटा प्रोसेसिंग असिस्टेंट और 2 डाटा एंट्री ऑपरेटर कार्यरत हैं। यह प्रभाग भारत में अंतर्गामी, बहिर्गामी एवं घरेलू पर्यटन के विभिन्न पहलुओं पर आंकड़ों एवं सूचना के संचयन, संकलन एवं प्रसार के लिए उत्तरदायी है। प्रभाग द्वारा संकलित प्रमुख आंकड़ों में विदेशी पर्यटक आगमन, पर्यटन से अर्जित विदेशी मुद्रा के माहवार आंकड़े, विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों द्वारा देश में की गई यात्राओं, बहिर्गामी भारतीय राष्ट्रिकों के वर्ष–वार आंकड़े शामिल हैं।

देश के सकल घरेलू उत्पाद एवं रोजगार क्षेत्र में पर्यटन के योगदान का आकलन करने के लिए यह प्रभाग हर पांच वर्ष पर पर्यटन सैटेलाइट अकाउंट तैयार कराता है। विभिन्न राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय पर्यटन सैटेलाइट अकाउंट्स बनाने की पहल भी इस प्रभाग ने की है। पर्यटन सैटेलाइट अकाउंट्स विश्व के कुछ चुनिंदा देश ही तैयार करते हैं जिनमें भारत भी एक है। इसके अलावा, यह प्रभाग अंतर्राष्ट्रीय एवं घरेलू पर्यटकों, उनके व्यय के स्वरूप, पर्यटक प्रोफाइल, संतुष्टि स्तर एवं प्राथमिकताओं इत्यादि के लिए आवधिक सर्वेक्षण और होटल के कमरों एवं पर्यटन के क्षेत्र में मानव संसाधन की आवश्यकता आदि के आकलन के लिए आवश्यकता के अनुसार सर्वेक्षण करवाता है।

राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों को भी मास्टर प्लान, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट एवं पर्यटन संबंधी सर्वेक्षण एवं अध्ययन करने के लिए वित्तीय सहायता एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करना इस प्रभाग का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रभाग द्वारा वार्षिक रूप से दो प्रकाशन 'भारतीय पर्यटक आंकड़े' एवं 'भारतीय पर्यटन आंकड़े–एक झलक' निकाले जाते हैं जिनमें पर्यटन संबंधी समस्त महत्वपूर्ण आंकड़ों का समावेश होता है।

प्रभाग द्वारा किए गए कार्यों से न केवल नीति निर्माताओं, प्रशासकों, अनुसंधानकर्ताओं के लिए अपितु पर्यटन उद्योग से सरोकार रखने वाले लोगों के लिए भी उपयोगी जानकारी जनित होती है जिससे उचित निर्णय लेने में सक्षमता मिलती है।

– नेहा श्रीवास्तव
उप–निदेशक
पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

नवकलेवर

– सुनील कुमार

नवकलेवर अधिकांश जगन्नाथ मंदिरों से जुड़ा एक प्राचीन उत्सव है। नवकलेवर = नव+कलेवर, अर्थात पुराना शरीर त्यागकर नया शरीर धारण करना है। नवकलेवर के समय विश्वविख्यात पुरी के श्री मंदिर में स्थापित भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और भगवान सुदर्शन की पुरानी मूर्तियों को नई मूर्तियों से बदला जाता है। शास्त्र एवं परंपरा के अनुसार इन मूर्तियों को बदला जाता है क्योंकि उन्हें एक अवधि बीत जाने के बाद बदला जाना होता है। काष्ठ के शरीर में 'ब्रह्म शक्ति' अर्थात ब्रह्म पदार्थ को रहस्यमयी अनुष्ठान के जरिये पुरानी मूर्ति से नई मूर्ति में स्थानांतरित किया जाता है।

नवकलेवर का आयोजन तब होता है, जब हिंदू कैलेंडर में आषाढ़ के दो महीने होते हैं, जैसा कि 19 साल के बाद वर्ष 2015 में हुआ । यह प्रायः 12 वर्ष बाद या 19 वर्ष बाद आता है । इसके पूर्व नवकलेवर 1733, 1744, 1752, 1771, 1790, 1809, 1828, 1836, 1855, 1874, 1893, 1912, 1931, 1950, 1969, 1977 और 1996 में हुआ था। भगवान की नई मूर्तियां नीम की विशेष किस्म की लकड़ी से बनाई जाती है, इसे स्थानीय भाषा में **दारु ब्रह्म** कहते हैं। इसके लिए चैत्र महीने के शुक्ल दशमी तिथि से **वनजाग यात्रा** प्रारंभ होती है, जो रथ यात्रा के बाद **नीलाद्रि विजय** के साथ समाप्त होती है।

दारु ब्रह्म को पहचाने की प्रक्रिया की शुरुआत जगन्नाथ को दोपहर का भोग लगाने के बाद होती है। वृक्षों की खोज पर निकला दल यात्रा के दौरान पुरी के पूर्व राजा (गजपति) के महल में रुकता है, जो भगवान के प्रधान सेवक हैं। वे उनसे चारों देवताओं के विग्रह के लिए उपयुक्त आकार, लक्षण व संकेतों वाले दारु ब्रह्म खोजने की यात्रा शुरु करने की अनुमति प्राप्त करते हैं। राजा उनको राजगुरु की उपस्थिति में नारियल, पान और सुपारी एवं पगड़ी देकर यात्रा की अनुमति प्रदान करता है। दैतापति यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि वे दारु बह्म लिए बिना वापस नहीं लौटेंगे। भगवान व उनके भाई–बहनों के लिए विशेष तौर पर 12 फुट की माला, जिसे **धन्व माला** कहते हैं, तैयार की जाती है। पूजा के बाद यह माला 'पति महापात्र' परिवार को सौंप दी जाती है, जो पुरी से 50 किलोमीटर दूर स्थित काकटपुर तक मूर्तियों के लिए लकड़ी खोजने वाले दल की अगुआई करते हैं। श्री विग्रहों के निर्माण में नीम की लकड़ी का उपयोग किया जाता है। किंतु कौन सा नीम का पेड़ उपयोग में लाया जाएगा यह पुरी के दैतापतियों द्वारा चयन किया जाता है। यह दल दारु ब्रह्म मिलने तक देउली मठ में रुकते हैं, जहां वे भगवान की आराधना, भजन और कीर्त्तन करते हैं।

काकटपुर में मां मगला देवी के मंदिर पहुंचकर वे देवी मां से प्रार्थना करते है कि उन्हें दारू की निर्दिष्ट और सही दिशा स्वप्न में बतावें। इसके लिए आचार्य राजगुरू तथा पति महापात्र को सोने से पहले 108 बार स्वप्नावति मंत्र का जाप करते हैं। सबसे बड़ा दैतापति (सेवक) मंदिर में ही सोता है और माना जाता है कि देवी उसके सपने में आकर उन नीम के वृक्षों की सही जगह की जानकारी देती हैं, जिनसे चारों मूर्तियां बननी हैं। स्वप्नानुसार वनजाग यात्रा चार दल में विभक्त होकर दारू (लकड़ी चयन) के लिए निकल पड़ते है।

कभी-कभी मां मंगला की माला जिस दिशा में पड़ती है, उसी दिशा में दारू प्राप्त होने की सूचना माना जाता है। ये कोई साधारण नीम के वृक्ष नहीं होते, इनमें खास लक्षण होते हैं। चूंकि भगवान जगन्नाथ का रंग सांवला है, इसलिए जिस वृक्ष से उनकी मूर्ति बनाई जाएगी, वह भी उसी रंग का होना चाहिए। जबकि भगवान जगन्नाथ के भाई-बहन का रंग गोरा है इसलिए उनकी मूर्तियों के लिए हल्के रंग का नीम का वृक्ष ढूंढा जाता है जिस वृक्ष से भगवान जगन्नाथ की मूर्ति बनाई जाएगी, उसकी कुछ खास पहचान होती है, जैसाकि

- उसमें चार प्रमुख शाखाएं होनी जरूरी हैं, जो नारायण की चार भुजाओं की प्रतीक होती हैं ।
- पेड़ का रंग काला या गाढ़ा लाल रंग का होना आवश्यक है।
- पेड़ का तना सीधा व सुंदर होने के साथ ही इसकी ऊंचाई सात हाथ से बारह हाथ होनी चाहिए।
- पेड़ के तने में विष्णु के अस्त्र, शंख चक्र, गदा, चिह्न उभरे हुए नजर आए।
- वृक्ष के समीप ही जलाशय, 'मशान और चीटियों की बांबी हो यह बहुत जरूरी होता है।
- वृक्ष की जड़ में सांप का बिल होना चाहिए और वृक्ष की कोई भी शाखा टूटी या कटी हुई नहीं होनी चाहिए।
- उस वृक्ष पर कभी कोई लता नहीं उगी हो और उसके नजदीक ही वरुण, सहादा और बेल के वृक्ष हों (ये वृक्ष बहुत आम नहीं होते हैं और चिहि्नत नीम के वृक्ष के नजदीक शमशान रहता है और पास में मंदिर होना चाहिए।
- तूफान या बिजली से एक भी डाली नष्ट नहीं हुई हो, पेड़ की जड़ में दीमक का ढेर रहता है, पेड़ को सांप पहरा देते हो।

- आसपास में मठ, मंदिर, आश्रम के अलावा, वृक्ष के सामने नदी तालाब या तीन राहों का मिलन स्थल अथवा इसे तीन पहाड़ घेरे हुए होंगे तभी महाप्रभु के दारु का चयन किया जाएगा ।

इसी तरह बलभद्र जी के दारू के

- पेड़ का रंग श्वेत होना चाहिए इसमें न्यूनतम सात शाखाएं होनी चाहिए।
- पेड़ का ऊपरी भाग सांप के फन जैसा दिखे।
- बलराम का अस्त्र हल लंगल का संकेत हो।

देवी सुभद्रा के दारू के

- पेड़ का रंग पीला होना चाहिए इसमें न्यूनतम पाँच शाखाएं होनी चाहिए।
- इसमें पांच पंखड़ियों वाले कमल का निशान होना चाहिए।

सुदर्शन के दारू के

- पेड़ का रंग लाल होना चाहिए। इसमें तीन मुख्य शाखाएं होनी चाहिए।
- पेड़ के किसी भाग पर चक्र का निशान होना चाहिए।
- पेड़ के मध्य में डिप्रेशन होना चाहिए ।

मूर्तियों के लिए नीम के वृक्षों की पहचान करने के बाद उनकी पूजा की जाती है और सफेद वस्त्रों से उनको ढका जाता है। एक शुभ मुहूर्त्त में मंत्रों के उच्चारण के बीच उन्हें काटा जाता है। इसके बाद इन वृक्षों की लकड़ियों को रथों पर रखकर दैतापति जगन्नाथ मंदिर लाते हैं। मंदिर में कोइली बैकुंठ के नजदीक बनाए गए अस्थायी निर्माण मंडप (अस्थायी यज्ञ मंडप) में उन्हें तराशकर मूर्तियां बनाई जाती हैं।

मूर्तियां बदलने का यह समारोह मशहूर रथ यात्रा से तीन दिन पहले होता है, जब 'ब्रह्म' या पिंड को पुरानी मूर्तियों से निकालकर नई मूर्तियों में स्थानांतरित किया जाता है। मूर्तियां बदलना इतना आसान नहीं है और इसके लिए कड़े नियम होते हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य है। नियमानुसार मूर्तियां बदलने के लिए चुने गए दैतापतियों की आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है, पिंड बदलने से पहले उनके हाथ कपड़े से बांध दिए जाते हैं और लकड़ी की खोज शुरू होने के पहले ही दिन से उन्हें बाल कटवाने, दाढ़ी बनाने या मूंछ कटाने की अनुमति नहीं होती है।

मध्यरात्रि में दैतापति अपने कंधों पर पुरानी मूर्तियां लेकर जाते हैं और भोर से पहले उन्हें समाधिस्थ कर दिया जाता है। यह ऐसी रस्म है, जिसे कोई देख नहीं सकता और अगर कोई देख ले तो उसका मरना तय माना जाता है। इसी वजह से राज्य सरकार के आदेशानुसार इस रस्म के दौरान पूरे शहर की बिजली बंद कर दी जाती है। अगले दिन नई मूर्तियां नवजोवन दर्शन के लिए रखी जाती हैं। एक दिन के बाद रथ यात्रा करेंगे। रथ यात्रा के बाद गुंडीचा मंदिर जाएंगे और आढप मंडप (जन्म स्थल पर) में विजय करेंगे और 9 दिन तक वहां ठहरेंगे। यह मान्यता हे कि जो एकबार आढ़प मंडप पर भगवान जगन्नाथ जी का दर्शन कर लेता है, वह जन्म मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है .....।

– सुनील कुमार
182, डीडीए (एम आई जी) फ्लैट्स
पॉकेट–बी, फेज–II, कौटिल्य अपार्टमेंट,
सेक्टर–14, द्वारका, नई दिल्ली–78

पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन का संवर्धन

पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के संवर्धन के लिए भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित पहल की गई हैं:

(i) प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय यात्रा मेलों और प्रदर्शनियों में भारतीय मंडप लगाने के लिए उत्तर-पूर्व राज्यों को मानार्थ स्थान का प्रावधान ।

(ii) मेलों और उत्सवों के आयोजन के लिए उत्तर-पूर्व राज्यों को 100 प्रतिशत केंद्रीय वित्तीय सहायता की अनुमति दी गई है ।

(iii) पर्यटन मंत्रालय अपने चालू क्रियाकलापों के भाग के रूप में पर्यटन क्षमता वाले कम ज्ञात गंतव्यों सहित देश के विभिन्न पर्यटन गंतव्यों और उत्पादों के संवर्धन के लिए प्रतिवर्ष इंक्रेडिबल इंडिया ब्रांड लाइन के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय और स्वदेशी बाजारों में प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक, ऑनलाइन और आउटडोर मीडिया अभियान चलाता है । पर्यटन मंत्रालय क्षेत्र में पर्यटन के संवर्धन के लिए टीवी चैनलों पर पूर्वोत्तर क्षेत्र पर विशेष अभियान चलाता है ।

(iv) स्वदेशी और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उत्तर-पूर्व क्षेत्र की आमतौर पर अप्रयुक्त पर्यटन क्षमता को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट (आईटीएम) प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है । अब तक पर्यटन मंत्रालय ने पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल के सहयोग से उत्तर-पूर्व क्षेत्र में चार अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट (आईटीएम) आयोजित किए हैं ।

काशी एक अनुभव

– मृत्युंजय मिश्र

जब–जब बनारस का नाम हमारे जेहन में आता है बनारसी मौज मस्ती, अक्खड़पन और फक्कड़पन के साथ ऐसी आंतरिक ऊष्मा का संचार हो जाता है, जो सभी को अपना बना लेती है सभी को कुछ न कुछ दे देती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शिव के त्रिशूल पर बसी ब्रह्मा की सबसे पहली नगरी काशी पुरातन काल से लेकर आज तक चर्चा का विषय थी और चर्चा का विषय है। इस नगरी के संपूर्ण ज्ञान का बखान बड़े–बड़े योगी, बड़े–बड़े महात्मा आदि नहीं कर सकते तो आम आदमी की क्या बिसात। काशी में चार साल में मुझे जो कुछ अनुभव हुआ, उसका मात्र एक संक्षिप्त विवरण दे रहा हूं। एक लुप्त होती संस्कृति का आंखों देखा अनुभव बता रहा हूं। मंदिरों की इस नगरी में जहां नये खूबसूरत मंदिर बनते जा रहे हैं, तो वहीं पुराने मंदिर भी पुराने और क्षीण होते जा रहे हैं।

आधुनिक इतिहास में गंगा के तट पर बसी इस नगरी की प्राचीनता की तुलना विश्व के अन्य प्राचीनतम नगरों जैसे जेरूशलम, रोम, एथेन्स एवं पीकिंग से की गई है। शिव की नगरी एंव बुद्ध की उपदेश स्थली होने के साथ–साथ यह चार जैन तीर्थकरों की जन्मस्थली भी रही है। ऐसा नहीं कि काशी में सिर्फ शिव की ही पूजा होती है, हिंदू धर्म के चार अन्य प्रमुख देवताओं सूर्य, विष्णु, गणेश एवं लक्ष्मी जी की उपासना भी प्रायः हर घर में होती है।

वाराणसी के नाम के संदर्भ में अनेक धारणाएं प्रचलित हैं पुराणों के अनुसार दक्षिणोत्तर में 'वरूणा' एवं पूर्व में 'असी' की सीमा से मिलने के कारण इस नगर का नाम वाराणसी बना। यद्यपि जाने–माने इतिहासकार श्री मोती चंद्र वाराणसी के संदर्भ में वरूणा और असी की संगति की अवधारणा को काल्पनिक मानते हैं। यह भी संभव है कि असी तक वाराणसी नगर का विस्तार होने के कारण ही इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा हो। हालांकि, जाने माने मठाधीश यह भी कहते हैं कि पार्वती जी के मुक्तामय कुण्डल गिर जाने के कारण इसको मुक्ति क्षेत्र की संज्ञा दी गई हो। कारण जो भी रहा हो यह सच है कि काशी का हर पल मन को मोहने वाला है चाहे वह नौका पर बैठकर गंगा में चप्पू की आवाज को सुनना या सुबह–शाम बनारस के मंदिरों में घण्टों की आवाज को सुनना या भक्तजनों के मुख से दोहे, संगीत या भक्ति के गीत की आवाज को सुनना एक नए वातावरण को आगाज देता है। ऐसा लगता है कि यदि स्वर्ग कहीं हैं तो देवताओं ने भी इसकी परिकल्पना यहीं से ली होगी। बनारस आदि काल से लेकर आज तक भक्ति मार्ग का सबसे बडा केंद्र रहा है।

अकेले रहने के कारण शाम होते ही मैं केदारघाट की सीढ़ियों पर बैठकर बनारस का आनंद लिया करता था। कई ऐसी बातें हैं, जो मुझे रोमांच से भर देती थी जैसे अर्धरात्रि के पूर्व तमाम सन्यासियों या योगियों का घाटों पर दौड़ लगाना, उनका व्यायाम करना। भोर के प्रथम प्रहर में गंगा स्नान करना, समाधि लगाना या हरिश्चन्द्र घाट पर मसान पूजा करना और तांत्रिक शक्तियों का उपार्जन करना आदि एक सामान्य बात है। तंग गलियों के बीच छोटे-छोटे तमाम मंदिरों के बीच बैठा हुआ मानव अपनी ही साधना में लीन रहता है।

आधुनिक बनारस आज भी देश के करोड़पति, अरबपति, नगर सेठ एवं विद्वानों से भरी नगरी है, लेकिन अभिमान यहां किसी भी वर्ग में न के बराबर है। सुबह गमछा बांधे हुए गंगा में स्नान करना और लौटते वक्त वहीं पर साग सब्जी का मोल भाव करते देखना कभी कभी लगता है कि ये सब कैसे अपने व्यवसाय की गद्दी पर बैठते होंगे तो कैसे करोड़ों का व्यापार करते होंगे। पर ये मूलतः बाबा की नगरी है जोकि आनंद त्याग का परिचय देती है आम आदमी भी इससे अछूता नहीं है, इस अजीबो गरीब नगरी में आज भी कोई भूखा नहीं सोता है, काल भैरव के रहते किसी को सुरक्षा का कोई खतरा नहीं रहता। मैंने ऐसा नहीं पाया कि कोई भी प्रशासनिक अधिकारी यहां स्थानान्तरण पर आया हो और उसने सबसे पहले बाबा विश्वनाथ के मंदिर में और फिर काल भैरव के मंदिर में अपनी हाजिरी न लगाई हो। प्राचीन काल से विभिन्न राज्यों के सम्राट, जागीरदार और आम आदमी इसकी सांस्कृतिक विरासत को देखने हेतु यहां बस गए। यहां के विभिन्न घाट शायद हर राज्य की कहानी कहते हैं। इतना नहीं उनकी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु यहां पर लौहोरी टोला, कश्मीरी गंज, बंगाली टोला अपने अपने राज्य की संस्कृति से परिचय कराते हैं।

कबीर चौरा पर कबीर दास, पंचगंगा में रामदास, गोपाल मंदिर में तुलसीदास रहते ही थे लेकिन जो भी यहां पर आए चाहे वे ज्ञान प्राप्त करने के लिए या मुक्ति मार्ग के लिए सभी ने काशी का विकास ही किया। काशी से हर व्यक्ति को चाहे कोई जाना पहचाना नाम हो या आम आदमी सभी को गंगा से असीम प्यार रहा है। भारत रत्न स्वर्गीय श्री बिस्मिल्लाह खां जी यही कहते थे कि उन्हें गंगा से असीम प्यार मिला। पदम विभूषण श्री छन्नुमल मिश्र जी को जब भारत पर्यटन कार्यालय के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया तो उन्होंने भी जन समुदाय के आगे अपने अनुभवों को साझा करते हुए यह बात कही कि अमेरिका जाने का मौका उन्हें कई बार मिला पर गंगा मैया से दूर जाने का उनका मन ही नहीं करता। काशी नरेश सादगी का एक और नाम है, जो कभी शंकराचार्य के चरणों में तो कभी मंदिरों में कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते नजर आते हैं। साल में यद्यपि 365 दिन होते हैं लेकिन बनारस में यह गिनती शायद उत्सवों के मामले में गलत हो जाती है रोज कोई न कोई उत्सव और एक दिन में तीन-तीन संप्रदायों के उत्सव भी होते हैं। कई उत्सवों का प्रारंभ काशी से ही हुआ हो और सभी अपने अपने देवताओं या कुलदेवताओं को प्रसन्न

करने के लिए उनके साथ आनंद विभोर हो रहे हों। प्रसिद्ध उत्सव जो कि दर्शकों को आत्मविभोर कर देते हैं और देशी व विदेशी पर्यटकों के बीच चर्चा का विषय बने रहते हैं प्रमुख हैं देव दीपावली, बुडवा मंगल एंव संगीत संध्या जोकि संकटमोचन मंदिर के प्रांगण में या गणेश चतुर्थी के दिन चिंतामणि गणेश मंदिर में देश–विदेश के कलाकारों के द्वारा अपनी प्रस्तुति देना, आम आदमी के मन को आत्मविभोर कर देती है और वैसे भी जिस चीज के आगे बनारसी हो वह अपने आप में महत्त्वपूर्ण हो जाती है चाहे वो बनारसी साड़ी हो, इक्का हो, पंडा हो, पान हो या गमछा सभी अनुपम हैं। बनारसी कहीं भी गया इन सभी का अपने अंदर समावेश कर के गया। बेढब जी ने एक बार बनारस के लिए खूब कहा 'सुना है खूब रंगरलियां मिलेंगी, न ही दुनिया की बेकलियां मिलेंगी मगर मरने पर बेढब स्वर्ग में भी बनारस की गलियां कहां मिलेंगी'। यद्यपि लोग यहां की तुलना कभी–कभी वेनिस से कर देते हैं परंतु जनाब वेनिस में भी वह अपनत्व कहां जो बनारस की गलियों के कोने में कचोड़ी या पान खाने में या लस्सी पीने में है। यही वो गलियां हैं जो इतिहास के सर्वोच्च शिखर पर बैठे हुए शंकराचार्य, रामानन्द, बल्लभाचार्य, कबीर, तुलसी, दारा शिकोह, पंडित राज जगन्नाथ, भारतेंदु, सुब्रहमण्यम भारती, मां आनन्दमयी एवं रानी लक्ष्मीबाई और ना जाने कितने अनगिनत पन्नों से परिचय कराती हैं जिनका संपूर्ण विवरण एक लेख में देना असंभव है। धीरे–धीरे जब काशी समय के अभाव के साथ–साथ अपनी चमक–दमक खोती जा रही थी, राजनैतिक परिवर्तन के कारण लगता है दिन अब फिर से अच्छे आने लगे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद मोदी जी के नेतृत्व में पिछले एक साल में कायापलट सी होने लगी है। घाट जो कभी सफाई के लिए तरसते थे अब चमकने लगे हैं। अस्सी घाट पर जहां प्रधानमंत्री ने फावड़ा चलाया था अब एक दर्शनीय स्थल बन गया है। रेलवे स्टेशन जहां से गुजरना कभी मुमकिन नहीं था वहां पर लोग सैर करने आते हैं और अपने भाग्य पर इतराते हैं। सच है कि आने वाले दिनों में काशी फिर से एक बार दुनिया का सबसे बडा सांस्कृतिक केंद्र बनने जा रहा है। अब लगता है सूर्य की प्रथम किरण लोलार कुंड में न आकर संपूर्ण काशी को आनंदमय बना रही है और क्या लिखूं जब भी तन्हाइयों से बात करता हूं तो आम बनारसियों की एक पंक्ति याद आ जाती है–

जिंदा रहे तो लंगडे आम मिलेंगे
मरने पर शिव धाम मिलेंगे ।

– मृत्युंजय मिश्र
सहायक निदेशक
पर्यटन मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

" हिंदुस्तान का दुःख "

– **राज कुमार शर्मा**

15 अगस्त प्रातः 7.15 बजे

गली का एक नुक्कड़ ।

{चारों ओर खड़े प्रत्यक्ष साक्षी, कुछ न कह पाने की मुद्रा में स्तब्धता युक्त आश्चर्य से देख रहे थे। सामने का दृश्य बहुत शर्मनाक था मानो कोई वीभत्स द्वंद हुआ हो। एक मासूम किसान सड़क पर घुटनों के बल झुका हुआ क्षोभ और अपमान की भट्टी में झुलस रहा था। भय से विमूढ़ वह अपने, जगह-जगह से फटे कुर्ते को सुबकता हुआ देख रहा था। उसके सामने चार व्यक्ति नजरें झुकाए किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े थे। वातावरण में अजीब सी निस्तब्ध मौनता व्याप्त थी। केवल किसान की सिसकियां और पान की दुकान पर स्थित टेलीविजन की आवाजें इस भयानक मौनता से अठखेलियां कर रही थीं। सूर्य देव बादलों के पीछे चले गए थे मानो यह दृश्य देखना ही न चाहते हों। पवन शांत थी, पर मन अशांत और हृदयों में कोलाहल------}

यह बस कैसे हुआ ? इस तक हम बाद में पहुंचेगे। आईए कहानी का प्रारम्भ आरम्भ से करें।

गली में पान की दुकान पर जमा करीब 20-25 लोग टेलीविजन पर भारत के प्रधानमंत्री के भाषण का सीधा प्रसारण बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। पान की दुकान से कुछ ही दूर चार व्यक्ति एक चारपाई पर बैठे कुछ पी रहे थे। उनकी हंसी, खिल-खिलाहट एवं बातों से यही प्रतीत हो रहा था कि वे चारों परम मित्र थे।

उनमें से एक थे सरदार हरभजन सिंह। लाल पगड़ी, नुकीली मुछें और ताकतवर शरीर। दूसरे थे मियाँ शुबाबुद्दीन। परम्परागत टोपी, व अचकन पहनें। उनकी विशिष्ट दाढ़ी रह-रह कर लहरा रही थी। तीसरे थे पंडित जगन्नाथ जी। चन्दन से पुते माथे पर पांडित्य की रेखायें, चेहरे पर ब्राह्मणत्व का घमण्ड व सर के मध्य जानी पहचानी बालों की गांठ। चौथे व्यक्ति के चेहरे पर दक्षिण की झलक साफ थी। आधी मुड़ी लुंगी, बालों में नारियल के तेल की चमक व माथे पर गोल सफेद टीका। ये थे रंगास्वामी जी।

आकाश हल्के ऊंचे बादलों से भरा था, हवा रुक-रुक कर चल रही थी। आजादी की भोर, वाकई निर्मल व सुखद थी।

तभी एक किसान वहां पहुंचा। उसके चेहरे से थकावट साफ झलक रही थी। नुक्कड़ पर स्थित नल से उसने थोड़ा पानी पीया, मुंह पोंछा और चारों तरफ देखा और उसकी दृष्टि इन चार मित्रों पर जा कर ठहर गई। कुछ सोच कर वह इनके निकट पहुंचा, थोड़ा हिचकिचाया और बोला-

"बाबू जी .... मैं एक अनपढ़ किसान हूँ। मैंने आज तक अपने देश के लिए अन्न उगाया है। अब मरने से पहले मैं अपना देश देखना चाहता हूँ। तुम सब पढ़े–लिखे हो। कृपया मुझे राह दिखाओ। कहाँ–कहाँ मैं जाऊँ, मुझको तुम बतलाओ।"

सबसे पहले बोले रंगास्वामी जी.... स्वामी ने मधुर स्वर में कहा.... "बस एक ही जगह आएगी तुम्हें रास, मेरी मानो तो चले जाओ सीधे मद्रास'।"

सरदार हरभजन सिंह ने नाक यूँ सिकोड़ी जैसे उसे यह रास न आया हो और बोले कि "ओए चुप्प ओए, मद्रास में कि रक्खा है ? ऐं ? ओ प्राजी तुस्सी जाओ नानक दर .... औ है अमृतसर .... ठीक है।"

"याह अल्लाह ! क्यों बहका रहे हो बेचारे को..... मियाँ बस एक ही जगह है जाने को,.... अजमेर शरीफ। अगर आप वहाँ जाएंगे तो खुदा कसम, सारे गुनाह माफ हो जाएंगे।" मियाँ शुबाबुद्दीन किसान को अपनी ओर खींचते हुए बोले।

यह सुनते ही पंडित जगन्नाथ जी की भृकुटी पर क्रोध के बल पड़ गए। किसान को अपनी ओर घुमा कर ऐसे बोले मानो मन्त्रोच्चारण कर रहे हों।

"मित्रवर ..... ये पंजाब, मद्रास आदि हैं भ्रम। जरा सोचो क्या है तुम्हारा धर्म। भ्रम में मन सदा अशांत होता है शांति वहीं प्राप्त होती है जहां ईश्वर का वास होता है। शांति चाहिए तो जाओ हरि के द्वार, वह है हरिद्वार।"

किसान हक्का–बक्का था। उसकी आँखों में परेशानी का अंधेरा छा गया।

वहां लालकिले पर तालियों की गड़गड़ाहट ऐसे गूँज रही थी, मानों मेघ गरज रहे हों। प्रधानमंत्री के भाषण में देश भक्ति की खुशबू से सभी मंत्रमुग्ध थे। टेलीविजन की स्क्रीन पर प्रधानमंत्री जी सफेद खादी वस्त्रों में साफ चमक रहे थे। वह कह रहे थे ..... "हमें अभी बहुत आगे जाना है .... बहुत सपने पूरे करने हैं। लेकिन इसके लिए धार्मिक सौहार्द्र और एकता अनिवार्य है ....

यहाँ चारों मित्र एक साथ भिड़ रहे थे। रंगास्वामी ने गुस्से में अपने तहमद को ठीक किया और किसान को अपनी ओर आकर्षित करते हुए स्वामी ने कहा .... "हम मद्रासी बिल्कुल सच्चा, हमारा मद्रास सबसे अच्छा।"

यह सुनकर सरदार हरभजन सिंह तमतमा उठे। उन्होंने अपनी मूछों पर हाथ फेरा और किसान को अपनी ओर मोड़ा––– "ओए छड ऐन्नू .... पाप्पा जी मद्रास में नहीं है कोई असर... तुस्सी जाओ अमृतसर... " इस बार शुबाबुद्दीन मियां हैदरअली की तरह मैदान में कूद पड़े और किसान को कुर्ते के कालर से पकड़ लिया और कहा कि –––– "मियां इनकी बातों में न आओ, सीधे अजमेर शरीफ जाओ।"

पंडित जगन्नाथ का चेहरा आवेश से लाल हो गया। उन्होंने किसान पर झपट्टा मारा --

"मित्रवर केवल जाओ हरि के द्वार, वह है हरिद्वार"

चारों की खिंचातानी बढ़ती गयी। धर्म की लड़ाई जोर पकड़ती गयी। बेचारे किसान की हालत बिड़गती गयी।

कभी 'मद्रास'.....

कभी 'पंजाब'.....

कभी 'अजमेर शरीफ'

कभी 'हरिद्वार'

शराब की तरंग में इन मित्रों के भीतर छिपे मतभेद ज्वालामुखी के लावे की तरह बाहर निकल रहे थे और आवेशित एवं उत्तेजित होकर चारों अब ऐसी भाषा बोल रहे थे जिसे समझना असंभव था।... प्रधानमंत्री के भाषण को छोड़ लोग-बाग अब इनके चारों ओर जमा हो गए थे। वहां लाल किले पर प्रधानमंत्री चीख-चीख कर कह रहे थे-

"आज का दिन आजादी का दिन है ... एकता का दिन है। हम सब स्वतंत्र हैं। हम सब भाई-भाई हैं। सभी धर्मों के भगवान सिर्फ यही चाहते हैं कि हम सब प्यार और भाई चारे की राह पर चलें"

यहां चार धर्मों के चार मित्र अपने असली दांत दिखा रहे थे। इस भयानक खिंचातानी में बेचारे किसान का कुर्ता फट चुका था। धर्मों का स्वरूप प्रत्यक्ष था। अचानक किसान जोर से चिल्लाया। उसने बड़ी मुश्किल से अपने को चारों के खतरनाक शिकंजों से छुड़ाया।

थोड़ा लड़खड़ाया और सड़क पर गिर पड़ा। अपने जगह-जगह से फटे कुर्ते को देखा तो रो पड़ा। रोता गया .... रोता गया .... रोता गया.... रोता गया .....। कुछ देर बाद रोते हुये मुंह खोला ---- "बाबू जी .... हम क्या पूछने आये थे, तुमने हमें क्या बता दिया। अब हम क्या घूमें, क्या न घूमें, पूरा हिंदुस्तान तो तुमने मुझे यहीं दिखा दिया ...."

अपने जगह-जगह से फटे कुर्ते को दिखाकर वह वेदना भरे स्वर में बोला ----

''देखो .... देखो''

यह रहा 'मद्रास' ---

यह रहा 'अमृतसर'---

यह 'अजमेर शरीफ'

यह रहा 'हरिद्वार' ---"

कहते कहते किसान का मन भारी होने लगा। वह दहाड़े मार मार कर रोने लगा। ''बाबू जी हमने सोचा था कि तुम सब पढ़े लिखे हो। पर गलत सोचा था हमने। मैं तो अनपढ़ हूँ कुछ नहीं जानता। मगर एक बात जरूर जानता हूँ कि मेरे पास केवल एक ही कुर्ता था। अगर तुम लोग इसी तरह आपस में लड़ते रहे तो एक दिन हमारे इकलौते देश की हालत मेरे इकलौते कुर्ते जैसी हो जाएगी ...... सच कहता हूँ कि मेरे कुर्ते जैसी ही हो जाएगी .....।"

तभी मंदिर की घंटियों की आवाज वातावरण में फैल गयी । ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों कोई प्रार्थना प्रारम्भ हुयी हो। सुबकता हुआ किसान धीरे-धीरे उसी ओर चला गया। मगर सभी गलीवासियों को एक अजीब सी स्थिति में छोड़ गया।

वहां लाल किले पर भारत के प्रधान मंत्री ने जोर से नारा लगाया -----

''जय ..... हिन्द .... ।"

उनके साथ लाखों लोगों की आवाज कड़की

''ज.....य...हिन्द....... ।"

सभी सावधान खड़े हो गए।

राष्ट्रगान की मधुर आवाज तोपों की आवाज के बीच वातावरण में गूँजने लगी।

सूर्य बादलों की आड़ से बाहर आ गये। हवा थोड़ी तीव्र गति से बहने लगी। लाल किले के प्राचीर पर भारत का तिरंगा हवा में लहराता हुआ टेलीविजन में साफ दिखाई दे रहा था।

निःसन्देह यह एक सुहावना दिन था।

– राज कुमार शर्मा
प्रधान प्रबंधक
जनपथ होटल
नई दिल्ली

राजभाषा का प्रशासन

– रमण कुमार वर्मा

प्रशासन शब्द का अर्थ सेवा करना या पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करना है। तद्नुसार, प्रशासन पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करने एवं पारिभाषित लक्ष्यों की प्राप्ति से संबंधित है। लोक प्रशासन के प्रबंधकीय अर्थों में प्रशासन का आशय लक्ष्य प्राप्त करने या कार्य कराने (Getting work done) से है। इस दृष्टिकोण में बल प्रक्रियाओं पर है। लोक प्रशासन के दूसरे दृष्टिकोण एकीकृत दृष्टिकोण के अनुसार प्रशासन में लिपिकीय से लेकर प्रबंधकीय तथा शारीरिक क्रियाओं के साथ–साथ विषयवस्तु भी शामिल है। प्रबंधकीय दृष्टिकोण से केवल प्रबंधकों (प्रशासकों) की क्रियाएं ही प्रशासन में शामिल की जाती हैं चाहे विषयवस्तु कुछ भी हो और यह अधिकांशतः प्रसिद्ध विद्वान लूथर गुलिक के पोस्डकार्ब (POSDCORB) में समाहित है। इनमें योजना बनाना, संगठन बनाना, स्टॉफ की व्यवस्था करना, निर्देश देना, समन्वय करना, रिपोर्टिंग करना एवं बजट बनाना शामिल हैं। वस्तुतः उपर्युक्त दोनों दृष्टिकोणों का समन्वयी रूप ही प्रशासन है जिसमें विषय–वस्तु (Subject Matter) जैसे कि शिक्षा, पुलिस, स्वास्थ्य, कल्याण, राजभाषा आदि तथा प्रबंधकीय एवं प्रशासनिक प्रक्रियाएं दोनों आती हैं।

जहां तक राजभाषा विषय का संबंध है यह प्रशासन में एक नया क्षेत्र है जो भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश के लिए विशिष्ट है। जिस प्रकार शिक्षा के द्वारा नागरिकों को शिक्षित एवं आदर्श नागरिक बनाकर उन्हें देश के आर्थिक विकास में योगदान करने हेतु समर्थ बनाया जाता है एवं कल्याण द्वारा असमर्थ एवं सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े और कमजोर लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जाता है ताकि उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक न्याय मिल सके, उसी तरह देश में राजभाषा के विकास और संवर्धन द्वारा सरकार की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक नीतियों के बारे में आम जनता को उसकी भाषा (अंग्रेजी भाषा समाज के एक मामूली प्रतिशत द्वारा ही बोली और समझी जाती है) में जानकारी देकर उन्हें उसके प्रति अनुक्रियाशील बनाने, राष्ट्र की भाषा में व्यवहार करने एवं उनमें उसके प्रति स्वाभिमान पैदा करने एवं राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को मजबूत करने और इस तरह सामाजिक न्याय दिलाने का महत्वपूर्ण एवं पुनीत कार्य किया जाता है। यदि व्यापक अर्थ में देखा जाए तो सरकार का राजभाषा का संवर्धन एवं विकास का कार्य न केवल संविधान में वर्णित दायित्वों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह एक विकासात्मतक कार्य है जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के माध्यम से विकास में योगदान करता है। जैसा कि चीन, जापान, कोरिया आदि देशों के उदाहरण से स्पष्ट है कि अपनी भाषा में व्यक्ति खोज, अनुसंधान एवं विकास के संदर्भ में

उपलब्धि किसी अन्य भाषा की तुलना में अधिक सामर्थ्य, विश्वास एवं सहजता के साथ हासिल कर सकता है जो कि आर्थिक एवं सामाजिक विकास में परिलक्षित होता है।

राजभाषा प्रशासन का लक्ष्य हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिलाना, इस संबंध में संवैधानिक दायित्वों को पूरा करना एवं केन्द्र सरकार के कामकाज में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ाकर देश में राजभाषा का संवर्द्धन करने का है ताकि जन-जन तक सरकारी नीतियों एंव कार्यक्रमों का लाभ पहुंचाने के सामाजिक दायित्व को पूरा करने का उच्चतम लक्ष्य हासिल हो सके।

केन्द्र सरकार में राजभाषा संबंधी प्रशासनिक व्यवस्था

भारत में राजभाषा प्रशासन के लिए बहुस्तरीय व्यवस्था की गई है जिसके शीर्ष पर केन्द्रीय हिंदी समिति है जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री और उपाध्यक्ष गृहमंत्री होते हैं। इसके अतिरिक्त, समिति में केंद्र सरकार के अन्य मंत्री, राज्यों के मुख्यमंत्री, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, हिंदी जगत के प्रसिद्ध व्यक्ति और भाषाविद् आदि सदस्य होते हैं। यह समिति हिंदी के विकास और प्रसार के विषय में तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे कार्यों तथा कार्यक्रमों के संबंध में नीति निर्माण निकाय है तथा इस संबंध में नीति संबंधी फैसले लेती है। फिलहाल नई समिति का पुनर्गठन किया जाना है।

केन्द्रीय हिंदी समिति के नीचे गृह मंत्रालय, भारत सरकार के तहत राजभाषा विभाग है जिसका कार्य राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 को कार्यान्वित कराना है तथा इस संबंध में समय-समय पर आदेश निर्देश आदि जारी करना है। राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार हिंदी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न शासकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने हेतु प्रत्येक वर्ष एक गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जाता है जिसमें केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों के लिए प्रतिवर्ष हिंदी में कार्य करने के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं और इनके अनुपालन की वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों में रखी जाती है।

केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों में संघ सरकार की राजभाषा नीति के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा तथा इसके प्रयोग को बढ़ाने हेतु सलाह देने के लिए उच्चस्तरीय हिंदी सलाहकार समितियां गठित की जाती हैं। भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य की समीक्षा के लिए सचिव (राजभाषा विभाग) की अध्यक्षता में केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंत्रालय/विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां, देश के मुख्य शहरों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां, बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां आदि कार्यरत हैं।

राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 4(3) के अनुसार, गठित उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति (जिसमें लोक सभा से 20 सदस्यों और राज्य सभा से 10 सदस्यों को मिलाकर कुल 30 सदस्य होते हैं) का कर्तव्य है कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति की समीक्षा करे और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करे। यह समिति अब तक अपने प्रतिवेदन के नौ खंड प्रस्तुत कर चुकी है। इनमें से आठ में की गईं सिफारिशों को सरकार ने स्वीकार किया है और उन्हें कार्यान्वित किया जा रहा है।

शासकीय कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में राजभाषा विभाग की महत्वपूर्ण समन्वयकारी भूमिका है। साथ ही यह केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का संवर्ग नियंत्रक भी है जिसके अधिकारी विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा नीति एवं उसके तहत बनाए गए अधिनियम, नियमों आदि को लागू करने के लिए नियुक्त किए गए हैं। मंत्रालयों/विभागों का राजभाषा प्रभाग संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी के प्रशासनिक नियंत्रण में होता है। उसे राजभाषा अधिकारी का नाम दिया जाता है।

वस्तुतः राजभाषा सेवा के अधिकारियों पर संबंधित मंत्रालय और राजभाषा विभाग का दोहरा नियंत्रण है। इन अधिकारियों की नियुक्ति, प्रशिक्षण और पदोन्नति का कार्य राजभाषा विभाग करता है। सेवा संबंधी शर्तों का विनियमन भी राजभाषा विभाग करता है। राजभाषा विभाग की नीति मंत्रालयों एवं विभागों में राजभाषा का विकास प्रेरणा और प्रोत्साहन से करने की है। इसी कारण राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को मंत्रालय में लागू करवाने में राजभाषा कार्मिकों को दिक्कतें आती हैं क्योंकि इसका उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध कोई दंडात्मक कार्रवाई करने का कोई प्रावधान नहीं है।

मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा कार्मिकों को शीर्ष पदों पर नियुक्त सामान्यतः भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, राजस्व सेवा आदि के अधिकारियों के साथ कार्य करना पड़ता है। आम तौर पर इन अधिकारियों को विभागीय कार्यों के साथ-साथ राजभाषा संबंधी कार्य सौंपा जाता है। अत्यधिक व्यस्त होने के कारण वे राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर पूरा समय नहीं दे पाते हैं। अतः राजभाषा संवर्ग के वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन कार्य के संबंध में वित्तीय, और प्रशासनिक शक्तियां प्रत्यायोजित किए जाने पर विचार किया जाना चाहिए ताकि राजभाषा संबंधी साहित्य, पुस्तकों की खरीद, गोष्ठियां, कार्यशालाएं आयोजित करने, सम्मेलनों में भागीदारी आदि से संबंधित छोटे-छोटे प्रस्तावों को कार्यान्वित करने के लिए उन्हें उच्चाधिकारियों पर निर्भर न रहना पड़े।

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन और कार्यान्वयन हेतु बनाई गई प्रशासनिक व्यवस्था को सक्षम बनाने के लिए इसमें कतिपय सुधार आवश्यक महसूस होते हैं। इनमें प्रमुख है कि प्रत्येक मंत्रालय और विभाग के अधीन एक राजभाषा निदेशालय को मान्यता दी जाए एवं उन्हें पर्याप्त प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियां प्रदान की जाएं ताकि वे स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से संबंधित मंत्रालय/विभाग में राजभाषा नीति का अनुपालन करा सकें तथा मंत्रालय की विषय-वस्तु एवं उसमें राजभाषा के संबंध के संदर्भ में आम जनता से अंतर्क्रिया कर सकें। इस पद्धति का लाभ यह होगा कि वे कार्यान्वयन कार्य की प्रगति के संबंध में सीधे राजभाषा विभाग को रिपोर्ट भेज सकते हैं। अभी जो स्थिति केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान आदि की है उसी स्थिति में इन निदेशालयों को लाया जा सकता है। राजभाषा एकक को पृथक रूप से मान्यता देने से यह अपने उद्देश्यों को और अधिक सफलता से प्राप्त कर पाएगा।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राजभाषा कार्यान्वयन का क्षेत्र अभी नया है और इसमें नवीन प्रयोगों की संभावना है। यह विकास के रास्ते पर है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए इसे सुदृढ़ किया जाना जरूरी है। राजभाषा कार्मिकों को महज कार्यालयी स्टॉफ का दर्जा देना उचित नहीं है। वास्तव में इसे सूत्र विभाग बनाया जाना चाहिए क्योंकि इसकी स्थापना का लक्ष्य राजभाषा को प्रतिष्ठित करना है। राजभाषा का संवर्धन सरकार का कर्तव्य है जो इसे संविधान से प्राप्त हुआ है। राजभाषा स्टॉफ कार्य नहीं है, बल्कि यह एक लाइन कार्य है अतः इसी के अनुरूप इसके साथ व्यवहार किया जाना चाहिए और व्यवस्था की जानी चाहिए।

– रमण कुमार वर्मा
सहायक निदेशक (रा.भा.)
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटे न हिये को शूल !!
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

पुस्तकालय का महत्त्व

– दिनेश कुमार नामदेव

समाज के चहुँमुखी विकास में पुस्तकालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पुस्तकालय विश्व के सर्वोत्तम विचारों को पढ़ने एवं जानने का सबसे सरल माध्यम है। पुस्तकालय सूचना व शिक्षा के प्रचार–प्रसार का भी प्रभावशाली माध्यम है। मनुष्य अपने जीवनकाल के दौरान शिक्षा के विभिन्न स्तरों से गुजरता है जिसमें पुस्तकालयों का एक विशेष महत्व होता है।

कम्प्यूटर के युग में यह गर्व की बात हो सकती है कि जब प्रत्येक जानकारी कम्प्यूटर स्क्रीन पर हासिल की जा सकती है तो भी पुस्तकालयों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। विभिन्न टेक्नोलॉजी, अनुसंधान विज्ञान वर्धित पुस्तकों के लिए पुस्तकालय ही एक स्थान पर इतना कुछ समेटे हुए है। यू.जी.सी. कमेटी ने 1921 में यह बात साफ कही थी कि किसी विश्वविद्यालय की कार्यक्षमता उसके पुस्तकालय के रखरखाव से मापी जा सकती है। पुस्तकालय मनुष्यों को बौद्धिक व सांस्कृतिक ज्ञान देकर उन्हें व्यावहारिक रूप से जीने की प्रेरणा देते हैं। प्राचीन काल में पुस्तकालय व्यक्तिगत संपत्ति थी। धनवान व्यक्ति ही निजी रूप से पुस्तकें रखा करते थे, परंतु समय के साथ इस प्रवृत्ति में सुधार आता गया और पुस्तकें सार्वजनिक संपत्ति हो गईं।

बौद्ध धर्म में भी पुस्तकों को विशेष स्थान हासिल है, पुस्तक दान को महादान के रूप में व्यक्त किया गया है। आज के लोकतांत्रिक परिवेश में पुस्तकों व पुस्तकालयों को सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से देखा जाता है। पुस्तकालय की पुस्तकों के उपयोग का अधिकार सभी को होता है। हम कह सकते हैं कि पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है। सार्वजनिक पुस्तकालयों का महत्त्व पहले से भी अधिक बढ़ गया है। नये पाठ्यक्रमों, महंगे प्रकाशनों व उच्च स्तरीय शिक्षा की वजह से पुस्तकालयों की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।

पुस्तकालयों का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इससे छात्रों में कल्पना शक्ति, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं आत्मनिर्भरता पैदा होती है। पुस्तकालय वास्तव में शिक्षा संस्थान का हृदय होता है। अच्छे पुस्तकालय के अभाव में किसी भी शिक्षा संस्थान के छात्र व शिक्षक उच्च कोटि की शिक्षा हासिल नहीं कर सकते। सर नारवुड के अनुसार किसी को कितनी उत्तम शिक्षा मिली है इसका प्रमाण उसकी डिग्री से नहीं, अपितु इस बात से मिलता है कि उसे पुस्तकालय का उपयोग करना आता है या नहीं।

आमतौर पर पुस्तकालय चार प्रकार के होते हैं–राष्ट्रीय, सार्वजनिक, शैक्षिक व विशिष्ट पुस्तकालय। विशिष्ट पुस्तकालय का पुस्तक संग्रह किसी एक विषय विशेष पर हो सकता है। कुछ समय पहले सार्वजनिक पुस्तकालयों को लोग खाली समय व्यतीत करने का साधन मानते थे, लेकिन अब सार्वजनिक पुस्तकालय सामाजिक, सांस्कृतिक व सूचना केंद्र के रूप में विकसित होते जा रहे हैं। शायद ही समाज में कोई वर्ग होगा जो सार्वजनिक पुस्तकालयों का लाभ न लेता हो।

पुस्तकालयों को राष्ट्र निर्माण में सहायक माना जाता है क्योंकि समाज का प्रत्येक वर्ग छात्र, परिवार, विशेष वर्ग के छात्र (शारीरिक रूप से विकलांग), व्यापार व अन्य प्रतिष्ठानों के लोग इसका उपयोग करते हैं। यह बात सत्य है कि एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना में फैक्टरियों व अदालतों के मुकाबले कम धन खर्च होता है। जब किसी नगर को बसाया जाता है या उसे विकसित किया जाता है तो उसमें पुस्तकालयों का विशेष ध्यान रखा जाता है। अब तो गांवों में भी पुस्तकालय खुल रहे हैं। इसमें ग्रामीणों का उत्साह देखते ही बनता है, हालांकि वहां पुस्तकें अधिक नहीं होती लेकिन फिर भी बच्चे, बूढ़े व नौजवान अपनी-अपनी पसंद की पुस्तकें मन से पढ़ते देखे जा सकते हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार ''हर गांव भारत की अंगूठी है व पुस्तकालय उसमें जड़ा नगीना।''

आधुनिक युग में पुस्तकालयों में भी सुधार किए जा रहे हैं, प्रत्येक पुस्तक को कम्प्यूटर से जोड़ा जा रहा है ताकि पुस्तकों को ढूंढने में कठिनाई न हो। संचार की सुविधा के कारण घर बैठे पुस्तकालयों में पुस्तकों की जानकारी हासिल की जा सकती है। अब तो अधिकतर पुस्तकालय अपने अध्ययनकर्ताओं को इंटरनेट की सुविधा भी देने लगे हैं। अलग-अलग आयु वर्ग बनाकर पुस्तकों को विभिन्न शेल्फों में रखा जाता है ताकि पाठक अपनी रूचि के अनुसार आसानी से पुस्तकें ले सकें। पुस्तकें पढ़ना बहुत ही सहज बात हो सकती है लेकिन अहम तो यह कि आप किसी पुस्तक को कितना महत्व देते हैं व उसे किस प्रकार संभाल कर रखते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में कुछ सुधार की संभावना रहती है उसी प्रकार पुस्तकालयों में भी सुधार किए जा सकते हैं। विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक पुस्तकालयों की शाखाएं, उपशाखाएं खोलकर अधिक लोगों तक पहुंचा जा सकता है, कुछ सेवा केंद्र भी चलाए जा सकते हैं, जैसे- अस्पताल, छावनी, कारागृह, फैक्टरी इत्यादि स्थानों पर पुस्तकालय खोले जा सकते हैं। साक्षरता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिएं, पुस्तकालयों में बच्चों के लिए विशेष मनोरंजन कक्ष होने चाहिएं जहां उन्हें ज्ञानवर्धित कथाएं एवं रोचक जानकारी दी जा सके। पुस्तकालय विशेष प्रतियोगिताएं आयोजित कर स्वयं को समाज का केंद्र बना सकता है। ऐसे प्रत्येक कार्यक्रम के लिए समितियों का गठन किया जा सकता है। प्रदर्शनियों का आयोजन अवसरानुकूल होना चाहिए जैसे- क्रिकेट मैचों के दौरान क्रिकेट संबंधी पुस्तकों की प्रदर्शनी। ये प्रदर्शनी लोंगों में पुस्तकालयों के प्रति रूचि पैदा करती हैं। थियेटर, दूतावासों व अन्य विभागों

के सहयोग से समय-समय पर नाटकों व फिल्मों का मंचन किया जाना चाहिए। यह एक प्रकार का विस्तार कार्यक्रम है जो पुस्तकालयों के कार्यक्षेत्र को उत्साह प्रदान करने में सक्षम है, क्योंकि कोई भी कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक लोग उसमें रूचि न दिखाएं। प्रबुद्ध व समृद्ध देश को उसके पुस्तकालयों पर गर्व महसूस होता है, पुस्तकालय ही शिक्षा के स्तर की पहचान कराते हैं। पुस्तकालय के अधिक पाठक का अर्थ है अधिक शिक्षित लोगों का होना। अतः एक विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए उसकी नींव में पुस्तकालयों का खास ख्याल रखा जाना चाहिए।

– दिनेश कुमार नामदेव
पुस्तकालयाध्यक्ष,
होटल प्रबंध संस्थान,
पूसा, नई दिल्ली

राज्यों का वर्गीकरण - क्षेत्रवार

हिन्दी बोले और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर देश के 29 राज्यों और 7 संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिये अनुसार तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है :

क-क्षेत्र	ख-क्षेत्र	ग-क्षेत्र	
बिहार	गुजरात	आंध्र प्रदेश	ओडिशा
हरियाणा	महाराष्ट्र	अरूणाचल प्रदेश	सिक्किम
हिमाचल प्रदेश	पंजाब	असम	तेलंगाना
मध्य प्रदेश	चंडीगढ़	तमिलनाडु	त्रिपुरा
राजस्थान	दादरा और नगर हवेली	मणिपुर	पश्चिम बंगाल
उत्तर प्रदेश	दमन व दीव	मिजोरम	लक्षद्वीप
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह		गोवा	पांडिचेरी
दिल्ली		कर्नाटक	
उत्तराखण्ड		जम्मू-कश्मीर	
झारखण्ड		केरल	
छत्तीसगढ़		नागालैंड	

क्या राजभाषा हिन्दी के भी अच्छे दिन आएंगे ?

– नाहर सिंह वर्मा

भारत को इंडिया बनाने वाले अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत के दीवाने थे। जबकि भारत के पास अपनी चिरकालिक संस्कृति और भाषा थी। भारत को इंडिया बनाने के उत्साह में हमने अपनी भाषा, परम्पराओं और गौरवशाली इतिहास को भुला दिया। संविधान में अंग्रेजी को मात्र 15 वर्ष तक प्रयोग किये जाने की छूट दी गई थी, और कहा गया था कि 15 वर्ष में हिन्दी, राजभाषा का स्थान ले लेगी। परन्तु आजादी के बाद 68 वर्ष बीत जाने के बाद भी अंग्रेजी जाने का नाम नहीं ले रही है, जैसे कि यह देश उसका घर हो, जबकि उसकी हैसियत किरायेदार जैसी है, किंतु उसे बेदखल करना हम 125 करोड़ लोगों के लिए भारी पड़ रहा है।

वास्तव में, आज अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में रहने का कोई हक नहीं है, क्यों कि वह भारत के किसी एक गांव की भी बोली जाने वाली भाषा नहीं है, किसी भी भारतीय की मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है, संघ सरकार की राजभाषा भी नहीं है, संविधान की 8वीं अनुसूची में भी यह शामिल नहीं है, फिर भी यह केन्द्र और कुछ राज्य सरकारों के कामकाज की प्रमुख भाषा बनी हुई है। कभी-कभी यह आवाज उठती है कि उन पर हिन्दी मत लादो, चाहे अंग्रेजी लादते रहो।

कानपुर से निर्वाचित कांग्रेस के सांसद श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी ने संसद में बोलते हुए कहा था, ''अगर संपूर्ण संविधान लादा हुआ नहीं है, तो संविधान का भाग-17 कैसे लादा हुआ है। कैसे आप कहते हैं कि हिन्दी नहीं लादी जाएगी, थोपी नहीं जाएगी। संविधान के 22 भागों में से 21 तो लागू हैं किंतु एक भाग-17 के बारे में आप लोग कहते हैं, उसे लादा नहीं जाएगा। अगर संविधान लागू है तो हिंदी राजभाषा भी लागू है। अगर संविधान लादा हुआ है तो हिन्दी राजभाषा भी लादी हुई है।''

अंग्रेजी की दुहाई देते हुए कहा जाता है कि वह विश्व की संपर्क भाषा है, ज्ञान की एक मात्र खिड़की है, यह सही नहीं है। जो 40 देश कभी अंग्रेजों के गुलाम रहे, वे, और अमेरिका, आधा कनाडा, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड, अर्थात 45 देश ही अंग्रेजी को जानते हैं, प्रयोग में लाते हैं, जबकि विश्व के शेष 160 देश, अंग्रेजी नहीं जानते, उसे प्रयोग में नहीं लाते। विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा चीनी (मंडारिन) है, और दूसरा स्थान हिन्दी का है। रूसी, स्पेनिश, पोर्तुगी, डच इत्यादि भाषाओं के बाद सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में अंग्रेजी बारहवें पायदान पर है, फिर वह कैसे हुई विश्व भाषा? यह भी सत्य है कि विश्व की 4 प्रतिशत आबादी,

अर्थात लगभग 30 करोड़ लोग ही अंग्रेजी को जानते, बोलते, समझते और लिखते हैं। सभी जानते हैं, चीन विश्व में एक महा शक्ति के रूप में उभरा है। किंतु वहां अंग्रेजी कुछ काम नहीं आ रही। पिछले कुछ वर्षों में हमारा चीन से व्यापार बढ़ा है, भारत और चीन की बात, दुभाषियों के माध्यम से होती है। लगभग 3-4 वर्ष पहले चीन के साहित्यकारों का एक प्रतिनिधिमंडल, साहित्य अकादमी, दिल्ली के कार्यक्रम में भाग लेने भारत आया था। मैंने उनसे पूछा, चीन की चहुंमुखी तरक्की का राज क्या है तो उन्होंने बताया, हम सारा काम अपनी राष्ट्रभाषा चीनी (मंडारिन) में करते हैं, यद्यपि वहां और भी कई छोटी-छोटी बोली और भाषाएं हैं। हम रूस, जापान, कोरिया, फ्रांस, जर्मन आदि देशों से भी अंग्रेजी में बात नहीं कर सकते। अतः अंग्रेजी को ही एकमात्र संपर्क भाषा नहीं कहा जा सकता है।

वैसे भी अंग्रेजी भाषा की लिपि भी वैज्ञानिक नहीं है। अंग्रेजी के शब्द भी इधर-उधर की भाषाओं (लेटिन, ग्रीक आदि) से उधार लिये गये जो संख्या में एक लाख पचासी हजार हैं। अंग्रेजी मूल के तो मात्र पैंसठ हजार शब्द ही हैं, जबकि हिन्दी में अपने मौलिक साठ लाख शब्द हैं। संस्कृत उसकी जननी है, जिसके पास अनंत शब्द भंडार है, जो हिन्दी को विरासत में मिला है।

यह भी तर्क दिया जाता है कि विज्ञान और तकनीकी में प्रगति करने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान होना अनिवार्य है। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि विज्ञान और तकनीकी की पुस्तकें, रूसी, जर्मनी, फ्रेंच आदि भाषाओं में उपलब्ध हैं। शोध-पत्र भी इन्हीं भाषाओं में हैं। वास्तव में हमें विज्ञान और तकनीकी के लिए अंग्रेजी नहीं चाहिए। पुस्तकें तो किसी भी भाषा में अनुवाद की जा सकती हैं। ज्ञान किसी एक भाषा का गुलाम नहीं होता। हमें तो अंग्रेजी के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की आदत सी पड़ गई है। इससे पीछा छुडाने की जरूरत है। ऐसा हो जाने पर ही हम भाषायी गुलामी से मुक्त होकर सच्चे अर्थों में स्वतंत्र देश कहला सकेंगे।

यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। दक्षिण भारत के अधिकतर लोग बहुत अच्छी हिन्दी बोलते हैं। वे सहजता से हिन्दी सीखते हैं और हिन्दी को ही पूरे भारत के लिए संपर्क भाषा स्वीकार करते हैं, फिर भी हिन्दी का जो विरोध देखने को मिलता है, वह केवल राजनैतिक है। यदि दक्षिण भारत का ग्रामीण हिन्दी नहीं जानता, तो वह अंग्रेजी भी तो नहीं जानता। यों तो राजस्थान के भी कई ग्रामीण क्षेत्र ऐसे हैं, जहां के लोग हिन्दी नहीं जानते। ऐसे ग्रामीणों की आड़ में हिन्दी का स्थान अंग्रेजी को देना, कदापि राष्ट्रहित में नहीं है। भारत में मुश्किल से लगभग 5 प्रतिशत लोग अंग्रेजी जानते हैं। यही वे संभ्रांत लोग हैं, जो भारत में अंग्रेजी को बनाये रखने के पक्षधर हैं ताकि उन्हें इसकी आड़ में ढेर सारे लाभ मिलते रहें।

आज अंग्रेजी, हमारे यहाँ शोषण और गैर–बराबरी का पर्याय बन गई है, और सरकारी, गैर–सरकारी नौकरियों में उच्चे पदों पर अंग्रेजी जानने वाले लोग छा हुए हैं। आज भी तथाकथित अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से पढ़कर निकलने वाले छात्र देश के तमाम बड़े पदों पर आसीन हैं। 2011 से संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा में बदलाव करके 22.5 अंक की अंग्रेजी अनिवार्य करना, शहरी और उच्च वर्ग के बच्चों को लाभ पहुंचाना, फिर इससे प्रभावित परीक्षार्थियों द्वारा आन्दोलन किया जाना, इसका जीता–जागता उदाहरण है। सौभाग्य से केन्द्र की नई राष्ट्रवादी सरकार ने इसे अब हटा दिया है, और हो रहे भाषागत अन्याय को कुछ हद तक दूर कर दिया है। तथापि, अभी भी ''सी–सैट'' के प्रश्न –पत्र–II में कुछ और विसंगतियाँ देखी गई हैं, जिन्हें दूर किया जाना भी जरूरी है।

हिन्दी ही वह भाषा है जो भारत की प्रतिभा निखार सकती है। हिन्दी सभी प्रान्तीय भाषाओं और बोलियों को साथ लेकर चलती है। तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि भाषाओं को हिन्दी से कोई खतरा नहीं है। हम सभी को सच्चे मन से अपने प्रदेश में कानून, राजतंत्र, शिक्षा, तकनीकी आदि सभी क्षेत्रों में अपने प्रदेश की भाषा को स्थापित करना चाहिए। इससे न केवल देश में मौलिक प्रतिभाओं का और अधिक विकास होगा अपितु प्रांतीय भाषाओं का भी विकास होगा। इसी प्रकार केन्द्र में हिन्दी को वास्तविक रूप में राजभाषा का गौरवपूर्ण दर्जा देने और सरकारी कामकाज, उद्योग और व्यापार की भाषा बनाये जाने की जरूरत है। हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा (राजभाषा) के रूप में स्वीकार करें, उसके प्रति सम्मान जताकर, देश प्रेम और राष्ट्रीय एकता की अपनी भावना को बल प्रदान करें हिन्दी, अब किसी एक प्रदेश विशेष की भाषा न होकर, हम सबकी भाषा है। किसी पर लादने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। किसी ने ठीक ही कहा है –

हिन्दी, जन–जन की भाषा है,
एकता, प्रेम और सद्भावना की
परिभाषा है।

– नाहर सिंह वर्मा
पर्यटन मंत्रालय की
हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य
बी/के–68 (पश्चिमी),
शालीमार बाग, नई दिल्ली–110088

पंडित दीन दयाल उपाध्याय

(जन्मः 25 सितंबर, 1916 – मृत्युः 11 फरवरी 1968)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के नेता थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर विचारक, उत्कृष्ट संगठनकर्ता तथा एक ऐसे नेता थे जिन्होंने जीवनपर्यन्त अपनी व्यक्तिगत ईमानदारी व सत्यनिष्ठा को महत्त्व दिया। वे भारतीय जनता पार्टी के लिए वैचारिक मार्गदर्शन और नैतिक प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय मजहब और संप्रदाय के आधार पर भारतीय संस्कृति का विभाजन करने वालों को देश के विभाजन का जिम्मेदार मानते थे। वह हिन्दू राष्ट्रवादी तो थे ही, इसके साथ ही साथ भारतीय राजनीति के पुरोधा भी थे। दीनदयाल की मान्यता थी कि हिन्दू कोई धर्म या संप्रदाय नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति हैं। दीनदयाल उपाध्याय की पुस्तक एकात्म मानववाद (इंटीगरल ह्यूमेनिज्म) है जिसमें साम्यवाद और पूंजीवाद, दोनों की समालोचना की गई है। एकात्म मानववाद में मानव जाति की मूलभूत आवश्यकताओं और सृजित कानूनों के अनुरुप राजनीतिक कार्रवाई हेतु एक वैकल्पिक सन्दर्भ दिया गया है।

जीवन परिचय

दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, 1916 को ब्रज के पवित्र क्षेत्र मथुरा जिले के छोटे से गाँव 'नगला चंद्रभान' में हुआ था। दीनदयाल के पिता का नाम 'भगवती प्रसाद उपाध्याय' था। इनकी माता का नाम 'रामप्यारी' था जो धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। रेल की नौकरी होने के कारण उनके पिता का अधिक समय बाहर बीतता था। उनके पिता कभी-कभी छुट्टी मिलने पर ही घर आते थे। थोड़े समय बाद ही दीनदयाल के भाई ने जन्म लिया जिसका नाम 'शिवदयाल' रखा गया। पिता भगवती प्रसाद ने अपनी पत्नी व बच्चों को मायके भेज दिया। उस समय दीनदयाल के नाना चुन्नीलाल शुक्ल धनकिया में स्टेशन मास्टर थे। मामा का परिवार बहुत बड़ा था। दीनदयाल अपने ममेरे भाइयों के साथ खाते-खेलते बड़े हुए। वे दोनों ही रामप्यारी और दोनों बच्चों का खास ध्यान रखते थे।

3 वर्ष की मासूम उम्र में दीनदयाल पिता के प्यार से वंचित हो गये। पति की मृत्यु से माँ रामप्यारी को अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। वे अत्यधिक बीमार रहने

लगीं। उन्हें क्षय रोग हो गया। 8 अगस्त सन् 1924 को रामप्यारी बच्चों को अकेला छोड़ ईश्वर को प्यारी हो गयीं। 7 वर्ष की कोमल अवस्था में दीनदयाल माता–पिता के प्यार से वंचित हो गये। सन् 1934 में बीमारी के कारण दीनदयाल के भाई का देहान्त हो गया।

शिक्षा

गंगापुर में दीनदयाल के मामा 'राधारमण' रहते थे। उनका परिवार उनके साथ ही था। गाँव में पढ़ाई का अच्छा प्रबन्ध नहीं था, इसलिए नाना चुन्नीलाल ने दीनदयाल और शिबु को पढ़ाई के लिए मामा के पास गंगापुर भेज दिया। गंगापुर में दीना की प्राथमिक शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। मामा राधारमण की भी आय कम और खर्चा अधिक था। उनको अपने बच्चों का खर्च और साथ में दीना और शिबु का रहन–सहन और पढ़ाई का खर्च वहन करना पड़ता था।

शिक्षा में कठिनाई

सन 1926 के सितम्बर माह में नाना चुन्नीलाल के स्वर्गवास की दुःखद सूचना मिली। दीना के मन पर गहरी चोट लगी। इस दुख से उभर भी नहीं पाए थे कि मामा राधारमण बीमार पड़ गए। वैद्यों ने बताया कि उन्हें टी.बी. की बीमारी हो गई है। उनका बचना कठिन है। वैद्यों ने औषधि देने से मना कर दिया। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए, यही समस्या थी। लखनऊ में उनके एक सम्बन्धी रहते थे। उनके पास से राधारमण का बुलावा आया। लखनऊ में इलाज की अच्छी व्यवस्था थी। किन्तु उन्हें वहाँ कौन ले जाए, यही समस्या थी। कहीं यह छूत की बीमारी किसी और को न लग जाए, इसी से सब उनके पास जाने से भी डरते थे। दीना बराबर मामा की सेवा में लगा रहता था। मामा के मना करने पर भी वह नहीं मानता था। मामा का लड़का बनवारीलाल भी दीना के साथ पढ़ता था, किन्तु अपने पिता के पास जाने में वह भी छूत की बीमारी से डरता था। दीना की आयु इस समय ग्यारह–बारह वर्ष की थी। वह अपने मामा को लखनऊ ले जाने के लिए तैयार हुआ। मामा ने बहुत मना किया। दीना नहीं माना। अन्त में मामा को दीना की बात माननी ही पड़ी। लखनऊ में मामा का उपचार आरम्भ हुआ। दीना ने डटकर मामा की सेवा की। उसकी परीक्षा भी पास आ रही थी। किन्तु उसे मामा की सेवा के अलावा और कोई ध्यान नहीं था। परीक्षा का ध्यान आते ही मामा ने दीना को गंगापुर भेज दिया। दीना पढ़ भी नहीं सका था। किन्तु होनहार बिरवान के होत चीकने पात वाली कहावत को उसने चरितार्थ कर दिया। दीना ने परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह सभी के लिए आश्चर्य और प्रसन्नता की बात थी।

दीना को कोट गाँव जाना पड़ा। गंगापुर में आगे की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं थी। कोट गाँव में उसने पाँचवीं कक्षा में प्रवेश लिया। वहाँ भी वह पढ़ाई में प्रथम ही रहता था। राजघर जाकर आठवीं और नवीं कक्षा पास की। दीना के पास पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं थीं। दीनदयाल के मामा का लड़का भी उसके साथ पढ़ता था। जब ममेरा भाई सो जाता या पढ़ाई नहीं करता था। तब दीना उसकी पुस्तकों से पढ़ लेता था। अब दीना नवीं कक्षा में था। दीनदयाल को फिर भारी दुःख का सामना करना पड़ा। उसका छोटा भाई शिबु भी टाइफाइड होने से चल बसा। दीना को गहरा दुःख हुआ। दोनों भाइयों में बहुत अधिक प्यार था। नवीं कक्षा पास करने के बाद दीना राजघर से सीकर गया। वहाँ भी उसने अपने अध्यापकों पर अपनी बुद्धि, लगन और परिश्रम की धाक जमा दी। सभी उसे बहुत प्यार करते थे। हाईस्कूल की परीक्षा से कुछ माह पूर्व दीना बीमार पड़ गया। हाईस्कूल की परीक्षा आरम्भ हो गई। दीना ने अच्छी तरह अपने प्रश्नपत्र किए। दीनदयाल न केवल परीक्षा में प्रथम आया बल्कि कई विषयों में एक नया रिकार्ड भी बनाया। उसकी रेखागणित की उत्तर–पुस्तिका कितने ही वर्षों तक नमूने के रूप में रखी गई।

पढ़ाई में प्रशंसा

दीनदयाल जी का प्रिय विषय गणित था। वह गणित में हमेशा अव्वल अंक प्राप्त करते थे। सीकर के महाराज को इस मेधावी छात्र के विषय में खबर मिली। उन्होंने एक दिन दीना को बुलाया। उन्होंने कहा, 'बेटा, तुमने बहुत ही अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। बताओ, तुम्हें पारितोषिक के रूप में क्या चाहिए?' दीना ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, 'केवल आपका आशीर्वाद।' महाराज उस उत्तर से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने दीना को एक स्वर्ण पदक, पुस्तकों के लिए 250 रुपये और 10 रुपये प्रतिमाह विद्यार्थी–वेतन देकर आशीर्वाद दिया। इसके बाद दीनदयाल जी कॉलेज में पढ़ने के लिए पिलानी चले गए। वहाँ भी सभी अध्यापक उनके विनम्र स्वभाव, लगन और प्रखर बुद्धि से बड़े प्रभावित थे। पढ़ाई में पिछड़े छात्र दीनदयाल से पढ़ते थे और मार्गदर्शन पाते थे। दीनदयाल जी इन सबको बड़े प्यार से पढ़ाते और समझाते थे। ऐसे कई छात्र हर समय उन्हीं के पास बैठे रहते थे।

स्वर्ण पदक

सन 1937 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा दी। इस परीक्षा में भी दीनदयाल जी ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। बिड़ला कॉलेज में इससे पूर्व किसी भी छात्र के इतने अंक नहीं आए थे। जब इस बात की सूचना घनश्याम दास बिड़ला तक पहुँची तो वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने दीनदयाल जी को एक स्वर्ण पदक

प्रदान किया। उन्होंने दीनदयाल जी को अपनी संस्था में एक नौकरी देने की बात कही। दीनदयाल जी ने विनम्रता के साथ धन्यवाद देते हुए आगे पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। बिड़ला जी इस उत्तर से बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, 'आगे पढ़ना चाहते हो, बड़ी अच्छी बात है। हमारे यहाँ तुम्हारे लिए एक नौकरी हमेशा खाली रहेगी। जब चाहो आ सकते हो।' धन्यवाद देकर दीनदयाल जी चले गए। बिड़ला जी ने उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की।

कॉलेज में प्रवेश

दीनदयाल जी को बी.ए. करना था। इसके लिए एस.डी. कॉलेज, कानपुर में प्रवेश लिया। मन लगाकर अध्ययन किया। छात्रावास में रहते थे। वहाँ उनका सम्पर्क श्री सुन्दरसिंह भण्डारी, बलवंत महासिंघे जैसे कई लोगों से हुआ। राजनीतिक चर्चाएँ काफी–काफी देर तक चलती थीं।

यहाँ दीनदयाल में राष्ट्र की सेवा के बीज का स्फुरण हुआ। बलवंत महासिंघे के सम्पर्क के कारण दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यक्रमों में रुचि लेने लगे। इन सब व्यस्तताओं के बाद भी उन्होंने सन् 1939 में प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा पास की। पंडित जी एम.ए. करने के लिए आगरा चले गये। वे यहाँ पर श्री नानाजी देशमुख और श्री भाऊ जुगाडे के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे। इसी बीच दीनदयाल जी की चचेरी बहन रमा देवी बीमार पड़ गयीं और वे इलाज कराने के लिए आगरा चली गयीं, जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी। दीनदयालजी इस घटना से बहुत उदास रहने लगे और एम.ए. की परीक्षा नहीं दे सके। सीकर के महाराजा और श्री बिड़ला से मिलने वाली छात्रवृत्ति बन्द कर दी गई।

राष्ट्र धर्म प्रकाशन

दीनदयाल ने लखनऊ में राष्ट्र धर्म प्रकाशन नामक प्रकाशन संस्थान की स्थापना की और अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए एक मासिक पत्रिका 'राष्ट्र धर्म' शुरू की। बाद में उन्होंने 'पांचजन्य' (साप्ताहिक) तथा 'स्वदेश' (दैनिक) की शुरुआत की। सन् 1950 में केन्द्र में पूर्व मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 'नेहरू–लियाकत समझौते' का विरोध किया और मंत्रिमंड़ल के अपने पद से त्यागपत्र दे दिया तथा लोकतांत्रिक ताकतों का एक साझा मंच बनाने के लिए वे विरोधी पक्ष में शामिल हो गए। डॉ. मुकर्जी ने राजनीतिक स्तर पर कार्य को आगे बढ़ाने के लिए निष्ठावान युवाओ को संगठित करने में श्री गुरु जी से मदद मांगी।

राजनीतिक सम्मेलन

पंडित दीनदयाल जी ने 21 सितम्बर, 1951 को उत्तर प्रदेश का एक राजनीतिक

सम्मेलन आयोजित किया और नई पार्टी की राज्य इकाई, भारतीय जनसंघ की नींव डाली। पंडित दीनदयाल जी इसके पीछे की सक्रिय शक्ति थे और डॉ. मुखर्जी ने 21 अक्तूबर, 1951 को आयोजित पहले 'अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता की। पंडित दीनदयाल जी की संगठनात्मक कुशलता बेजोड़ थी।

संघर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपनी चाची के कहने पर धोती तथा कुर्ते में और अपने सिर पर टोपी लगाकर सरकार द्वारा संचालित प्रतियोगी परीक्षा दी जबकि दूसरे उम्मीदवार पश्चिमी सूट पहने हुए थे। उम्मीदवारों ने मजाक में उन्हें 'पंडितजी' कहकर पुकारा–यह एक उपनाम था जिसे लाखों लोग बाद के वर्षों में उनके लिए सम्मान और प्यार से इस्तेमाल किया करते थे। इस परीक्षा में वे चयनित उम्मीदवारों में सबसे ऊपर रहे। वे अपने चाचा की अनुमति लेकर 'बेसिक ट्रेनिंग' (बी.टी.) करने के लिए प्रयाग चले गए और प्रयाग में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में भाग लेना जारी रखा। बेसिक ट्रेनिंग (बी.टी.) पूरी करने के बाद वे पूरी तरह से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों में जुट गए और प्रचारक के रूप में जिला लखीमपुर (उत्तर प्रदेश) चले गए। सन् 1955 में दीनदयाल उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय प्रचारक बन गए।

सर्वोच्च अध्यक्ष

पंडित दीनदयाल जी की संगठनात्मक कुशलता बेजोड़ थी। आखिर में जनसंघ के इतिहास में चिरस्मरणीय दिन आ गया जब पार्टी के इस अत्यधिक सरल तथा विनीत नेता को सन् 1968 में पार्टी के सर्वोच्च अध्यक्ष पद पर बिठाया गया। दीनदयाल जी इस महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को संभालने के पश्चात जनसंघ का संदेश लेकर दक्षिण भारत गए।

देश सेवा

पंडित जी घर गृहस्थी की तुलना में देश की सेवा को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। दीनदयाल देश सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उन्होंने कहा था कि 'हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारतमाता है, केवल भारत ही नहीं। माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र बनकर रह जाएगा। पंडित जी ने अपने जीवन के एक–एक क्षण को पूरी रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक गहराई से जिया है। पत्रकारिता जीवन के दौरान उनके लिखे शब्द आज भी उपयोगी हैं। प्रारम्भ में समसामयिक विषयों पर वह 'पॉलिटिकल डायरी' नामक स्तम्भ लिखा करते थे। पंडित जी ने राजनीतिक लेखन को भी दीर्घकालिक विषयों से जोडकर रचना कार्य को सदा के लिए उपयोगी बनाया है।

लेखन

पंडित जी ने बहुत कुछ लिखा है। जिनमें एकात्म मानववाद, लोकमान्य तिलक की राजनीति, जनसंघ का सिद्धांत और नीति, जीवन का ध्येय राष्ट्र जीवन की समस्यायें, राष्ट्रीय अनुभूति, कश्मीर, अखंड भारत, भारतीय राष्ट्रधारा का पुनः प्रवाह, भारतीय संविधान, इनको भी आजादी चाहिए, अमेरिकी अनाज, भारतीय अर्थनीति, विकास की एक दिशा, बेकारी समस्या और हल, टैक्स या लूट, विश्वासघात, द टू प्लान्स, डिवैलुएशन ए, ग्रेटकाल आदि हैं। उनके लेखन का केवल एक ही लक्ष्य था भारत की विश्व पटल पर लगातार पुनर्प्रतिष्ठा और विश्व विजय।

मृत्यु

विलक्षण बुद्धि, सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के स्वामी, पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की हत्या सिर्फ 52 वर्ष की आयु में 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय के पास रेलगाड़ी में यात्रा करते समय हुई थी। उनका पार्थिव शरीर मुगलसराय स्टेशन के वार्ड में पड़ा पाया गया। भारतीय राजनीतिक क्षितिज के इस प्रकाशमान सूर्य ने भारतवर्ष में सभ्यतामूलक राजनीतिक विचारधारा का प्रचार एवं प्रोत्साहन करते हुए अपने प्राण राष्ट्र को समर्पित कर दिए।

–साभार

"हिंदी एक जीवंत भाषा है । इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है । हिंदी के यही तो वे गुण हैं जो इसे दूसरी भाषाओं को शब्दों और वाक्यों के आत्मसात् करने की असीम क्षमता प्रदान करते हैं। हिंदी हमें दक्षिण एशिया के देशों से ही नहीं बल्कि पूरे एशिया और मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड व टोबेगो जैसे अन्य देशों के साथ भी जोड़ती है । यदि हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है, तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा ।"

के.आर. नारायणन
भूतपूर्व राष्ट्रपति

माँ

– उपदेश कुमार भारद्वाज

मैं रहता हूँ...
मेरी उस माँ के साथ
जिसका मुझ पर रहा है
सदा ही हाथ।
मुझे पाला बड़ा किया
असाधारण मुश्किल हालातों में
किन्तु सदा रखा मुझे
अपने सुरक्षित कोमल हाथों में।।
हर सुबह मुझे ...
जगाती, मनाती, नहलाती
खिलाती, समझाती, धमकाती
फिर स्कूल छोड़ने जाती
उसके बाद ही खुद कुछ खाती।।
छुट्टी बाद ....
पहुँचने घर देर से भी मेरे
घर के दरवाजे पर
मिलती थी हमेशा ही खड़ी।।
कई बार कहने पर भी मेरे
क्यों होती हो बाहर खड़ी
धूप में, बारिस या तेज
गर्म हवाओं में।।
कहती ....

मिलती है मुझे खुशी इतनी
कई घंटे बाद जब तू आता है
मेरी बाँहों में।।
कभी मैं गुस्से में लड़ता झगड़ता
छोड़कर घर चला जाऊंगा
कहकर वहीँ कहीं छुप जाता
जगह ऐसी देख सकूँ जहाँ से
माँ की उन प्यार भरी
घबराई डबडबाई आँखों को
मानो ढूँढ रही हों ...
मौत में ज्यों जिन्दगानी को।।
विधवा जीवन क्या होता है
बतला सकती है वही
जवानी से लेकर
बुढ़ापे तक जीवन भर जिसने
बस परेशानियाँ ही सही
बस परेशानियाँ ही सही।।
पर आज देखता हूँ जब
उन सूजी-सूजी सी
किन्तु संतोष से भरी
माँ की इन आँखों में
जो खुश हैं सिर्फ और सिर्फ
इस बात से
कि उनके बच्चे ...

समृद्ध और खुशहाल हैं
इसीलिए कष्टमय जीवन जीकर
उम्र भर फिर भी
आज उनके दिल में
ना कोई मलाल है।।
चाहत है मेरी बस इतनी
मैं रहूँ हमेशा
इस माँ के उज्ज्वल हृदय में
मिल जाते हैं जिससे
सैंकड़ों आशीष दिनभर में
मेरी माँ....
नहीं मिल पाया जिसे
उम्र भर
मेरे पिता का साथ।।
मैं रहता हूँ...
मेरी उस माँ के साथ
जिसका रहा है मुझ पर
सदा ही हाथ।।

– उपदेश कुमार भारद्वाज
पर्यटन मंत्रालय
की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य
155 ब्लॉक–ए, सेक्टर–72, नोएडा

गुजारिश

– नेहा श्रीवास्तव

जिंदगी भर कौन साथ निभाता है,
थोड़ी दूर साथ चलो
बस इतनी गुजारिश है।
अंधेरा घिरने पर तो साया भी साथ
छोड़ जाता है,
थोड़ी दूर हमसाया बनो
बस इतनी गुजारिश है
वक्त के साथ जाती है यादें भी धुंधला,
पर कुछ सुनहरी यादों का हिस्सा
तो बनो बस इतनी गुजारिश है।

मुझे चांद चाहिए
मैं ये नहीं कहती
पर थोड़े तारे तो
मेरे आंचल में आने दो।
जताया हक नहीं कभी
सावन की झड़ी पर अपना
पर ओस की बूंदों से
मुझे हर्षाने दो।
और
मेरे सुनहले सपनों ने
कभी नहीं मांगा सारा आकाश
पर थोड़ी सी जमीं पर तो
मुझे अपना मुकां बनाने दो।
पर थोड़ी सी जमीं पर तो
मुझे अपना मुकां बनाने दो ।

– नेहा श्रीवास्तव
उप निदेशक
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

ईमानदारी का इनाम

– अबिनाश दाश

इस साल मेरा सात वर्षीय बेटा
दूसरी कक्षा में प्रवेश पा गया
क्लास में हमेशा से अव्वल
आता रहा है।

पिछले दिनों तनख्वाह मिली तो
मैं उसे नई स्कूल ड्रेस और
जूते दिलवाने के लिए बाजार ले गया।

बेटे ने जूते लेने से यह कह कर
मना कर दिया कि पुराने जूतों
को बस थोड़ी–सी मरम्मत की
जरूरत है वो अभी इस साल
काम दे सकते हैं।

अपने जूतों की बजाये उसने
मुझे अपने दादा की कमजोर हो
चुकी नजर के लिए नया चश्मा
बनवाने को कहा।

मैंने सोचा बेटा अपने दादा से
शायद बहुत प्यार करता है
इसलिए अपने जूतों की बजाय
उनके चश्मे को ज्यादा जरूरी
समझ रहा है।

खैर मैंने कुछ कहना जरूरी
नहीं समझा और उसे लेकर
ड्रेस की दुकान पर पहुँचा ......
दुकानदार ने बेटे के साइज
की सफेद शर्ट निकाली........
डाल कर देखने पर शर्ट एकदम

फिट थी .....
फिर बेटे ने थोड़ी लम्बी शर्ट
दिखाने को कहा !!!
मैंने बेटे से कहा :
बेटा ये शर्ट तुम्हें बिल्कुल सही है,
तो फिर और लंबी क्यों ?

बेटे ने कहा : पिता जी मुझे शर्ट
निक्कर के अंदर ही डालनी होती है
इसलिए थोड़ी लंबी भी होगी तो
कोई फर्क नहीं पड़ेगा....

लेकिन यही शर्ट मुझे अगली
क्लास में भी काम आ जाएगी......
पिछली वाली शर्ट भी अभी
नई जैसी ही पड़ी है लेकिन
छोटी होने की वजह से मैं उसे
पहन नहीं पा रहा।

मैं खामोश रहा ।।

घर आते वक्त मैंने बेटे से पूछा :
तुम्हें ये सब बातें कौन सिखाता है
बेटा ?
बेटे ने कहा :
पिता जी मैं अक्सर देखता था
कि कभी माँ अपनी साड़ी छोड़कर
तो कभी आप अपने जूतों को
छोड़कर हमेशा मेरी किताबों
और कपड़ों पर पैसे खर्च कर
दिया करते हैं ।

गली–मोहल्ले में सब लोग कहते
हैं कि आप बहुत ईमानदार
आदमी हैं और हमारे साथ वाले

राजू के पापा को सब लोग
चोर, कुत्ता, बे–ईमान, रिश्वतखोर
और जाने क्या–क्या कहते हैं
जबकि आप दोनों एक ही
ऑफिस में काम करते हैं .....
जब सब लोग आपकी तारीफ
करते हैं तो मुझे बहुत
अच्छा लगता है ......
मम्मी और दादा जी भी आपकी
तारीफ करते हैं ।
पिता जी मैं चाहता हूँ कि मुझे
कभी जीवन में नए कपड़े
नए जूते मिले या न मिले
लेकिन कोई आपको
चोर, बे–ईमान, रिश्वतखोर या
कुत्ता न कहे ।।।

मैं आपकी ताकत बनना चाहता हूँ
पिता जी,
आपकी कमजोरी नहीं।

बेटे की बात सुनकर मैं निरुत्तर था
आज मुझे पहली बार
मेरी ईमानदारी का इनाम मिला था ।।

आज बहुत दिनों के बाद आँखों में
खुशी, गर्व और सम्मान के
आँसू थे ......

– अबिनाश दाश
ग्रंथागरिक
होटल प्रबंध संस्थान,
भुवनेश्वर, ओडिशा

देवनागरी

– बाबा कानपुरी

लिपियों में लिपि जो सर्वोत्तम
देवनागरी ।
सहज सरल सुन्दर शर्मीली
जैसे दुल्हन नई नवेली ।
जिस भाषा ने है अपनाया
निखर हो गई कंचना काया ।
बोझ नहीं, परिधान सरीखी,
सुभग आगरी ।

गाँधी जी की है यह माया,
संत विनोबा जी की यह काया ।
गौरव जिसका सबसे ऊँचा,
जिसके सम्मुख नत विज्ञान ।
शांति स्नेह की देवी,
संचित शक्ति सागरी ।

एक बधिर की यह मृदुवाणी
अन्नपूर्णा सी कल्याणी ।
कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती
बढ़कर सबको गले लगाती ।
छलक रही पथ में अमृत रस–
भरी गागरी ।

– बाबा कानपुरी,
पर्यटन मंत्रालय की
हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य
ग्राम–सदरपुर, सेक्टर – 45,
नोएडा–201303 (उत्तर प्रदेश)

'जीवन का कुरुक्षेत्र'

– अमित तिवारी

जीवन का संसार सृष्टा ने जो रच दिया है,
वो अविरल धरा धारा जिसे कल ने जना है,
किन्तु नहीं शाश्वत जीवन धरा की काया है,
हर मोड़ पर मृत्यु का तांडव और क्रूर संघर्ष गहराया है,

व्यथित हुआ नर निज सौभाग्य को कोसता है,
किन्तु, पुरुषार्थी तो, गढ़ता मृत्यु में भी जीवन राग है,
सलिल सुधा सम जीवन जिसका नहीं पारावार है,
है हर पल मृत्यु तय पर उसके आने तक
जीता वही जीवन के कुरुक्षेत्र में जो रहा कर्मण्य है

है हरपल मृत्यु की ओर ये जो जानता है
वही सृजन के उत्कर्षों को जीवन भर ठानता है
मर जाना नहीं दुःखद अगर कर्मों से अमर हुआ है
जीवन के कुरुक्षेत्र में आना जाना (संघर्ष) लगा हुआ है

शोषित रक्त की लाली में आता नहीं उबाल है
वह जीवन मृत सम है यही तो जीवन कुरुक्षेत्र की चाल है
श्रम करो और कर्म करो जीवन का ये उवाच है
ना खत्म करो जीवन पर्यटन को ये ही कुरुक्षेत्र की आस है

क्या मिटा दिया किसे मिटा दिया है
कौन मिटा किसे सकता है
नर होकर कर्त्तव्यों से जो डरता है ।
वो नहीं सच को जान सका, जो जीवन में हर पल मरता है ।।

है वो ही तो विजेता जीवन कुरुक्षेत्र का
जो मृत्यु को जीवन में हर पल भरता है ।

– अमित तिवारी
सहायक प्राध्यापक
भारतीय पर्यटन व
यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर

सबक

– पंकज कुमार सिंह

देखो भूख को खाकर कभी
और देखो प्यास को पीकर
क्षुधाग्नि से लड़ने का सबक
तुम्हें उस रोज मिल जाएगा

सुनो सन्नाटे का शोर कभी
और सुनो खामोशी की आवाज
वीराने में बढ़ने का सबक
तुम्हें उस रोज मिल जाएगा

देखो अंधरे की रोशनी कभी
और देखो रात्रि का सूरज
उजाले को गढ़ने का सबक
तुम्हें उस रोज मिल जाएगा

महसूस करो बर्फ की तपिश कभी
और अग्नि की शीतलता
शिखर पर चढ़ने का सबक
तम्हें उस रोज मिल जाएगा

समझो निश्चलता की चाल कभी
और समझो जड़ की चेतना
निरंतर चलने का सबक
तुम्हें उस रोज मिल जाएगा

देखो मौत को जीकर कभी
और जिंदगी लुटा औरों पर
संच्चा इंसान बनने का सबक
तुम्हें उस रोज मिल जाएगा ।

– पंकज कुमार सिंह
व्याख्याता
होटल प्रबंध संस्थान, आल्त पर्वरी, गोवा

सतत पर्यटन

पर्यटन मंत्रालय ने अगस्त, 2014 में आयोजित स्टेकहोल्डरों के लिए सतत पर्यटन पर सुग्राहीकरण कार्यशाला के दौरान पर्यटन उद्योग के तीन प्रमुख घटकों नामतः टूर आपरेटर, आवास और समुद्रतट, बैकवाटर, झील एवं नदी क्षेत्र हेतु भारत के लिए विस्तृत सतत पर्यटन मानदंड (एसटीसीआई) लांच किए। इन मानदंडों को स्टेकहोल्डरों द्वारा अंगीकृत किया गया है।

इसके अतिरिक्त, कार्यान्वयन चरण पर होटल परियोजनाओं के अनुमोदन हेतु दिशा–निर्देश और विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत चालू होटलों के वर्गीकरण/पुनः वर्गीकरण के लिए भी मंत्रालय के दिशा–निर्देश हैं। इन दिशा–निर्देशों के अनुसार परियोजना स्तर पर ही होटलों को विभिन्न पर्यावरण अनुकूल उपायों जैसे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी), वर्षा जल संचयन प्रणाली, कचरा प्रबंधन प्रणाली, प्रदूषण नियंत्रण, रेफ्रिजरेशन और वातानुकूलन हेतु नॉन–क्लोरोफ्लूरोकार्बन (सीएफसी) उपकरणों का इस्तेमाल करना, ऊर्जा एवं जल संरक्षण इत्यादि के लिए उपायों को अपनाना अपेक्षित है। परियोजना स्तर एवं चालू होटलों के वर्गीकरण/पुनः वर्गीकरण हेतु दिशा–निर्देशों के अंतर्गत यह निर्धारित किया गया है कि पहाड़ी एवं पारिस्थितिकीय रूप से नाजुक क्षेत्रों के होटल भवनों का आर्किटेक्चर सतत् एवं ऊर्जा बचत में सक्षम होना चाहिए और जहां तक संभव हो वह स्थिनीय लोकाचार के अनुरुप हो एवं उसमें स्थानीय डिजाइन एवं सामग्री का उपयोग होना चाहिए।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा अनुमोदित टूर आपरेटरों को सर्वोत्तम पर्यावरण तथा विरासत संरक्षण मानकों के अनुरुप सतत् पर्यटन पद्धतियों के पूर्णतः कार्यान्वयन हेतु सुरक्षित एवं सम्मानजनक पर्यटन तथा सतत पर्यटन के प्रति प्रतिबद्धता के लिए शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करने होते हैं ताकि वर्तमान पर्यटन संसाधन आवश्यकताओं का स्थानीय सामुदायिक लाभ और भावी सतत उपयोग दोनों के लिए इष्टतम उपयोग हो।

पर्यटन मंत्रालय देश में सतत पर्यटन सहित पर्यटन के विकास और संवर्धन के लिए कार्य नीतियां बनाने के लिए राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों, पर्यटन से संबंधित विभिन्न संस्थाओं और स्टेंकहोल्डरों के साथ लगातार संवाद करता है। पर्यटन मंत्रालय समय–समय पर उन विभिन्न सेमिनारों और समारोहों को भी सहायता देता है जो ग्रामीण क्षेत्रों में सतत पर्यटन सहित देश में पर्यटन पर फोकस अथवा विचार–विमर्श करते हैं।

इको पर्यटन

इको पर्यटन (इसे पारिस्थितिक पर्यटन के नाम से भी जाना जाता है) नाजुक, प्राचीन तथा सामान्यतया संरक्षित क्षेत्रों की जिम्मेदारी पूर्ण यात्रा है, जिसका प्रयास (अक्सर) छोटे पैमाने पर बेहद हल्का प्रभाव डालना होता है। इसका उद्देश्य यात्रियों को शिक्षित करना, पारिस्थितिक संरक्षण के लिए निधियां प्रदान करना, स्थानीय समुदायों का प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक विकास करना और राजनीतिक सशक्तिकरण का लाभ देना तथा विविध संस्कृतियों एवं मानवाधिकारों के प्रति आदर को बढ़ावा देना है। इको पर्यटन के भागीदारों ने इसे काफी महत्वं प्रदान किया है, ताकि भावी पीढ़ी मानव के दखल से अपेक्षाकृत अछूते पर्यावरण के पहलुओं का अनुभव कर सकें। पर्यटन मंत्रालय ने देश में ईको-पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित पहल की हैं :

(i) पर्यटन उद्योग के तीन मुख्य घटकों नामतः आवास, टूर ऑपरेटर और समुद्रतट, बैकवाटरों, झीलों एवं नदी क्षेत्रों के लिए भारत हेतु व्यापक स्थायी पर्यटन मानदण्ड (एसटीसीआई) का विकास एवं अंगीकरण किया गया, जो पूरे देश पर लागू है।

(ii) कार्यान्वयन स्तर पर होटल परियोजनाओं के अनुमोदन और साथ ही विभिन्न श्रेणियों के तहत चालू होटलों के वर्गीकरण/पुनः वर्गीकरण के लिए दिशानिर्देश, जिनके अंतर्गत विभिन्न ईको-फ्रैंन्डली उपाय जैसे मलजल शोध संयंत्र की स्थापना, वर्षा जल संचयन, अपशिष्टो प्रबंधन प्रणाली, प्रदूषण नियंत्रण तथा रेफ्रीजेरेशन एवं एयर कंडीशनरों हेतु नान-क्लोरोफ्लूरोकार्बन उपकरण प्रयोग में लाना, ऊर्जा तथा जल संरक्षण के उपाय का अनुपालन अनिवार्य है।

(iii) अन्य बातों के साथ-साथ देश में ईको-पर्यटन के विकास पर केन्द्रित समय-समय पर होने वाले सेमिनारों, सम्मेलनों तथा कार्यक्रमों की सहायता करके और घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय अभियानों के माध्यम से भी ईको-पर्यटन का संवर्धन करना।

(iv) मंत्रालय ने पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध बनाने और रोजगार अवसर को बढ़ाने के लिए सभी स्टेकहोल्डरों की आवश्यकताओं और सरोकारों पर फोकस करने हेतु प्रयासों में ताल-मेल द्वारा एकीकृत तरीके में उच्च पर्यटक मूल्य, प्रतिस्पर्धात्मकता और सततता के सिद्धांतों पर थीम आधारित पर्यटक परिपथों के विकास हेतु 'स्वदेश दर्शन स्कीम' लांच की है। थीमों में से एक, जिन पर परिपथों का विकास किया जाना है, ईको-पर्यटन परिपथ हैं।

पर्यटकों की सुरक्षा एवं संरक्षा

पर्यटन मंत्रालय द्वारा विदेशी पर्यटकों सहित पर्यटकों की सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने के उठाए गए कदम निम्नानुसार हैं :

i) पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटकों को गाइड करने के लिए 'अतुल्य भारत हेल्प लाइन' की प्रायोगिक आधार पर स्थापना की है।

ii) सुरक्षित और सम्मानजनक पर्यटन के लिए आचार संहिता को अंगीकार करना जो पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों दोनों विशेषकर महिलाओं और बच्चों को शोषण से मुक्ति दिलाने, प्रतिष्ठा और सुरक्षा जैसे मूल अधिकारों के लिए सम्मान के साथ किए जाने वाले पर्यटन संबंधी क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए दिशा–निर्देशों का एक सेट है।

iii) समस्त राज्य सरकारों के मुख्य मंत्रियों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के प्रशासकों को सभी पर्यटकों के लिए अनुकूल और मित्रवत वातावरण सुनिश्चित करने हेतु तत्काल प्रभावी कदम उठाने के लिए कहा गया है और उनसे वर्तमान/भावी यात्रियों के बीच सुरक्षा की भावना को बढ़ाने के लिए उठाए जा रहे/प्रस्तावित कदमों का प्रचार करने और नकारात्मक प्रचार, यदि कोई हो तो, का मुकाबला करने का भी अनुरोध किया गया है।

iv) 18 जुलाई, 2013 और 21 अगस्त, 2014 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रियों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें संकल्प लिया गया कि सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के पर्यटन विभाग पर्यटकों विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने का कार्य करेंगे। आंध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, मध्य, प्रदेश और ओडिशा की राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों ने किसी न किसी रूप में पर्यटक पुलिस तैनात की है।

v) पर्यटक सुविधा और सुरक्षा संगठन (टीएफएसओ) की प्रायोगिक आधार पर स्थापना करने के लिए राजस्थान, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश की राज्य सरकारों को केंद्रीय वित्तीय सहायता प्रदान करना।

vi) पर्यटन मंत्रालय पारम्परिक भारतीय मूल्यों और 'अतिथि देवो भव' की संकल्पना पर जन साधारण और स्टेकहोल्डरों को संवेदनशील बनाने के लिए टेलीविजन पर

सामाजिक जागरूकता अभियान चला रहा है। अभियान में दो कमर्शियल शामिल हैं पहला पर्यटक के साथ दुर्व्यवहार के प्रति संवेदनशील बनाना और दूसरा पर्यटक स्थलों एवं मार्गों पर स्वच्छता के बारे में।

vii) विदेशी पर्यटकों के साथ हुई कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं को देखते हुए पर्यटन मंत्रालय ने अपनी वेबसाइट incredibleindia.org पर एडवाइजरी भी पोस्ट कर दी है।

viii) पर्यटन मंत्रालय ने सितम्बर, 2014 में राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए पर्यटकों की सुरक्षा एवं संरक्षा पर दिशा–निर्देश और यात्रियों के लिए टिप्स जारी किए हैं। यह दिशा–निर्देश राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संबंधित प्राधिकारियों को सुरक्षा एवं जोखिम प्रबंधन के महत्व पर जोर देने, श्रेष्ठ तरीकों की पहचान करने में सहायता करने और पर्यटकों को सुखद अनुभव सुनिश्चित करने हेतु घनिष्ठ सहयोग प्रोत्साहित करने के लिए अ०फर किए गए हैं। यह दिशा–निर्देश सांकेतिक निर्देश है जोकि पर्यटकों की बेहतर तरह से सुरक्षा करने के लिए राज्य को घरेलू उपाय तैयार करने और बेहतर तरीकों को साझा करने या अपनाने में उनके लिए उपयोगी हो सकते हैं। इन दिशा–निर्देशों के अतिरिक्त, पर्यटकों की अतुल्य भारत की यात्रा को यादगार अनुभव बनाने के लिए 'यात्रियों के लिए टिप्स' भी ऑफर किए गए हैं और इसमें निम्नलिखित कवर किए गए हैं :–

- यात्रा करने से पहले प्रबंधन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां।
- राज्य सरकार द्वारा आपात स्थिति पर यात्रा संबंधी जानकारी।
- आपातकाल में पर्यटकों की पहचान करना एवं उनके स्थान का पता लगाना।
- सरकारी संपर्क और अंतः एजेंसी समन्वय।
- सेवा प्रदाताओं (परिवहन सेवा, आवास सेक्टर) का विनियमन।
- रोमांचकारी क्रीड़ा सहित लेश्जर एवं रिक्रिएशनल सेवाओं को विनियमित करना।
- दिवालियापन का पता लगाना और विवाद का निपटारा।
- प्रवर्तन।

देश में और अधिक विदेशी पर्यटक आगमन

पर्यटन मंत्रालय ने देश में और अधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है –

- 113 देशों के नागरिकों के लिए ई–पर्यटक वीजा की शुरुआत।
- पूरे विश्व में अतुल्य भारत अभियान के माध्यम से गंतव्य का संवर्धन।
- प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पर्यटन यात्रा मेलों प्रदर्शनियों में भागीदारी।
- स्टेकहोल्डरों के सहयोग से प्रमुख पर्यटक स्रोत बाजारों में देश के पर्यटन गंतव्यों और उत्पादों के संवर्धन हेतु रोड़ शो का आयोजन।
- 'निश पर्यटन' उत्पादों का विकास और संवर्धन।
- पर्यटकों को गुणवत्तापूर्ण सेवा की डिलीवरी हेतु आतिथ्य पर्यटन सेक्टर में प्रशिक्षित जनशक्ति के व्यापक पूल का सृजन।
- राष्ट्रीय प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में नियमित घरेलू विज्ञापन अभियान जारी करना।
- अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर आने वाले पर्यटकों के लिए आप्रवासन काउंटरों पर वितरण हेतु पर्यटकों के लिए 'क्या करें' और 'क्या न करें' संबंधी जानकारी, भारत पर्यटन के घरेलू कार्यालयों के सम्पर्क ब्यौरे और पर्यटक हेल्प लाइन नंबर वाली 'वेलकम बुकलेट'।
- आपातकालीन स्थितियों में पर्यटकों को उपयोगी जानकारी देने एवं उनका मार्गदर्शन करने हेतु 24 x 7 'अतुल्य भारत हेल्पलाइन'।
- पर्यटन मंत्रालय (एमओटी) भारत का एक गंतव्य के रूप में समग्र तरीके से संवर्धन करने के लिए अपनी चालू संवर्धनात्मकक गतिविधियों के भाग के रूप में भारत की पर्यटन क्षमता को प्रदर्शित करने और देश में विदेशी पर्यटक आगमन को बढ़ाने हेतु 'अतुल्य भारत' ब्रैंड लाइन के तहत अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, ऑनलाइन और आउटडोर मीडिया अभियान जारी करता है।
- देश में बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से विदेशों के महत्वपूर्ण और संभावित स्रोत बाजारों में विदेश स्थित भारत पर्यटन कार्यालयों के माध्यम से कई संवर्धनात्मक गतिविधियां भी चलाई जाती हैं। इनमें अंतरराष्ट्रीय

यात्रा मेलों एवं प्रदर्शनियों में सहभागिता रोड शो, भारत परिचय सेमिनारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन, भारत भोजन और सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन एवं सहायता ब्रोशरों का प्रकाशन, संयुक्त विज्ञापन और ब्रोशर सहायता प्रदान करना, और मंत्रालय के आतिथ्य कार्यक्रम के अंतर्गत देश का भ्रमण करने के लिए मीडिया हस्तियों, टूर ऑपरेटरों और विचारकों को आमंत्रित करना शामिल है।

- पर्यटन मंत्रालय मार्केटिंग विकास सहायता (एमडीए) स्कीम के तहत विदेश स्थित बाजारों में पर्यटन के संवर्धन हेतु राज्यों /संघ राज्य क्षेत्रों के पर्यटन विभागों और अनुमोदित स्टेकहोल्डरों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करता है।

लेखक कृपया ध्यान दें

- पर्यटन मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों से त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका ''अतुल्य भारत'' में प्रकाशनार्थ पर्यटन, राजभाषा, सामयिक विषयों और साहित्यिक विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं।
- हस्तलिखित लेख इत्यादि स्वीकार नहीं किए जाएंगे।
- लेख इत्यादि ए–4 आकार के कागज पर दो प्रतियों में टाइप हुआ (सॉफ्ट प्रति सहित) होना चाहिए, जो सामान्यतः तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो।
- लेखक/रचनाकार को इस आशय का घोषणा पत्र भी देना होगा कि यह लेख/रचना उसकी/उनकी मौलिक कृति है।
- वर्तमान में पत्रिका में प्रकाशित लेखादि के लिए मानदेय देने की कोई व्यवस्था नहीं है।

यदि किसी कारणवश कोई लेख पत्रिका में शामिल नहीं हो पाता है तो उसे लौटाया नहीं जाएगा। कृपया अपने लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें:–

संपादक
''अतुल्य भारत''
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
कमरा सं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
डलहौजी रोड, नई दिल्ली –110011
दूरभाषः 011–23015594

राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार प्रदान किए जाने के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी का अभिभाषण

विज्ञान भवन : 18.09.2015

देवियो और सज्जनो,

मुझे आज यहां उपस्थित होकर वास्तव में प्रसन्नता हो रही है। मैं भारतीय पर्यटन उद्योग में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वालों को सम्मानित करने में आपके साथ हूं। आज पुरस्कृत इन असाधारण व्यक्तियों और संगठनों ने अपने समर्पण के माध्यम से

भारत को एक पर्यटन गंतव्य के रूप में संवर्द्धित करने में एक विशेष स्थान बनाया है। उन्होंने हमारे पर्यटन क्षेत्र की गुणवत्ता और क्षमता विकास में विशिष्ट योगदान दिया है। मैं पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूं। निःसंदेह आज दिए गए सम्मान पर्यटन सेक्टर

के सभी भागीदारों की प्रतिबद्धता को संबल प्रदान करेंगे तथा इसके प्रसार तथा वृद्धि के लिए नए उत्साह से कार्य करने के लिए उन्हें प्रेरित करेंगे।

देवियो और सज्जनो,

हमारे देश में पर्यटन, विकास का एक कारक होने के साथ–साथ आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक वाहक भी है। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन एक प्रमुख घटक है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन क्षेत्र तथा आतिथ्य उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने की ओर ध्यान दिया है। होटल प्रबंधन संस्थान, भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान तथा फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट्स पर्यटन क्षेत्र में कार्य करने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान कर रहे हैं। पर्यटन मंत्रालय की योजना 'हुनर–से–रोजगार तक', जिसके अंतर्गत युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है, समाज के कमजोर वर्गों के लिए सामाजिक समता और रोजगार अवसर पैदा करने की एक सराहनीय पहल है।

वर्ष 2014 में, भारत में कुल 1282 मिलियन घरेलू पर्यटक यात्राएं दर्ज की गई थीं। उस वर्ष भारत में 7.68 मिलियन विदेशी पर्यटक आए थे, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि है। तथापि, यह विश्वव्यापी अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन का मात्र 0.7 प्रतिशत था, जो 1.1 बिलियन था। इसलिए, विदेशों से पर्यटकों के आगमन में कई गुना वृद्धि की व्यापक संभावना है। 2014 के दौरान पर्यटन क्षेत्र से 14.5 प्रतिशत की विकास दर के साथ 1.2 लाख करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा आय हुई। मुझे आपको बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि 113 देशों के लिए ई–पर्यटक वीजा के कार्यान्वयन के शानदार परिणाम आ रहे हैं। संयुक्त राज्य अमरीका, युनाइटेड किंग्डम, स्पेन, मलेशिया, जर्मनी आदि जैसे उच्च संभावना वाले अधिकांश देशों के पास अब ई–पर्यटक वीजा सुविधा उपलब्ध है। जनवरी से जुलाई, 2015 के दौरान 1.5 लाख पर्यटक ई–पर्यटक वीजा के माध्यम से हमारे देश में पहुंचे।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति तथा हमारी जनता के पास व्यय योग्य आमदनी बढ़ने से हम आने वाले वर्षों में पर्यटकों की आमद में सकारात्मक रुझान की अपेक्षा कर सकते हैं। हमें देश में उच्च स्तरीय पर्यटन अवसंरचना के सृजन पर ध्यान केंद्रित करना होगा। 'स्वदेश दर्शन' तथा 'प्रसाद' नामक दो पहलों की शुरुआत की है जिनका उद्देश्य परिपथों और तीर्थ स्थलों का समेकित विकास करना है, से इस लक्ष्य को पाने में बहुत सहायता मिलेगी।

हम जो सुरक्षा प्रणाली तैयार करेंगे, सावधानी संबंधी उपाय स्थापित करेंगे, उनसे हमारे मेहमानों को भरोसा होना चाहिए और उन्हें आश्वस्त होना चाहिए कि वे अपनी

व्यक्तिगत सुरक्षा और अपने सामान की सुरक्षा के प्रति कभी चिंतित न हों। पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटकों को उपयोगी सूचना प्रदान करने तथा आपातकाल के दौरान उनका मार्गदर्शन करने के लिए 24×7 'अतुल्य भारत हेल्पलाइन' आरंभ करके पर्यटकों की सुरक्षा चिंताओं का समाधान करने की पहल की है। आव्रजन पटलों पर वितरित की जा रही पर्यटकों को हिदायत संबंधी जानकारी वाली 'स्वागत पुस्तिका' भी विदेशी पर्यटकों के लिए आगमन पर तुरंत उपयोग योग्य सहायक सामग्री होगी।

स्वच्छता के खराब स्तर का भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विशेषकर, ऐसे समय में जब हमारा पर्यटन उद्योग हमारे सांस्कृतिक स्थलों के विशिष्ट सौंदर्य, हमारे रोमांचक गंतव्यों की प्राकृतिक रमणीयता तथा हमारी वास्तुशिल्पीय विरासत की समृद्धि का प्रचार कर रहा है, यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी। पर्यटन मंत्रालय का पर्यटक गंतव्यों में साफ-सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए 'स्वच्छ भारत-स्वच्छ पर्यटन अभियान' सही दिशा में एक स्वागत योग्य कदम है। इसके लिए सभी भागीदारों द्वारा 'भारत' संबंधी अनुभवों के सभी पहलुओं के अंतर्गत इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। मैं इस बात पर भी बल देना चाहूंगा कि यह आवश्यक है कि पर्यटन मंत्रालय इस दिशा में आगे बढ़कर सर्वोच्च मानदंड स्थापित करे। यह सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी निगरानी प्रणालियां तैयार करना भी उतना ही जरूरी है कि सभी प्रतिष्ठानों द्वारा इन मानदंडों का अनुपालन किया जाए।

सुदूर स्थलों तक शीघ्र पहुंच, अधिक व्यय योग्य आय तथा जीवन शैली संबंधी बढ़ती आकांक्षाओं से अब पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है। मैं पर्यटन मंत्रालय से आग्रह करता हूं वह सुविचारित ढंग से अपना निवेश इस तरह करें कि हमारी प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर को हानि पहुंचाए बिना इस क्षेत्र का विकास सतत् रूप से हो। ऊर्जा और जल के संरक्षण के लिए नए और नवोन्मेषी तरीकों की शुरुआत की जानी चाहिए। पर्यटक प्रतिष्ठानों और आतिथ्य संबंधी संस्थाओं को इस प्रकार कार्य करना चाहिए कि वे जल और ऊर्जा खपत कम करने, अपशिष्ट उत्पादन को कम करने, अपशिष्ट प्रबंधन को सुधारने तथा रचनात्मक पुनःचक्रण और कुशल अपशिष्ट निपटान सुनिश्चित करने में समर्थ हो ।

देवियो और सज्जनो,

पर्यटकों और मेजबान समुदायों के बीच व्यापक सामुदायिक संपर्क से परस्पर सद्भाव, सहिष्णुता तथा जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने में बहुत सहयोग मिलता है। पर्यटन के फलस्वरूप देश तथा दुनिया भर में दूर-दराज में बसे हुए समुदायों के बीच प्रगाढ़ सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है।

भारत विश्व में सर्वोत्तम पर्यटन अनुभवों की पेशकश करता है और मुझे कोई संदेह

नहीं है कि हम मिल–जुलकर विश्व पर्यटन मानचित्र पर भारत को अपना वाजिब स्थान दिला सकते हैं।

मैं, एक बार फिर उन सभी को बधाई देता हूं जिनकी पहल और परिश्रम को आज सम्मान प्रदान किया गया है। मैं आप सभी को आने वाले वर्षों में हमारे विकसित और वृद्धिमान पर्यटन उद्योग की व्यापक सफलता की शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद,

जय हिंद!

– **साभार**

"अब जबकि हिंदी को राष्ट्रभाषा की पदवी मिल गई है, हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि राष्ट्रभाषा की उन्नति बढ़ाए और उसकी सेवा करे, जिससे कि सारे भारत में वह बिना किसी संकोच या संदेह के स्वीकृत हो । हिंदी का पाट महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषाएं अपना बहुमूल्य भाग ले सकें । राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की और न किसी जाति की है, वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें ।"

– सरदार वल्लभभाई पटेल

पर्यटन मंत्रालय

की

गतिविधियाँ

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा दिनांक 24 जुलाई, 2015 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए। पर्यटन मंत्रालय के तत्कालीन सचिव, डॉ. ललित के. पवार भी उपस्थित हैं।

पर्यटन मंत्रालय में दिनांक 2 सितम्बर, 2015 को नव नियुक्त सचिव श्री विनोद जुत्शी नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा से मुलाकात करते हुए ।

16 सितम्बर, 2015 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के बैठक में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा एवं समिति के अन्य सदस्य।

केन्द्रीय वित्त, कॉरपोरेट कार्य और सूचना एवं प्रसारण मंत्री, श्री अरूण जेटली 27 सितम्बर, 2015 को नई दिल्ली में विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर पर्यटन मंत्रालय के नए कार्यालय परिसर 'पं. दीनदयल उपाध्याय पर्यटन भवन' की आधारशिला रखते हुए। साथ में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ महेश शर्मा और संसद सदस्य श्रीमती मीनाक्षी लेखी भी उपस्थित हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ महेश शर्मा दिनांक 27 सितम्बर, 2015 को नई दिल्ली में विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर 'लाखों पर्यटक लाखों अवसर विषय पर पर्यटन मंत्रालय के 'विजन डाक्यूमेंट 'इमेजिन इंडिया' को जारी करते हुए। पर्यटन सचिव, भारत सरकार, श्री विनोद जुत्शी और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा दिनांक 27 सितम्बर, 2015 को नई दिल्ली में **'लाखों पर्यटक लाखों अवसर'** विषय पर विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर **अशोक आतिथ्य एवं पर्यटन प्रबंध संस्थान–उत्कृष्टता केन्द्र** के उद्घाटन करते हुए। इस अवसर पर पर्यटन सचिव, भारत सरकार, श्री विनोद जुत्शी भी उपस्थित हैं।